Vol.25, Issue 7 | Annual Subscription ` 480

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

मई 2026

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

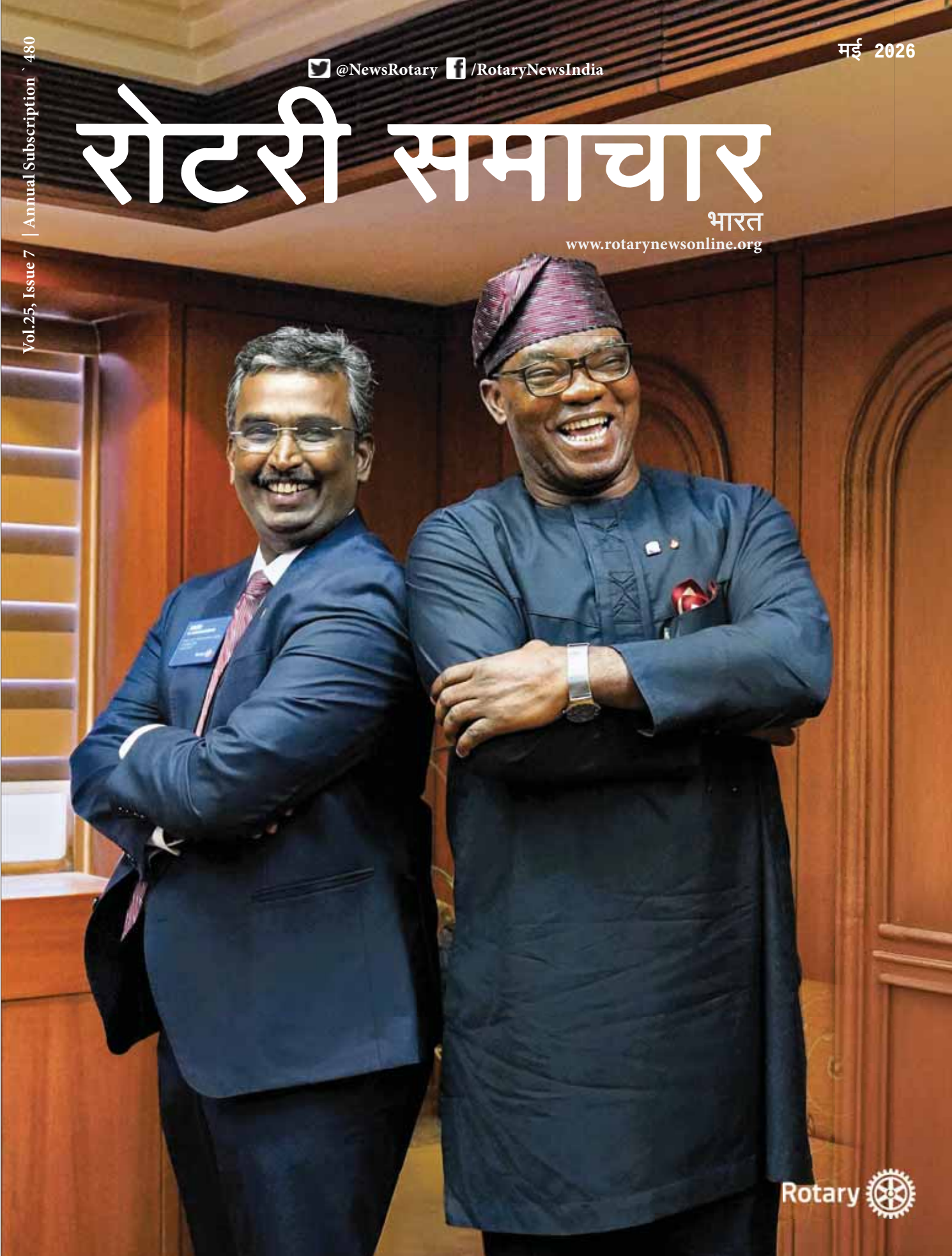

Rotary

Rotary | TAIPEI 2026

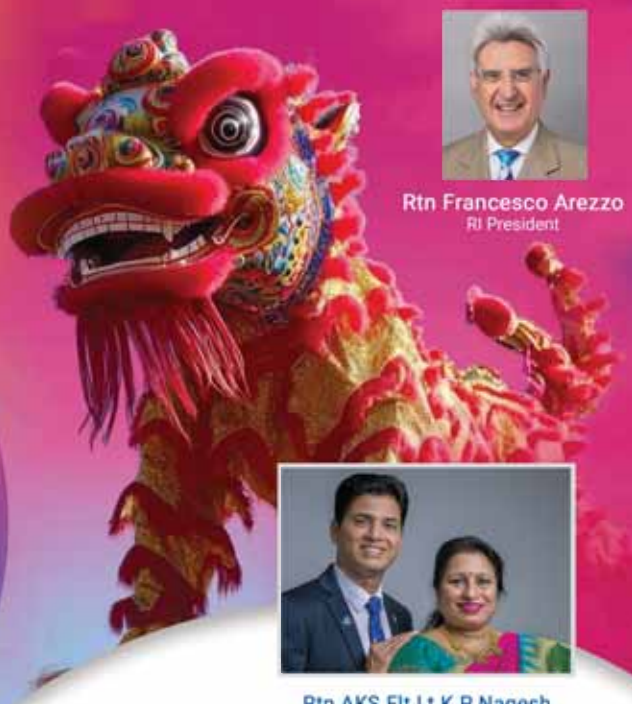

Rtn Francesco Arezzo
RI President

Join us to celebrate a colourful evening

SOUTH ASIAN RECEPTION AT THE ROTARY INTERNATIONAL CONVENTION TAIPEI 2026

14TH JUNE 2026

Rtn AKS Flt Lt K P Nagesh
RI Director | Co-Convener - SAR 26

PDG Rtn Sridhar J
Chairman - SAR 26

To Meet and Greet, Feel at Home,

Under the Taipei Sky!!!

Date: June 14TH, 2026 | Time: 06:30 PM,

Venue: **W Taipei,** 10 Zhongxiao East Road, Sec. 5 Xinyi District, Taipei, Taiwan 110

REGISTRATION FEES
Single : INR 7,500
Couple : INR 15,000

Register Now

PDG Rtn Dr N Subramanian
Co-Chairman - SAR 26

Convener - SAR 26

MMM TRICHY

Rtn AKS Er Muruganandam M (MMM)

B.E., M.B.A., M.S., MFT., PGDMM., DEM
Chartered Engineer
Vice President- Rotary International (2026 - 2027)
Rotary International Director (2025 - 2027)
Chairman - Excel Group of Companies

#MMMTRICHY I #MMMEXCEL I #MMMROTARY I #SAYYESTOROTARY

PDG Rtn CA Debasish Mishra
Secretary - SAR 26

/mmmtrichy | www.mmmtrichy.com | Mail: mmmrotary@excelgroup.co.in | Ph: +91 93825 50001

Further Details Contact: PDG Sridhar J, Mobile No: +91 97908 39030 | PDG Debashish Mishra, Mobile No: +91 99370 66669

विषयसूची

12

मेरे उपाध्यक्ष का पूर्व रोटरेक्टर होना एक सोची-समझी रणनीति है

22

क्लबों को अपने सर्वश्रेष्ठ से भी बेहतर प्रदर्शन करना होगा

38

रोटरी न्यूज़ के एक लेख के व्यापक लाभ

42

आशा, सुरों की मलिका

48

मरीजों के लिए शांति और सांत्वना

54

विशेष बच्चों के लिए चिकित्सा कक्ष

58

प्लास्टिक-मुक्त भविष्य की ओर

Rotary

A publication of Rotary Global Media Network

ई-संस्करण अपनाएं। पर्यावरण बचाएं।

ई-संस्करण दर हुई कम

1 जुलाई 2024 से हमारी ई-संस्करण सदस्यता

`420 से संशोधित कर

`**324** कर दी गई हैं।

धर्मशाला, एक प्रभावशाली परियोजना

अप्रैल अंक में, मैं उस कवर चित्र से बहुत प्रभावित हुआ, जिसमें एक मुस्कुराता हुआ युवक और युवती एक बुजुर्ग महिला से बातचीत कर रहे हैं। जब मैंने कैंसर रोगियों पर संपादक द्वारा लिखी गई कवर स्टोरी पढ़ी, तो मैं वास्तव में बहुत प्रभावित हुआ। विभिन्न रोटरी क्लबों द्वारा की जा रही सामाजिक सेवा गतिविधियों के बारे में जानना अद्भुत है। सच कहूं तो, ज्यादातर लोग सोचते हैं कि क्लब का मतलब मौज-मस्ती और मनोरंजन है, लेकिन रोटरी क्लबों में, मैं पाता हूं कि पूर्व अध्यक्ष और पूर्व गवर्नर भी सेवा परियोजनाओं में सक्रिय रुचि लेते हैं।

कवर स्टोरी में विस्तार से बताया गया है कि रोटरी क्लब बॉम्बे किस तरह कैंसर रोगियों के भोजन, कमरे की सुविधाओं और उनकी भलाई के अन्य पहलुओं की देखभाल करता है। कैंसर रोगियों की सहायता करने के लिए रोटरी क्लब बॉम्बे को सलाम।

अजीत शाह, गैर-रोटेरियन, अहमदाबाद

यह जानकर मैं बहुत प्रभावित हुआ कि रोटरी क्लब बॉम्बे ने टाटा मेमोरियल अस्पताल में इलाज के लिए आने वाले कैंसर रोगियों को ठहराने के लिए एक-बेडरूम वाले 100 फ्लैटों की व्यवस्था की है। यह कैंसर रोगियों और उनके परिचारकों के लिए एक महान सेवा है, जिन्हें नाममात्र की कीमत पर ताज़ा बना भोजन परोसा जा रहा है।

वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली, में HELP द्वारा संचालित मानव आश्रय (9810001241 और 9810001896) भी कैंसर रोगियों की इसी प्रकार सेवा कर रहा है। यहाँ भी, मामूली शुल्क पर आवास और भोजन दिया जाता है। इसके अलावा, अस्पताल में कीमोथेरेपी के लिए मुफ्त एम्बुलेंस की व्यवस्था की गई है।

एक रोटेरियन के रूप में, मैंने HELP के मालिक से संपर्क किया, लेकिन उन्होंने किसी भी संस्था से दान लेने से इनकार कर दिया और केवल रोगियों के ठीक होने के लिए आशीर्वाद मांगा। यहाँ आपको नाइजीरिया, सूडान, जाम्बिया आदि से आए रोगी भी मिलेंगे, जिन्हें विभिन्न रोटरी क्लबों द्वारा प्रायोजित किया गया है।

टी डी भाटिया
रोटरी क्लब दिल्ली मयूर विहार - मंडल 3012

आपका संपादकीय आवश्यकता है... *हमारी दुनिया के घाव भरने के लिए शांति दूतों की* दुनिया भर के रोटेरियनों के लिए वैश्विक भलाई हेतु शांति को बढ़ावा देने की प्रेरणा है। हम ताइपे में रो ई सम्मेलन में ङ्कयुद्ध और संघर्ष-मुक्त दुनियाफके लिए शपथ ले सकते हैं। मानवों के बीच भय, घृणा और पूर्वाग्रह का अंत हो। क्या शांति का अगला मसीहा एक रोटेरियन हो सकता है? आपके संपादकीय ने मुझे अपना अहंकार और पूर्वाग्रह छोड़कर शांति को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया है।

राजीव छाबड़ा
रोटरी क्लब नागपुर - मंडल 3030

संपादक के लेख में कहा गया है कि इज़राइल, ईरान और अमेरिका के बीच तनाव काफी हद तक लालच, संसाधनों को नियंत्रित करने की इच्छा और सत्ता बनाए रखने से प्रेरित है। लेकिन क्या केवल लालच ही इसका कारण है? आतंकवाद जैसे अन्य गंभीर मुद्दे भी हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इज़राइल ने उन लोगों के खिलाफ कार्रवाई की है जिन पर चरमपंथी समूहों का समर्थन करने का आरोप है। यह कहा जा सकता है कि इज़राइल अपने सीमाओं के भीतर शांति से रहना चाहता है, लेकिन सुरक्षा चिंताओं के कारण वह युद्ध और एहतियाती हमलों के लिए मजबूर महसूस करता है। जबकि हम ईरानी नागरिकों की पीड़ा के साथ सहानुभूति रखते है, असहज करने वाली सच्चाई यह है कि कई ईरानियों ने अपने ही शासन के तहत कष्ट झेले हैं और जान गंवाई है।

हम ईरान में आंतरिक दमन और सत्ता में बैठे लोगों की कार्रवाइयों पर चुप क्यों रहते हैं? हमें गहराई से देखना चाहिए और निष्कर्ष निकालने या पक्ष लेने से पहले राजनीतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक मूल कारणों की जाँच करनी चाहिए। तभी हम एक अधिक संतुलित और सूचित दृष्टिकोण प्राप्त कर सकते हैं।

प्रियदर्शिनी कनोड़िया
रोटरी क्लब दिल्ली साउथएक्स - मंडल 3011

अप्रैल संपादकीय के संदर्भ में, पश्चिम एशिया के संघर्ष की उबलती स्थिति को जल्द शांत किया जाना चाहिए क्योंकि दुनिया पहले से ही विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना कर रही है। भारत में एलपीजी की आपूर्ति की भारी कमी है और किसानों के लिए अगली फसल बोने हेतु उर्वरकों की संभावित कमी भी है। हम अमेरिका, इज़राइल और ईरान के बीच जल्द ही पूर्ण युद्धविराम की प्रार्थना करते हैं।

रोटरी क्लब विज़ाग सुरभि ने एक व्यावसायिक मिशन कार्यक्रम के तहत 500 दूरस्थ गांवों की दो लाख वंचित महिलाओं को प्रशिक्षण देने की चुनौती स्वीकार की है। यह प्रशिक्षण चरणबद्ध तरीके से सिलाई

आपके पत्र

और कढ़ाई के अंतर्गत दिया जा रहा है और प्रशिक्षण के बाद ये महिलाएँ परिवार की आय में योगदान दे सकेंगी और छोटी-छोटी जरूरतों के लिए भी पुरुषों पर निर्भर रहने के बजाय आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनेंगी। इस पहल के लिए क्लबों को बधाई।

राज कुमार कपूर
रोटरी क्लब रूप नगर - मंडल 3080

मार्च के अंक में, रो ई अध्यक्ष का संदेश शानदार था। उन्होंने सही कहा है कि एक साथ, अपनी पहुँच का विस्तार करके और कंधे से कंधा मिलाकर काम करके, हम वास्तव में *भलाई के लिए एकजुट* होते हैं।

संपादक का लेख *पुणे का शांति केंद्र उम्मीद जगाता है* शानदार था। रो ई निदेशक एम मुरुगनंदम का संदेश, प्रतिबद्धताएं बनाएं और निभाएं, दिलचस्प था, उन्हें बधाई। टीआरएफ न्यासी भरत पंड्या का संदेश शानदार था।

जयश्री का लेख *99 की उम्र में, रोटरी में सक्रिय* उन रोटेरियनों के लिए आंखें खोलने वाला है जो 75 साल के बाद रोटरी से सेवानिवृत्त होने की योजना बनाते हैं। रोटरी क्लब नीलगिरी के डॉ टी एस छाबड़ा साबित करते हैं कि उम्र सिर्फ एक संख्या है और 99 साल की उम्र में भी, वह समाज के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं।

डैनियल चित्तिलापिल्ली
रोटरी क्लब कलूर - मंडल 3205

यह आपके मार्च अंक में रोटरी के नवीनतम शांति केंद्र और उसके प्रभाव के संदर्भ में है। लेकिन यह सिर्फ कागजों पर है, क्योंकि आज हम दुनिया के कई हिस्सों में जो देख रहे हैं वह अशांति और युद्ध है। आइए कुछ ऐसे उदाहरण खोजें जहां इन शांति केंद्रों ने युद्धरत देशों में शांति लाने में मदद की हो। तभी हमें इन शांति केंद्रों के बारे में विश्वास होगा। अलग-अलग मंचों पर सिर्फ बातें करना ही काफी नहीं है। यदि दुमिया में शांति होती और युद्ध नहीं होता, तो यह बहुत अद्भुत होती।

प्रताप गोकुलदास
रोटरी क्लब कोयंबटूर वेस्ट - मंडल 3206

प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित छात्रों के लिए हमारी परियोजना की बेहतरीन कवरेज के लिए हम संपादक के आभारी हैं। हर महीने हम *रोटरी न्यूज़* और *रोटरी न्यूज़ प्लस* का बेसब्री से इंतज़ार करते हैं। देशभर में रोटेरियनों द्वारा किए जा रहे सामुदायिक कल्याण कार्यों के बारे में लिखने के लिए रोटरी न्यूज़ टीम को बधाई।

डॉ मुकेश नैनव
रोटरी क्लब पाचोरा-भडगांव - मंडल 3030

रोटरी न्यूज़ के प्रत्येक अंक में रोटेरियनों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए नई चीजें जोड़ी जाती हैं। सदस्यता और टीआरएफ योगदान सारांश को दक्षिण एशिया के मानचित्र में सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया है। कृपया कुल टीआरएफ योगदान को भी शामिल करें।

परमेश देव चौधरी
रोटरी क्लब गुवाहाटी साउथ - मंडल 3240

प्रभावशाली नेतृत्व के लिए दिशा तय करना लेख ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मैं 55 वर्ष का हूं, और रोटरी में अपने तीसरे वर्ष में हूं, और मुझे इस अद्भुत संगठन में इतनी देर से शामिल होने का पछतावा है। दो साल तक, मैंने कई लोगों से पूछा 'रोटरी क्या है।' किसी का भी जवाब संतोषजनक नहीं था। लेकिन जब मैंने एक आरएलआई प्रशिक्षण सत्र में भाग लिया, तब मुझे रोटरी की प्रक्रियाओं, गतिविधियों और समृद्ध इतिहास की समझ आई।

शिवपेरुमल सुब्रमणि
रोटरी कलब वलाजपेट - मंडल 3231

सुधार

प्रिय पाठकों,

प्रत्येक क्षेत्रीय रोटरी पत्रिका के पास रोटरी अंतर्राष्ट्रीय का प्रकाशन लाइसेंस होता है, और उसमें हर महीने रो ई द्वारा अनिवार्य सामग्री प्रकाशित की जाती है, जैसे कि रो ई अध्यक्ष और टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष संदेश। हमें वार्षिक सम्मेलन का प्रचार करना होता है और रोटरी से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों जैसे पोलियो उन्मूलन पर सामग्री प्रकाशित करनी होती है। अनिवार्य सामग्री के अलावा, रो ई हर महीने सभी क्षेत्रीय पत्रिकाओं के साथ रोटेरियनों के लिए रुचिकर जानकारीपूर्ण लेख, जिनमें चित्र भी शामिल होते है, साझा करता है। हमारे अप्रैल अंक में, हमने रो ई का एक ऐसा ही लेख *Rotary in Maps* प्रकाशित किया, जिसमें अनजाने में पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर और अक्साई चिन को भारत के अभिन्न अंग के रूप में नहीं दिखाया गया। इस त्रुटि के लिए हमें अत्यंत खेद है।

संपादक

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं ***rotarynews@rosaonline.org*** या ***rushbhagat@gmail.com*** पर संपादक को मेल कीजिए। ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए। आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा ***rushbhagat@gmail.com*** या ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर भेजे जाने चाहिए। WhatsApp **पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।**

क्या आपने रोटरी न्यूज़ प्लस पढ़ा है?

हर महीने हम आपकी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए ऑनलाइन प्रकाशन *रोटरी न्यूज़ प्लस* निकालते हैं। यह महीने के मध्य तक ईमेल के माध्यम से प्रत्येक सदस्य को भेजा जाता है। हमारी वेबसाइट *www.rotarynewsonline.org* पर *रोटरी न्यूज़ प्लस* पढ़ें।

कवर पर: चेन्नई स्थित रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के कार्यालय में रो ई के निर्वाचित अध्यक्ष ओलायिंका बाबालोला और निर्वाचित उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम।

चित्र: मोनिका लोज़िन्का

युवाओं का अनुसरण करें

शोकी वाफुला को यह नहीं पता था कि जब उन्हें अपने जन्म देश युगांडा को छोड़कर दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा, तो उन्हें क्या अपेक्षा करनी चाहिए। लेकिन वहाँ उन्हें रोटरी का एक ऐसा समुदाय मिला, जिसने उनका गर्मजोशी और मित्रता के साथ स्वागत किया। इस अनुभव ने उन्हें एक रोटरेक्ट ई-क्लब स्थापित करने के लिए प्रेरित किया, जहाँ दुनिया भर के युवा नेता जुड़ सकें, अपने कौशल विकसित कर सकें और मिलकर सेवा कर सकें।

आज उस समुदाय में कई महाद्वीपों के सदस्य शामिल हैं, जो नेतृत्व विकास, शांति-निर्माण और सेवा पहलों पर मिलकर काम करते हैं। वाफुला के लिए इस अनुभव ने यह सिखाया कि सार्थक सेवा की शुरुआत उन लोगों से होती है, जो खुद को जुड़ा हुआ, मूल्यवान और नेतृत्व करने के लिए सशक्त महसूस करते हैं।

उनकी कहानी हमें याद दिलाती है कि युवा सेवा माह इतना महत्वपूर्ण क्यों है। रोटरेक्ट और रोटरी यूथ एक्सचेंज जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से युवा नेतृत्व कौशल विकसित करते हैं, वैश्विक समझ को बढ़ाते हैं और सेवा के जरिए अपने प्रभाव को पहचानते हैं।

रोटरी की कार्य योजना हमें प्रतिभागियों की सहभागिता बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। इसके मूल में एक सरल प्रश्न है: हम यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि रोटरी में भागीदारी सभी के लिए सार्थक और संतोषजनक हो? रोटरेक्ट और युवा कार्यक्रम इस प्रश्न का एक प्रभावशाली उत्तर प्रस्तुत करते हैं।

जब क्लब रोटरेकटर्स को मार्गदर्शन देते हैं, छात्र आदान-प्रदान कार्यक्रमों के लिए मेजबानी करते हैं या युवा नेतृत्व पहलों का समर्थन करते हैं, तो वे सदस्यों को अपने अनुभव साझा करने के ऐसे अवसर प्रदान करते हैं, जो व्यक्तिगत रूप से सार्थक और संतोषजनक होते हैं। ये संबंध सदस्यों के उद्देश्य की भावना को गहरा करते हैं और हमारे रोटरी परिवार के भीतर रिश्तों को मजबूत बनाते हैं।

वे रोटरी से जुड़ने के लिए स्थायी मार्ग भी तैयार करते हैं। हर साल हजारों युवा रोटरी के कार्यक्रमों को पूरा करते हैं और उन अनुभवों को जीवनभर अपने साथ लेकर चलते हैं। उनमें से कई रोटरी से जुड़े रहने के लिए उत्सुक रहते हैं।

रोटेक्स इंटरनेशनल जैसे संगठन, जो युवा एक्सचेंज कार्यक्रम के पूर्व छात्रों का एक संघ है, रोटरी कार्यक्रम के पूर्व छात्रों को हमारे युवा कार्यक्रमों के लिए मार्गदर्शक, नेता और समर्थक के रूप में अपनी सेवा जारी रखने में मदद करते हैं। जैसा कि रोटेक्स के सह-संस्थापक हांस ली ने हाल ही में यूथ एक्सचेंज पूर्व छात्रों पर एक लेख में लिखा, ''एक्सचेंज घर लौटने पर समाप्त नहीं होता।''

जब हम इन युवा नेताओं का अपने क्लबों और गतिविधियों में स्वागत करते हैं, तो हम रोटरी की पीढ़ियों के बीच निरंतरता को और मजबूत बनाते हैं।

युवा सेवा माह के दौरान, मुझे आशा है कि प्रत्येक रोटरी क्लब इस बात पर विचार करेगा कि युवा कार्यक्रम नए और पुराने सदस्यों के लिए सहभागिता को कैसे बेहतर बना सकते हैं। सेवा परियोजनाओं पर सहयोग करें और अपनी योजना और निर्णय लेने की प्रक्रिया में युवाओं की राय को शामिल करें।

रोटरी का दुनिया के लिए संदेश है कि हम *यूनाइट फॉर गुड* बन सकते हैं। युवा कार्यक्रम हमें दिखाते हैं कि यह व्यवहार में कैसे संभव होता है - जब पीढ़ियाँ एक साथ आती हैं, विचारों का आदान-प्रदान करती हैं और सेवा में कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं।

जब हम युवाओं में निवेश करते हैं, तो हम न केवल भविष्य के नेताओं को गढ़ते, बल्कि आज एक अधिक मजबूत और आपस में जुड़ा हुआ रोटरी भी निर्मित करते हैं।

फ्रांसेस्को अरेज़ो
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

AmajU H$s CbPZ

भारतीय विधायी निकायों में महिलाओं के लिए एक-तिहाई कोटा अभी भी एक कोरा सपना बना हुआ है क्योंकि 2023 में सर्वसम्मति से पारित हुए विधेयक को लागू करने के लिए आवश्यक अतिरिक्त कदम लोकसभा में सफल नहीं हो सका। यह कानून अब तब तक लागू नहीं किया जा सकता जब तक कि नई जनगणना पूरी न हो जाए और उसके परिणामों के आधार पर अतिरिक्त लोकसभा सीटें आवंटित न कर दी जाएं। विपक्ष, जो मुख्यतः गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में केंद्रित है, इस कदम का कड़ा विरोध करता है। उनका तर्क है कि इससे उन विकसित राज्यों को नुकसान होगा जिन्होंने जनसंख्या वृद्धि को अधिक प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया है।

लेकिन आइए आरोप-प्रत्यारोप के खेल को एक तरफ रखे। लैंगिक समानता के बड़े मुद्दे और सरकारी एवं रोटरी जैसे निजी निकायों में महिलाओं के लिए नेतृत्व के पदों जैसे विषयों पर चर्चा होनी चाहिए। रो ई में, जैसा कि रोटरी के निर्वाचित अध्यक्ष ओलायिंका बाबलोला ने मुझे दिए गए अपने साक्षात्कार (पेज 12) में कहा था, रोटरी में अधिक महिलाओं को लाने के लिए हमें अपने परिवेश को अधिक समावेशी बनाना होगा, महिलाओं का समर्थन करना होगा और उन्हें आगे बढ़ने के अवसर देने होंगे। उस समय मैं रो ई बोर्ड में था जब 2018 में पहली बार यह निर्णय लिया गया कि हमारे नेतृत्व में लगभग 30 प्रतिशत महिलाएं होनी चाहिए। और हर निदेशक से यह सुनिश्चित करने की अपेक्षा की जाती है। यह अच्छी खबर है कि रोटरी की वर्तमान महिला सदस्यता लगभग 27 प्रतिशत है, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि इसने 1987 तक महिला सदस्यों को बाहर रखा, जब तक कि अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने सिल्विया व्हिटलॉक को रोटरी क्लब की सदस्यता दिलाने के लिए हस्तक्षेप नहीं किया था।

यदि महिलाओं को रोटरी जैसे सेवा संगठन में प्रवेश पाने के लिए संघर्ष करना पड़ा, तो कल्पना कीजिए कि दुनिया भर की संसदों में प्रवेश पाना उनके लिए कितना कठिन होगा। भारत में, 2024 के आम चुनाव में **74 महिला सांसद** चुनी गईं, जो पिछले लोकसभा से चार कम हैं। यह 543-सदस्यीय सदन का मात्र 14 प्रतिशत है, और उस एक-तिहाई लक्ष्य का आधा भी नहीं है जिसकी परिकल्पना आरक्षण में की गई है।

तो अन्य देशों में स्थिति कैसी है? दुनिया के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र, अमेरिका में, सरकार के शीर्ष स्तर पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व निराशाजनक है। अपने अस्तित्व के पहले 130 वर्षों तक, अमेरिकी सीनेट में केवल पुरुष ही सदस्य रहे! 1920 तक बहुत कम महिलाएँ सीनेट के लिए चुनाव लड़ती थीं, और 1990 के दशक तक बहुत कम चुनी जाती थीं, जिसका मुख्य कारण यह था कि कई राज्यों में महिलाओं को मतदान का अधिकार ही नहीं था। लेकिन वर्तमान में 100 सदस्यीय सीनेट में, 26 महिला सीनेटर हैं, जो 26 प्रतिशत का उल्लेखनीय प्रतिनिधित्व है, खासकर यह देखते हुए कि अब तक उसके पूरे इतिहास में केवल 64 महिलाएँ ही अमेरिकी सीनेट में सेवा दे पाई हैं। और देश ने अभी तक किसी महिला राष्ट्रपति का चुनाव नहीं किया है!

लेकिन महिला सांसदों के प्रतिशत के मामले में शीर्ष स्थान नॉर्डिक देशों - स्वीडन, आइसलैंड, फ़िनलैंड, नॉर्वे और डेनमार्क - का है। 2023 तक, इन देशों में 40 से 50 प्रतिशत तक महिला सांसद थीं। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि इन देशों में महिलाएँ मुख्यतः अपने राजनीतिक दलों के माध्यम से चुनी जाती हैं, न कि किसी विधायी आरक्षण प्रणाली के कारण।

अधिकांश राजनीतिक व्यवस्थाएँ महिलाओं के आरक्षण का विरोध यह कहते हुए करती है कि इससे योग्यता से समझौता होता है, लेकिन यह सच नहीं है। जैसा कि आरआईपीई बाबालोला अपने साक्षात्कार में बताते हैं: महिलाओं को अवसर दें, एक अनुकूल वातावरण बनाएं, उन्हें सहज महसूस कराएं और आप महिला नेतृत्व को उभरता हुआ पाएंगे!

रशीदा भगत

सीओएल के माध्यम से रोटरी के भविष्य को आकार दें

सुरेश हरि

रोटरी के भविष्य को प्रभावित करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक संकल्प परिषद (सीओआर) और विधान परिषद (सीओएल) है। जैसे ही हम 2026-28 के चक्र में प्रवेश करते हैं, प्रत्येक क्लब और मंडल के लिए अपने सीओएल प्रतिनिधियों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना तथा 30 जून, 2026 तक सुविचारित प्रस्ताव और, जहां प्रासंगिक हो, अधिनियम प्रस्तुत करके योगदान देना महत्वपूर्ण है। इस समय-सीमा को चूकने का अर्थ है कि प्रस्तावों पर केवल 2028 की सीओएल के दौरान विचार किया जाएगा, जिससे कार्यान्वयन में काफी देरी होगी।

रोटरी सीओआर की बैठक हर साल होती है, और प्रत्येक मंडल का प्रतिनिधित्व उसके निर्वाचित सीओएल प्रतिनिधि द्वारा किया जाता है। यह प्रणाली एक लोकतांत्रिक मंच सुनिश्चित करती है, जहाँ रोटरी विश्व भर से आए विचारों पर चर्चा और मतदान होता है। हर मंडल को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि 2026-28 के लिए उसका सीओएल प्रतिनिधि नियुक्त हो, और क्लबों व मंडलों को वर्तमान तथा पूर्व दोनों सीओएल प्रतिनिधियों के साथ मिलकर समय पर अपने प्रस्ताव तैयार करने चाहिए।

एक प्रस्ताव रो ई बोर्ड या टीआरएफ ट्रस्टियों से रोटरी के संवैधानिक दस्तावेजों में पहले से शामिल न किए गए किसी विशिष्ट मुद्दे पर कार्रवाई करने का औपचारिक अनुरोध होता है। यह एक सिफारिश के रूप में कार्य करता है, जो यह दर्शाता है कि रोटरी को इस पर विचार करना चाहिए। इसके विपरीत, अधिनियम रोटरी के संवैधानिक दस्तावेजों, जैसे कि रो ई संविधान या उपनियमों में, परिवर्तन का प्रस्ताव होता है और एक बार अनुमोदित होने पर यह बाध्यकारी बन जाता है। इस प्रकार, एक प्रस्ताव कार्रवाई को प्रोत्साहित करता है, जबकि एक अधिनियम एक नियम स्थापित करता है।

उदाहरण के लिए, यदि कोई मंडल यह मानता है कि सभी आने वाले क्लब नेताओं को पदभार ग्रहण करने से पहले रोटरी लर्निंग सेंटर के कुछ निश्चित पाठ्यक्रम पूरे करने चाहिए, तो वह एक प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकता है, जिसमें रो ई को इन पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करने और उसकी निगरानी करने की सिफ़ारिश की जाए। यदि इसी विचार को कानून का रूप दिया जाता है, तो मानक रोटरी क्लब संविधान में संशोधन करके ऐसे प्रशिक्षण को अनिवार्य बनाया जा सकता है। दोनों का उद्देश्य एक ही है - सशक्त और बेहतर ढंग से तैयार नेता बनाना - लेकिन एक प्रोत्साहन पर आधारित है, जबकि दूसरा अनुपालन को अनिवार्य बनाता है।

प्रस्ताव प्रस्तुत करने की प्रक्रिया सरल है और रोटरी के आधिकारिक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है। एक वैध प्रस्ताव में स्पष्ट और संक्षिप्त संकल्प-विवरण, मंडल गवर्नर का अनुमोदन और अधिकृत रोटरी प्लेटफॉर्म के माध्यम से उसकी प्रस्तुति शामिल होनी चाहिए। इसमें उद्देश्य और प्रभाव विवरण भी शामिल हो सकता है, जो आवश्यकता और अपेक्षित प्रभाव को स्पष्ट करता हो। केवल विधिवत रूप से तैयार और अनुमोदित प्रस्तावों पर ही विचार किया जाएगा।

प्रस्ताव तैयार करते समय, वैश्विक या बहु-मंडल प्रासंगिकता वाले मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना, पाठ को स्पष्ट और व्यावहारिक बनाना तथा पूर्व प्रस्तावों की समीक्षा करना सहायक होता है, ताकि दोहराव से बचा जा सके। अनुभवी सीओएल प्रतिनिधियों से परामर्श लेना भी आपके प्रस्ताव को सशक्त बना सकता है।

प्रत्येक क्लब और मंडल को प्रारंभिक चर्चा शुरू करने, उन महत्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान करने के लिए जहां रोटरी सुधार कर सकती है, तथा सशक्त प्रस्ताव तैयार करने के लिए सहयोगात्मक रूप से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। सीओआर और सीओएल में भागीदारी केवल एक औपचारिक कर्तव्य नहीं है - यह वैश्विक स्तर पर रोटरी की दिशा तय करने और यह सुनिश्चित करने का एक अवसर है कि यह प्रासंगिक, प्रगतिशील और प्रभावशाली बनी रहे।

याद रखने योग्य मुख्य बातें:

- प्रस्ताव प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 30 जून, 2026 है।
- केवल रोटरी क्लब और मंडल, डीजी के अनुमोदन के साथ, आधिकारिक मंच के माध्यम से प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकते हैं।

इस अवसर का अधिकतम लाभ उठाने के लिए क्लबों और मंडलों को अपने सीओएल प्रतिनिधियों के साथ शीघ्र संपर्क स्थापित करना चाहिए, सार्थक चर्चाएँ शुरू करनी चाहिए और विचारपूर्वक, सुव्यवस्थित प्रस्ताव तैयार करने चाहिए। नियोजित वेबिनार और ऑनलाइन बैठकों में भाग लेने से प्रक्रियाएँ और अधिक स्पष्ट हो सकती हैं और प्रस्तुत प्रस्तावों की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। अपने विचारों और प्रस्तावों का योगदान देकर, आप भविष्य के रोटरी को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

एक प्रस्ताव कार्रवाई को प्रोत्साहित करता है, जबकि अधिनियम उसे नियम बना देता है।

एक वैध प्रस्ताव में निम्नलिखित शामिल होना चाहिए: एक स्पष्ट और संक्षिप्त संकल्प विवरण, डीजी का अनुमोदन और आधिकारिक रोटरी प्लेटफॉर्म के माध्यम से उसकी प्रस्तुति। आप इसमें उद्देश्य और प्रभाव संबंधी विवरण भी शामिल कर सकते हैं, जिसमें आवश्यकता और उसके अपेक्षित प्रभाव को स्पष्ट किया गया हो। केवल सही तरीके से तैयार और अनुमोदित प्रस्तावों पर ही विचार किया जाएगा।

ध्यान रखने योग्य बातें

- वैश्विक या बहु-मंडल प्रासंगिकता वाले मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करें
- स्पष्ट, विशिष्ट और व्यावहारिक रहें
- दोहराव से बचने के लिए पूर्व प्रस्तावों की समीक्षा करें
- अनुभवी सीओएल प्रतिनिधियों से मार्गदर्शन प्राप्त करें

लेखक रो ई मंडल 3192 से एक CoL और उेड प्रतिनिधि हैं।

निदेशक का संदेश

पहले युवा, रोटरी हमेशा

मेरे प्रिय रोटेरियनों,

रोटरी एक सेवा संगठन के रूप में हमारे सर्वोच्च आदर्श - *स्वयं से ऊपर सेवा* - के मार्गदर्शन में दृढ़ता से खड़ी है। फिर भी, अपने मूल रूप में, रोटरी एक सदस्यता संगठन भी है। हमारी सेवा की ताकत, हमारी पहुँच और हमारा भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम अपने सदस्यों का कितनी अच्छी तरह पोषण और संरक्षण करते हैं। हम में से प्रत्येक व्यक्ति की ज़िम्मेदारी सिर्फ सेवा करने की नहीं है, बल्कि अपने साथी सदस्यों को सशक्त बनाकर आगामी वर्षों के लिए निरंतरता का निर्माण करके रोटरी के मूल ताने-बाने को मजबूत करने की भी है।

जब हम इस पर विचार करते हैं, तो हमारे सामने एक शानदार अवसर खड़ा है - इंटरेक्ट और रोटरेक्ट की जीवंत दुनिया। ये मंच केवल रोटरी का विस्तार नहीं हैं; वे इसके भविष्य की नींव हैं।

जैसे ही हम मई, यानी युवा सेवा माह में कदम रखते हैं, हमारा ध्यान स्वाभाविक रूप से उन युवा मनों की ओर जाता है जो कल को आकार देंगे। उनकी ऊर्जा, विचार और आकांक्षाएं केवल आशाजनक ही नहीं हैं - वे परिवर्तनकारी हैं। एक रोटरेक्टर के रूप में अपनी यात्रा शुरू करने के कारण, मैं यह पूरे विश्वास के साथ कहता हूँ: युवा पूर्णता नहीं, बल्कि प्रेरणा और प्रोत्साहन की तलाश में होते हैं।

आज के इंट्रक्टर कल के रोटरेकटर हैं। आज के रोटरेकटर कल के रोटेरियन हैं। हर मायने में, वे हमारे भावी सदस्य हैं। हमें खुद से यह सवाल पूछना चाहिए: क्या हम उनके लिए उस तरह की प्रेरणा बन रहे हैं जिसकी वे तलाश कर रहे हैं?

आइए हम उन्हें केवल स्वयंसेवकों के रूप में ना देखे। आइए हम उन पर भरोसा करें और उन्हें जिम्मेदारी सौंपें। आइए हम उन्हें नेतृत्व की भूमिकाओं में शामिल करें जहां वे रोटरी की सच्ची भावना का अनुभव कर सकें। जब हम ऐसा करते हैं, तो कुछ अद्भुत होता है - वे केवल भाग ही नहीं लेते; वे नेतृत्व करते हैं, वे नवाचार करते हैं, और वे प्रेरित करते हैं।

इसलिए, हमारी भूमिका सरल लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण है: रोटरी को उनके लिए इतना आकर्षक बनाना कि वे इससे जुड़ने से खुद को रोक न सकें।

इस यात्रा में, रोटरी यूथ लीडरशिप अवार्ड्स (RYLA) कार्यक्रम एक शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है। मैं प्रत्येक क्लब एवं मंडल नेतृत्वकर्ता को इंटरेक्ट और रोटरेक्ट क्लबों के लिए RYLA को प्राथमिकता देने के लिए दृढ़ता से प्रोत्साहित करता हूँ। यह सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि एक ऐसा अनुभव है जो शुरुआती चरण में ही आत्मविश्वास, चरित्र और नेतृत्व को आकार देता है। RYLA में क्षमता को जागृत करने की शक्ति है; अक्सर एक चिंगारी ही जीवनभर रोशनी फैलाने के लिए पर्याप्त होती है।

आगे बढ़ते हुए, आइए हम इस दृष्टिकोण को स्पष्टता और दृढ़ विश्वास के साथ अपनाएं। आइए हम गति का निर्माण करें, अपनी विरासत को सशक्त बनाएँ, और यह सुनिश्चित करें कि जो हम आगे सौंपें वह केवल निरंतरता ही नहीं - बल्कि एक और भी मजबूत, अधिक जीवंत रोटरी हो।

आइए, हम सब मिलकर **युवा सेवा के लिए हाँ कहना** जारी रखें - क्योंकि रोटरी के भविष्य की शुरुआत वहीं से होती है।

एम मुरुगानंदम
रो ई निदेशक, 2025-27

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

भविष्य की ओर एक कदम

द रोटरी फाउंडेशन का सबसे बड़ा कार्यक्रम पोलियोप्लस है, जिसके बाद रोटरी हेल्दी कम्युनिटीज़ चैलेंज नामक एक महत्वपूर्ण नई पहल है, जो ज़ाम्बिया में प्रारंभ की गई पहले *प्रोग्राम्स ऑफ स्केल* पहल से विकसित हुई है। इस कार्य के माध्यम से हम मलेरिया, निमोनिया और डायरिया जैसी बीमारियों से लड़ रहे हैं - जो अफ्रीका में पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु के तीन प्रमुख कारण हैं।

एक स्वस्थ बच्चे को भी शिक्षा की आवश्यकता होती है, और शिक्षा ही वह जगह है जहाँ भविष्य का निर्माण होता है।

रोटरी साझेदारी और रचनात्मक तरीकों के माध्यम से अगली पीढ़ी में निवेश करने के तरीके खोज रही है। बेल्जियम के रोटरी क्लब डैमे के जोहान डेनोल्फ और नेपाल के रोटरी क्लब काठमांडू मिड-टाउन के निर्मल रिजाल एक उल्लेखनीय उदाहरण साझा करते हैं:

नेपाल के पहाड़ों में स्थित मेलमची घ्यांग गांव के बच्चों के लिए कोई स्कूल नहीं था। 1985 में, पूर्णा गौतम नामक एक शिक्षक ने इसे बदलने का संकल्प लिया और इस वचन के साथ एक स्कूल की स्थापना की कि किसी भी बच्चे को कभी वापस नहीं लौटाया जाएगा। कई लड़कियों और लड़कों के लिए यह स्कूल बाल श्रम, कम उम्र में विवाह और मानव तस्करी जैसे खतरों से बचाव का एक सुरक्षित आश्रय बन गया।

1999 में बेल्जियम की समाजसेवी हिल्डे कुइपर्स, गौतम के मिशन से इतनी प्रभावित हुईं कि उन्होंने इसके समर्थन में केटाकेटी नामक एक गैर-लाभकारी संस्था की स्थापना की। केटाकेटी और रोटरी क्लब ऑफ डैमे ने साझेदारी की, और क्लब ने 2015 के भूकंप के बाद समुदाय को उबरने में भी मदद की।

2024 में, रोटरी क्लब डैमे ने - रोटरी क्लब काठमांडू मिड-टाउन और बेल्जियम और जर्मनी के 15 क्लबों के साथ मिलकर, मंडल 2130 के सहयोग से - 175,000 डॉलर के वैश्विक अनुदान के लिए एकजुट होकर काम किया।

इस परियोजना ने विद्यालय में सौर ऊर्जा लाई, खाना पकाने के लिए लकड़ी पर निर्भरता समाप्त की, एक चिकित्सा केंद्र को बिजली प्रदान की और वनीकरण तथा पर्यावरण शिक्षा की शुरुआत की।

द रोटरी फाउंडेशन के वैश्विक अनुदान के माध्यम से सैकड़ों नेपाली बच्चों को अब वह भविष्य पाने का वास्तविक अवसर मिला है जिसके वे हकदार हैं। सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि स्कूल के पूर्व छात्र अब अगली पीढ़ी के लिए उस भविष्य को सुरक्षित करने में योगदान दे रहे हैं। यही वह स्थायी, पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रभाव है, जिसे रोटरी साकार करने का प्रयास करता है।

ऐसी अनगिनत कहानियाँ हैं जो साकार होने की प्रतीक्षा कर रही हैं। आपके संकल्प और द रोटरी फाउंडेशन के सहयोग से आप भी उनमें से एक का हिस्सा बन सकते हैं।

होल्गर नेक
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981 लियोन जे
RID 2982 शिवसुंदरम पी
RID 3000 कार्तिक जे
RID 3011 रविंदर गुगनानी
RID 3012 अमिता अनिल मोहिंदरू
RID 3020 कल्याण चक्रवर्ती वाई
RID 3030 ज्ञानेश्वर शेवाळे
RID 3040 सुशील मल्होत्रा
RID 3053 निशा शेखावत
RID 3055 निगमकुमार एल चौधरी
RID 3056 प्रज्ञा मेहता
RID 3060 अमरदीप सिंह बुनेत
RID 3070 रोहित ओबेरॉय
RID 3080 रवि प्रकाश
RID 3090 भूपेश मेहता
RID 3100 नितिन कुमार अग्रवाल
RID 3110 राजेन विद्यार्थी
RID 3120 अशुतोष अग्रवाल
RID 3131 संतोष मधुकर मराठे
RID 3132 सुधीर वी लातुरे
RID 3141 मनीष मोटवानी
RID 3142 हर्ष वीरेंद्र मकोल
RID 3150 राम प्रसाद एस वी
RID 3160 रविंद्र एम के
RID 3170 अरुण डैनियल भांडारे
RID 3181 रामकृष्ण पी कन्नन
RID 3182 पलक्शा के
RID 3191 श्रीधर बी आर
RID 3192 एलिज़ाबेथ चेरियन
RID 3203 धनासेकर बी
RID 3204 बिजोश मैनुअल
RID 3205 रमेश जी एन
RID 3206 चेल्ला के राघवेन्द्रन
RID 3211 टीना एंटनी कुन्नुमकल
RID 3212 जे धिनेश बाबू
RID 3231 वी सुरेश
RID 3233 डी देवेंद्रन
RID 3234 विनोद कुमार सराओगी
RID 3240 कामेश्वर सिंह एलांगबम
RID 3250 नम्रता
RID 3261 अमित जायसवाल
RID 3262 मनोज कुमार त्रिपाठी
RID 3291 रामेन्दु होमचौधुरी

यह पत्रिका **पी टी प्रभाकर** द्वारा दुगर टावर्स, तीसरी मंझिल, 34, मार्शल्स रोड, एग्मोर, चेन्नई 600 008 से **रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट** की ओर से प्रकाशित की जाती है, इसका संपादन **रशीदा भगत** करती हैं और इसे **रासी ग्राफिक्स** द्वारा 40 पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600 014, भारत में प्रिंट किया जाता है।

योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

एम मुरुगानंदम **रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट**	RID 3000
के पी नागेश **रो ई निदेशक**	RID 3191
डॉ भरत पांड्या **टीआरएफ ट्रस्टी**	RID 3141
राजेंद्र के साबू	RID 3080
कल्याण बेनर्जी	RID 3060
शेखर मेहता	RID 3291
अशोक महाजन	RID 3141
पी टी प्रभाकर	RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई	RID 3060
सी भास्कर	RID 3000
कमल संघवी	RID 3250
डॉ महेश कोटबागी	RID 3131
ए एस वेंकटेश	RID 3234
राजु सुब्रमण्यन	RID 3141
अनिरुधा रॉयचौधरी	RID 3291
गुलाम ए वाहनवती	RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2025-26)

रोहित ओबेरॉय **अध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3070
ज्ञानेश्वर शेवाळे **वाईस चेयरमेन, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3030
एम के रविंद्र **सचिव, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3160
चेल्ला के राघवेन्द्रन **कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3206

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Magazine

टीआरएफ ट्रस्टी का संदेश

शांति और प्रभाव की नींव

वैश्विक संघर्ष और अनिश्चितता के बीच रोटरी फाउंडेशन आशा की किरण के रूप में खड़ी है। शांति पर केंद्रित हमारा कार्य, टीआरएफ के माध्यम से शांति के अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित करता है। वास्तव में, रोटरी ने अपने शांति-निर्माण कार्यक्रम की कल्पना 25 वर्ष से भी अधिक समय पहले की थी और उसे लागू भी किया था, उस समय से बहुत पहले, जब संगठनों और वैश्विक एजेंसियों के लिए अपनी गतिविधियों में शांति-निर्माण को शामिल करना अनिवार्य हो गया था।

रोटरी का कार्य अपनी सेवा गतिविधियों के माध्यम से सकारात्मक शांति स्थापित करना है - इसके सात प्रमुख क्षेत्रों में - जो हमारे समुदायों और विश्व भर में लोगों के जीवन को प्रभावित और परिवर्तित करते हैं। शांतिपूर्ण मानसिकता के लिए व्यवहार में परिवर्तन आवश्यक है, जिसमें प्रतिक्रियात्मक, संघर्ष-प्रेरित दृष्टिकोण से हटकर एक सक्रिय, शांति-उन्मुख सोच अपनाई जाए, जो सहानुभूति, सहयोग, समन्वय, समझौता और विश्वसनीयता की भावना पर आधारित हो। रोटरी के शांति केंद्र और शांति विद्वान कार्यक्रम का यही उद्देश्य है - व्यवहार और मानसिकता में परिवर्तन लाना।

टीआरएफ लगातार ऐसे प्रोजेक्ट्स और गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, जो समुदाय पर स्थायी प्रभाव डालें। चाहे वह किसानों के साथ जल उपलब्धता और बेहतर फसल के लिए काम करना हो (*प्रोग्राम्स ऑफ स्केल* के माध्यम से), या बेघर लोगों के लिए आवास उपलब्ध कराना, बच्चों की हृदय संबंधी सर्जरी करना, या पूरे भारत में मेडिकल वैन को सुसज्जित कर उनका संचालन करना हो, टीआरएफ वास्तव में व्यापक और प्रभावशाली परिवर्तन ला रहा है।

यह प्रभाव रोटेरियनों की उदारता के कारण ही संभव हो पाता है। जैसे-जैसे हम इस रोटरी वर्ष के अंतिम चरण में प्रवेश कर रहे हैं, रोटरी फाउंडेशन को समर्थन देना और उसमें निवेश करना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। सभी प्रकार के फंड महत्वपूर्ण हैं - एनुअल फंड, पोलियो फंड और एंडोमेंट फंड।

पिछले चार वर्षों में ट्रस्टी बोर्ड में सेवा करना मेरे लिए सम्मान और सौभाग्य की बात रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि रोटेरियन टीआरएफ को अपनी पसंदीदा परोपकारी संस्था के रूप में देखते हैं, और यही कारण है कि वे हर साल फाउंडेशन को दान देते हैं। टीआरएफ को दिया गया दान प्रभावी, कुशल और पारदर्शी होता है तथा इससे उन क्षेत्रों में मदद मिलती है, जहाँ इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है।

दूसरों की मदद करने के प्रति आपकी उदारता और समर्पण वास्तव में प्रेरणादायक है। *डूइंग गुड इन द वर्ल्ड* के प्रति आपकी प्रतिबद्धता के लिए धन्यवाद।

भरत पांड्या
टीआरएफ ट्रस्टी

मेरे उपाध्यक्ष का पूर्व रोटरेक्टर होना एक सोची-समझी रणनीति है: बाबालोला

रशीदा भगत

रो ई के निर्वाचित अध्यक्ष ओलायिंका बाबालोला और निर्वाचित उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम।

आगामी रो ई अध्यक्ष यिंका बाबालोला का आकर्षण उस सहज अपनत्व से शुरू होता है, जिसके साथ वे इस साक्षात्कार के लिए रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट कार्यालय में प्रवेश करते हैं। किसी भी संगठन के सर्वोच्च नेता से जिस तरह के प्रोटोकॉल या औपचारिकता की अपेक्षा की जाती है, उसका यहाँ कोई अंश देखने को नहीं मिलता है।

मुझे यह कहकर चौंकाने के बाद कि हमने इवेन्स्टन में एडिटर्स कॉन्फ्रेंस में आपको मिस किया, वे पूछते हैं कि मैं उसमें (25 और 26 मार्च) क्यों शामिल नहीं हुई। मैं बताती हूँ कि मेरी बुकिंग कतर एयरवेज में थी और उस पूरे क्षेत्र में मिसाइलें चलने के कारण मेरे परिवार ने मुझे उस रास्ते से जाने की अनुमति नहीं दी। मैंने यूरोप के रास्ते वैकल्पिक मार्गों की भी जांच की थी, लेकिन वे बहुत महंगे थे, मैंने संकोच करते हुए कहा।

उनकी चढ़ी हुई भौंहों और अनकहे सवाल पर, मैं हंसते हुए कहती हूँ, ओह, मुझे लगा कि हवाई किराए पर `4 लाख खर्च करना उचित नहीं था। बाबालोला मुस्कुराते हैं और कहते हैं: ठीक है, मुख्य बात है कि ''यह उचित नहीं था!''

इस हंसी-मजाक को जारी रखते हुए, मैं जवाब देती हूँ: मेरे बॉस MMM (रो ई निदेशक और आरएनटी अध्यक्ष एम मुरुगनंदम) कंजूस नहीं हैं। उन्होंने यात्रा को मंजूरी दे दी होती, लेकिन मैंने ही न जाने का फैसला किया!

गुलदस्ता भेंट करने, केक काटने और बाबालोला से मिलने आए कुछ वरिष्ठ रो ई अधिकारियों के साथ शिष्टाचार के आदान-प्रदान के बाद, चूँकि हमारे पास समय की कमी थी, इसलिए मैंने विनम्रतापूर्वक लेकिन दृढ़ता से आगामी वर्ष के लिए उनके उपाध्यक्ष एमएमएम को छोड़कर बाकी सभी से कमरे से बाहर जाने को कहा। बाद में, दोनों के साथ हुए संयुक्त साक्षात्कार के दौरान, बाबालोला मुस्कुराते हैं और मुरुगनंदम से कहते हैं: वह एक सशक्त महिला है, मैं देख सकता हूँ!

मेरे VP का पहले रोटरेक्टर रह चुके होना कोई इत्तेफ़ाक नहीं है, बल्कि यह एक सोची-समझी रणनीति है। रोटरी के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है; मुझे उम्मीद है कि रोटरेक्टर उत्साहित होंगे और इस मौके को पहचानेंगे।

यिंका बाबालोला
रो ई निर्वाचित अध्यक्ष

चूँकि आगामी अध्यक्ष, जो नाइजीरिया के रोटरी क्लब ट्रांस अमादी (रो ई मंडल 9141) के सदस्य हैं, और उनके उपाध्यक्ष, जो तिरुचिरापल्ली के रोटरी क्लब भेल सिटी (रो ई मंडल 3000) के सदस्य है, दोनों ही पूर्व रोटरेक्टर रहे हैं, इसलिए मुख्य सवाल यह है कि वे सदस्यता बढ़ाने के लिए अधिक रोटरेक्टरों एवं इंटरेक्टरों को रोटरी में शामिल करने की क्या योजना बना रहे हैं।

बाबालोला कहते हैं, ''हमें रोटरेक्टरों के प्रति अधिक स्वागतपूर्ण रहने की आवश्यकता है। मैं रो ई अध्यक्ष बनने वाला पहला रोटरेक्टर हूँ। और एक पूर्व रोटरेक्टर उपाध्यक्ष की भूमिका भी संभालने जा रहा है। यह कोई संयोग नहीं है।''

मैं इसे एक दुर्लभ संयोग कहती हूँ। ''नहीं, यह संयोग नहीं है, यह एक जानबूझकर उठाया गया कदम है। रोटरी के इतिहास में यह पहली बार है, और मुझे उम्मीद है कि रोटरेक्टर उत्साहित होंगे और इस अवसर की महत्ता को समझेंगे। साथ ही, युवाओं को रोटरी में शामिल करने को केवल रोटरेक्ट के माध्यम से ही नहीं, बल्कि हमारे युवा कार्यक्रमों - इंटरेक्ट, RYLA, यूथ एक्सचेंज और

रोटरेक्ट - की पूरी श्रृंखला के माध्यम से देखा जाना चाहिए। इनमें से प्रत्येक कार्यक्रम युवाओं को एक अलग अनुभव प्रदान करता है। रोटरेक्ट वह चरण है जहां करियर और व्यावसायिक विकास होना चाहिए। वर्तमान में हमारे पास इन कार्यक्रमों के बीच कोई स्पष्ट सेतु नहीं है; जहां इंटरेक्ट अच्छा चल रहा है, वहां रोटरेक्ट नहीं चल रहा, इसलिए जब छात्र स्कूल छोड़ते हैं, तो उनके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं होती, और इसलिए हम उन्हें खो देते हैं। हमने अपने RYLA कार्यक्रम को इंटरेक्ट कार्यक्रम के साथ, या अपने यूथ एक्सचेंज को RYLA या रोटरेक्ट कार्यक्रम के साथ जोड़ने का कोई सोचा-समझा प्रयास नहीं किया है।''

उदाहरण के लिए, कई रोटरी यूथ एक्सचेंज छात्र बाहर जाते हैं और रोटरी परिवारों के साथ पूरा एक साल या उससे अधिक समय बिताते हैं और रोटरी कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। स्वाभाविक रूप से, वे उम्मीद करते हैं कि जब वे वापस आएँगे, तो रोटरी उनका इंतजार कर रही होगी। लेकिन जब ऐसा नहीं होता है, तो यह एक बड़ा अवसर खोने जैसा है। हम इस पर काम कर रहे हैं, और इसके बारे में कुछ करेंगे; हमारे पास 'ग्रो रोटरेक्ट' नामक एक योजना है, जो पहले कभी नहीं थी।

मुरुगानंदम आगे कहते हैं, ''हम दोनों के पास अधिक युवाओं को रोटरी में शामिल करने की एक स्पष्ट योजना है। इंट्रक्टर संभावित रोटरेक्टर होते हैं, और रोटरेक्टर संभावित रोटेरियन। हम दुनिया भर में, खासकर दुनिया के इस हिस्से में, भारी संभावना को समझते हैं, और मैं इस अवसर को भुनाने जा रहा हूँ। हमारे पास एक योजना है, और यिंका के दृष्टिकोण के साथ मिलकर, हम 2030 तक 125,000 रोटरेक्टर बनाने की बात कर रहे हैं।''

जहाँ यह रोटरेक्टरों के लिए लक्ष्य है; ''दुनिया के इस हिस्से में, हम 1:2:3 के फॉर्मूले पर काम करेंगे, जो हमने सभी क्लबों को दिया है। हर एक रोटेरियन के लिए, आइए दो रोटरेक्टरों और तीन इंट्रक्टरों के बारे में सोचें। चूँकि हमारे पास अपार युवा क्षमता है, इसलिए हम इसे खोना नहीं चाहते हैं। निश्चित रूप से, रोटरी का भविष्य युवाओं के हाथों में है।''

आगामी उपाध्यक्ष आगे कहते हैं, ''यिंका का आपको यह बताना कि मेरा रोटरेक्टर होना और उपाध्यक्ष बनना कोई संयोग नहीं, बल्कि एक सोची-समझी रणनीति है, अपने आप में पूरी रोटरी दुनिया के लिए एक मजबूत संदेश है। यह युवाओं को देने के लिए एक सशक्त संदेश है कि रोटरेक्टर होने से आप रोटरी के उपाध्यक्ष के पद तक पहुँच सकते हैं। यह रोटरेक्ट के लिए एक और बड़ा प्रोत्साहन है।''

> यह एक गलतफ़हमी है कि युवा लोग अच्छा काम नहीं करना चाहते। मेरा मानना है कि वे सेवा करना चाहते हैं और ऐसे अवसर तलाश रहे हैं, जो रोटरी उन्हें प्रदान करती है।
>
> **यिंका बाबालोला**

संयोगवश, पूर्व रोटरेक्टर होने के अलावा, दोनों इंजीनियर भी हैं; जहाँ बाबालोला को तेल और गैस क्षेत्र में 25 वर्षों से अधिक का अनुभव है, वहीं मुरुगानंदम के व्यवसाय समुद्री लॉजिस्टिक्स, ऊर्जा और मानव संसाधन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए हैं।

युवाओं को जोड़ने और उन्हें केंद्रित करने के बारे में, जो एक कठिन कार्य है, बाबालोला कहते हैं, मुझे लगता है कि इसमें कुछ गलतफहमियां हैं, पहली यह कि युवा अच्छा काम नहीं करना चाहते। मेरा मानना है कि वे सेवा करना चाहते हैं और ऐसा करने के अवसर तलाश रहे हैं। और रोटरी वे अवसर प्रदान करती है; बस हम उनसे ठीक से जुड़ नहीं पाए हैं। मुझे पता है कि रोटरेक्टर हमारी दुनिया के कई हिस्सों में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। वास्तव में, जहां रोटरी फल-फूल रही है, वहां रोटरेक्ट भी फल-फूल रहा है। जहां रोटरेक्ट अच्छा नहीं कर रहा है, वहां रोटरी भी अच्छा नहीं कर रही। मैं यह बात 1001 बार कर चुका हूँ।

इसलिए, हमें उन्हें फलने-फूलने और आगे बढ़ने

सुमति और मुरुगानंदम के साथ RIPE बाबालोला।

सक्षम महिलाओं की तलाश

हमें अपने माहौल को महिलाओं के लिए अधिक समावेशी बनाना होगा

रो ई में अपने कार्यकाल के दौरान आरआईपीई यिंका बबालोला का एक ध्यान महिलाओं की सदस्यता बढ़ाने और उनके नेतृत्व पदों को सुदृढ़ करने पर होगा। रो ई में लगभग 27 प्रतिशत सदस्य महिलाएँ हैं, हालांकि मिस्र जैसे कुछ देशों में यह संख्या 50 प्रतिशत से अधिक है। मिस्र वाले मुझसे कहते हैं कि वे पुरुषों की तलाश कर रहे हैं, वे हंसते हुए कहते हैं।

गंभीरता से बात करते हुए, वे कहते हैं, ''रोटरी में अधिक महिलाओं को लाने के लिए हमें अपने वातावरण को अधिक समावेशी बनाना होगा। केवल पुरुषों वाला माहौल और मिश्रित माहौल दो अलग-अलग चीजें हैं। सबसे पहले, हमें महिलाओं का समर्थन करने और उन्हें आगे बढ़ने के अवसर देने की आवश्यकता है। मैं रो ई बोर्ड में था, जब 2018 में पहली बार यह निर्णय लिया गया था कि हमारे नेतृत्व में लगभग 30 प्रतिशत महिलाएं होनी चाहिए। और हर निदेशक से इसे साकार करने की उम्मीद की जाती है; निर्वाचित अध्यक्ष के रूप में, मैं भी इसे साकार करने की कोशिश कर रहा हूँ। मुझे जो नियुक्तियां करनी हैं, उसके लिए मैं सक्षम महिलाओं की तलाश कर रहा हूँ। और जब मैं उन्हें देखता हूँ, तो मैं उन्हें अवसर देता हूँ ताकि वे दिखा सकें कि वे क्या करने में सक्षम हैं।''

महिलाओं को नेतृत्व पदों पर लाने का एक और तरीका यह है कि कुछ ऐसे पद, जो केवल पूर्व मंडल गवर्नरों के लिए निर्धारित होते हैं, उन्हें केवल महिलाओं को ही दिया जाए। गवर्नरों का चुनाव मंडलों द्वारा किया जाता है, और यदि मंडल महिलाओं को गवर्नर के रूप में नहीं चुनते, तो वे स्वयं के पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं, क्योंकि जब मौका आएगा, तो हम उनके पुरुषों को छोड़कर अन्य स्थानों से महिलाओं का चयन करेंगे।

मुरुगानंदम बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहते हैं कि जहाँ बाबालोला को नियुक्तियाँ करनी होती

बाएँ से: TRF ट्रस्टी इजेओमा पर्ल ओकोरो, रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो की पत्नी अन्ना मारिया, RIPE बाबालोला की पत्नी प्रेबा पीकॉकबा, और रो ई मंडल 9141 की डीजी एंथनी वोगिरेन की पत्नी थेरेसा।

हैं, वहाँ यह पहले से ही हो रहा है। आपकी जानकारी के लिए, उन्होंने एक महिला - रो ई निदेशक हैरियट वर्वेथ को 2026-27 के लिए रो ई की कार्यकारी समिति की अध्यक्ष नियुक्त किया है, और उनकी प्रशासनिक प्रमुख भी एक महिला हैं।

बाबालोला फिर से दोहराते हैं कि यह एक बहुत ही सोच-समझकर लिया गया निर्णय है। केवल समिति के अध्यक्षों के लिए ही नहीं, बल्कि समिति के सदस्यों के लिए भी, मैं हमेशा कहता हूँ कि मैं लैंगिक संतुलन देखना चाहता हूँ। जब से बोर्ड ने यह निर्णय लिया है, केवल मैं ही नहीं, बल्कि एक संगठन के रूप में रोटरी भी विभिन्न स्तरों पर महिलाओं को नेतृत्व पदों पर लाने के लिए विशेष प्रयास कर रही है।

लेकिन, वे चेतावनी देते हैं, केवल इतना करना पर्याप्त नहीं होगा। यही काम मंडल स्तर पर और उससे भी अधिक, क्लब स्तर पर किया जाना चाहिए। क्योंकि रोटरी क्लब ही वह जगह है जहां सब कुछ होता है।

यदि हमारे क्लब महिलाओं के प्रति सहायक नहीं हैं, विशेषकर उन महिलाओं के प्रति जो मातृत्व की आयु में हैं, तो कुछ खास बदलाव नहीं लाया जा सकेगा।

मेरे उलझन भरे भाव को देखकर वे कहते हैं, हाँ, युवा महिलाएँ, मातृत्व की आयु की महिलाएँ, क्योंकि उस समय वे कई जिम्मेदारियों से जूझ रही होती हैं। मुझे कहानियाँ सुनाना पसंद है, और कृपया मुझे यह एक कहानी सुनाने दें।

फिर वे एक क्लब बैठक का रोचक किस्सा सुनाते हैं जिसमें वे शामिल हुए थे। मैं ऐसे ही एक क्लब मीटिंग में गया और एक महिला अपने दो बच्चों के साथ अंदर आई। उनमें से एक लगभग 5 साल का था और दूसरा 18 महीने का। छोटा

बच्चा स्ट्रोलर में बड़े आराम से सो रहा था। और 5 साल का बच्चा बैठक कक्ष में इधर-उधर दौड़ रहा था।

वे चुपचाप रोटेरियनों की प्रतिक्रिया देख रहे थे; उन लोगों ने कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं दी। लेकिन मैंने ऐसी स्थितियाँ भी देखी हैं जहाँ रोटेरियन ऐसे मामलों में कहते हैं: ''क्या आप इस बच्चे को बाहर ले जा सकती हैं? यह खेलने की जगह नहीं है। यह गंभीर काम है। क्या आप बैठक में आते समय बच्चे को कहीं और नहीं छोड़ सकतीं?''

बाबालोला आगे कहते हैं कि इस तरह के रवैये के साथ, महिलाएं निश्चित रूप से रोटरी से दूर रहेंगी। भले ही वे रोटरी से जुड़ें, और फिर गर्भवती हो जाएँ, तो वे रोटरी छोड़ देती हैं। और यदि क्लब दुर्भाग्यशाली हुआ, तो वे शायद वापस भी न आएँ क्योंकि हो सकता है वे रोटरी के प्रति वास्तव में बहुत जुनूनी न हों।

इस अनुभव ने उनके मन में कई प्रश्न उठाए - अगर उस दिन कोई वक्ता होता तो क्या होता? उस विशेष दिन क्लब में कोई वक्ता नहीं था। अगर वह 18 महीने का बच्चा नींद से उठकर रोने लगता तो क्या होता? तब सदस्य कैसे प्रतिक्रिया देते? इस कहानी का सबसे दिलचस्प हिस्सा यह है कि उस दिन की बैठक के बाद, सदस्यों ने एक अच्छा निर्णय लिया। उन्होंने होटल से अनुरोध किया कि उन्हें बैठक हॉल के पास वाले छोटे कमरे का उपयोग करने दिया जाए, पुरुषों से कहा गया कि वे बच्चों के लिए कुछ खिलौने लाएँ, और महिलाओं ने तय किया कि हर बैठक के दौरान उनमें से एक सभी बच्चों की देखभाल के लिए नैनी की भूमिका निभाएगी। और उन्होंने महिलाओं से कहा कि वे अपने बच्चों को क्लब बैठकों में लेकर आएँ। इस प्रकार अधिक महिलाएँ बैठकों में आने लगीं।

इस कहानी का सुखद अंत यह है कि कुछ समय बाद पुरुष भी नैनी सेवा के लिए आगे आने लगे, क्योंकि वे केवल बच्चों के लिए खिलौने लाना ही नहीं, बल्कि उनके साथ खेलना भी चाहते थे। कुछ बुजुर्ग पुरुष, जिनके बच्चे अब घर पर नहीं हैं, बच्चों के साथ खेलने का यह अवसर बहुत पसंद करते हैं। इसी प्रकार के क्लबों में महिलाएँ शामिल होना चाहेंगी जहाँ आपको यह भरोसा हो कि आपका परिवार परेशान नहीं होगा और आप अत्यधिक तनाव में नहीं रहेंगी। वास्तव में, ऐसे क्लब महिलाओं को रोटरी से जुड़ने के लिए प्रेरित कर सकते हैं, यह सोचकर कि: 'कम से कम आज कोई मेरे बच्चों की देखभाल करेगा और मुझे थोड़ी शांति मिल सकेगी!'

मुरुगानंदम महिलाओं को अधिक नेतृत्व भूमिकाएँ देने के प्रयास का समर्थन करते हुए कहते हैं, मैंने पाया है कि जब भी हम अपनी महिला सदस्यों को अवसर देते हैं, वे सबसे बेहतर करके दिखाती हैं वे शानदार काम करती हैं। वे समर्पित, केंद्रित और मेहनती होती हैं।

उनके अध्यक्ष सहमति में सिर हिलाते हुए कहते हैं, किसी ने कहा है कि अगर आप कोई काम करवाना चाहते हैं, तो उसे किसी महिला को दे दीजिए। मैं यह बात बड़ी सावधानी से कह रहा हूँ, लेकिन पुरुषों की तुलना में उनका ध्यान बहुत कम भटकता है!

के लिए अवसर प्रदान करना होगा। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, *एलिवेट रोटरेक्ट* पहल के तहत हम कुछ बातें कह रहे हैं; हम अपने क्षेत्रीय समन्वयकों से विभिन्न समितियों में रोटरेक्टरों को नियुक्त करने की बात कह रहे हैं। हम रोटरेक्टरों को सहायक समन्वयकों के रूप में शामिल करने की शुरुआत कर रहे हैं और वर्तमान में हमारे पास एक रोटरेक्टर जनसंपर्क समन्वयक के रूप में कार्यरत है, न कि सहायक समन्वयक के रूप में। इसे हर जगह, मंडल और क्लब स्तर पर दोहराया जाना चाहिए। हमें मंडल गवर्नरों से ऐसा करने और रोटरेक्टरों को एक सार्थक तरीके से जोड़ने की आवश्यकता है जो उनके विशिष्ट कौशल को पहचाने। इसका अर्थ केवल रोटरेक्टरों को कमरे की व्यवस्था करने के लिए बुलाना नहीं है। यह युवा पेशेवरों की क्षमता का सही उपयोग नहीं होगा। हमें उनके कौशल को पहचानना और उसका बेहतर उपयोग करना होगा।

मुरुगानंदम एक और पहलू जोड़ते हुए कहते हैं, रोटेरियनों के लिए यह जानना ज्यादा महत्वपूर्ण है

RIPE बाबालोला और निर्वाचित उपाध्यक्ष मुरुगानंदम चेन्नई स्थित RNT कार्यालय में केक काटते हुए।

एक नज़र में

सवालों के एक रैपिड-राउंड पर आरआईपीई बाबालोला की प्रतिक्रिया:

संगीत: एफ्रोबीट, एफ्रोपॉप। मुझे वे बहुत पसंद हैं।

धर्म: मैं आस्था रखने वाला व्यक्ति हूँ। मैं बहुत अधिक धार्मिक नहीं हूँ, लेकिन मैं उन शक्तियों में विश्वास करता हूँ जो मेरी समझ से परे हैं।

पसंदीदा भोजन: बीन्स और कच्चे केले। मैं दिन में तीन बार कच्चे केले खा सकता हूँ क्योंकि हमारे क्षेत्र में इसे बनाने के दस अलग-अलग तरीके मौजूद हैं।

क्या आप खाना पकाते हैं: मैं बहुत अच्छा खाना बनाता हूँ... जिससे मेरी पत्नी को झुंझलाहट होती है!

पढ़ना: दर्शनशास्त्र पर किताबें। मुझे इस तरह की गंभीर चीजें पसंद हैं... कभी-कभी रहस्यमय विषय, जो आसपास दिखने वाली चीज़ों से कहीं अधिक गहराई में जाते हैं।

पसंदीदा किताब: मैं ऑस्ट्रेलिया के एक रोटेरियन माइकल मैकीन द्वारा लिखित *माइंडस्टक* पढ़ रहा हूँ, जहां वे मानसिकता बदलने के बारे में बात करते हैं। यह बहुत दिलचस्प है।

आराम; फिल्में या संगीत: नहीं, मैं फिल्में नहीं देखता, मेरे पास समय नहीं है! जब मुझे आराम की जरूरत होती है, जब मैं तनाव में होता हूँ, तो मैं अगरबत्ती जलाता हूँ। मुझे खुशबू पसंद है, क्योंकि खुशबू मुझे शांत करती है। मुझे अरब से बहुत सारी अगरबत्तियां मिलती हैं। जब मैं घर पर होता हूँ, तो खुद को शांत करने के लिए मैं अगरबत्ती जलाता हूँ। जब मैं बाहर हूँ, तो मैं टहलता हूँ ताकि पौधों से आने वाली खुशबू का आनंद ले सकूँ।

फिटनेस: फिटनेस के लिए, मैं गोल्फ खेलता हूँ, जब मौका मिलता है तो मैं तैराकी करता हूँ। लेकिन मेरी हाल की यात्राओं के कारण, यह सब एक चुनौती बनता जा रहा है।

यात्रा, पसंदीदा छुट्टी का स्थान: मेरा कोई एक पसंदीदा स्थान नहीं है, क्योंकि कई जगहों पर जाकर मैं खुद से कहता हूँ कि मैं यहाँ फिर से आऊँगा, लेकिन दोबारा कभी समय नहीं मिल पाता। लेकिन कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ मुझे बहुत शांति महसूस हुई। उदाहरण के लिए, जब मैं नेपाल में, माउंट एवरेस्ट के पास कहीं था, तो मुझे बहुत शांति मिली। क्रोएशिया का डुब्रोवनिक बहुत सुंदर है; वहाँ मैं समुद्र के किनारे या किसी खाड़ी के पास एक कुर्सी पर बैठा था। और मैं वहीं सो गया; वहाँ इतनी शांति थी।

रोटरी के लिए सपना: अगले वर्ष, मैं रोटेरियनों के रोटरी के साथ भावनात्मक जुड़ाव को फिर से स्थापित करना चाहता हूँ। मैं रोटेरियनों से यह पूछ रहा हूँ कि उन्हें इस संगठन में क्यों होना चाहिए। यदि यह केवल लेन-देन तक सीमित है - आप कुछ देते हैं और बदले में कुछ प्राप्त करते हैं उदाहरण के लिए एक नैनी को लें, जिसका काम बच्चों की देखभाल करना है; अगर उस समूह में उसका अपना बच्चा भी हो, तो क्या आप ध्यान देंगे? निश्चित रूप से देंगे। यही भावनात्मक जुड़ाव फर्क पैदा करता है, और मैं इसे फिर से स्थापित करना चाहता हूँ। हममें से कई लोगों से पूछा जाता है: रोटरी में ऐसा क्या है कि आप अपना इतना समय, पैसा और सब कुछ इसमें लगाते हैं? तो इसका उत्तर वहीं भावनात्मक जुड़ाव होता है।

कि हम रोटरेक्टरों को कितने दिखाई देते हैं। हमारे पास सुनाने के लिए एक बहुत बड़ी कहानी है, लेकिन हमें उसे इस तरह से बताना होगा कि वे उसे समझ सकें। हमें उस कहानी को बेहतर तरीके से प्रस्तुत करना होगा और उन्हें यह बताना होगा कि यहाँ हम उन्हें एक ऐसा नेटवर्क, नेतृत्व और सेवा का अवसर प्रदान कर रहे हैं, जो उनके लिए खुला है। तब वे निश्चित रूप से समझेंगे कि हमारे संगठन में उनके लिए किस तरह के अवसर उपलब्ध हैं।

सहमति में सिर हिलाते हुए बाबालोला रोटरेक्टरों के रोटरी में शामिल होने के लिए एक स्वागत योग्य माहौल बनाने के महत्व को दोहराते हैं। वे कहते हैं कि रोटरेक्ट में 10 साल बिताने के बाद, उनके क्षेत्र के सभी रोटरेक्टर उन्हें जानते थे। जब मैं एक रोटरेक्टर के रूप में रोटरी में शामिल होने जा रहा था, तो मैं अपनी रोटरी क्लब की बैठक में गया। और क्लब अध्यक्ष ने मेरी ओर देखा और कहा, 'रोटरेक्टर, तुम आज यहाँ क्या कर रहे हो?' और मैंने कहा: 'अध्यक्ष महोदय, मैं रोटरी में शामिल होने आया हूँ।' पूरा कमरा मेरी ओर मुड़कर देखने लगा। क्या? इतनी हिम्मत? इस नौजवान को क्या हो गया है? क्या इस तरह रोटरी में शामिल होते हैं? इसे देखो। क्या तुम नहीं जानते कि रोटरी में केवल निमंत्रण द्वारा शामिल हुआ जाता है?' मैंने यह कहानी कई बार सुनाई है।

रोटरेक्टर्स को रोटरी की विशाल गाथा इस तरह से सुनानी चाहिए कि वे उसे समझ सकें; साथ ही उन्हें यह भी पता चले कि हमारे पास एक नेटवर्क, नेतृत्व और सेवा उपलब्ध है।

एम मुरुगानंदम
रो ई उप-अध्यक्ष (निर्वाचित)

वह युवक अपनी बात पर अड़ा रहा और शांतिपूर्वक से बोला: मुझे नहीं पता था कि किसी बच्चे को अपने माता-पिता के घर आने के लिए आमंत्रण की आवश्यकता होती है। लेकिन उस दिन एक रोटेरियन ने मेरे पक्ष में आवाज उठाई, और इसी तरह मैं एक रोटेरियन बन गया। हमें खुले विचारों का होना चाहिए और युवाओं को यह दिखाना चाहिए कि रोटरी एक ऐसी जगह है जहाँ उनका स्वागत है और उन्हें महत्व दिया जाता है।

यह घटना 1993 में हुई थी; क्या अब चीजें बदल गई हैं, मैंने दोनों नेतृत्वकर्ताओं से पूछा। जहाँ मुरुगानंदम कहते हैं, हाँ, बहुत अधिक, वहीं आगामी अध्यक्ष कहते हैं, नहीं। MMM उस बारे में बात कर रहे हैं जो वे यहाँ (हमारे क्षेत्र में) देख रहे हैं। हाँ, मैं मानता हूँ कि तब से रोटरी बहुत बदल गई है। लेकिन क्या सभी रोटरी क्लब बहुत खुले और स्वागत करने वाले हैं? इसका उत्तर 'नहीं' है।

क्या उनका मतलब यूरोप या अमेरिका के स्थानों से था? कहीं भी नहीं। भारत के सभी रोटरी क्लबों में भी नहीं। नाइजीरिया में भी नहीं। लेकिन सभी रोटरी क्लब ऐसे नहीं हैं। ऐसे भी रोटरी क्लब हैं जिन्होंने रोटरेक्टरों को स्वीकार किया है। उदाहरण के लिए MMM को ही लें! वे एक रोटरेक्टर थे और अब एक रोटेरियन हैं; अगर उनके रोटरी क्लब ने रोटरेक्टरों को स्वीकार नहीं किया होता, तो वे यहाँ तक कभी नहीं पहुँच पाते। यही बात मेरे क्लब और ऐसे कुछ अन्य क्लबों पर भी लागू होती है। लेकिन अभी भी ऐसे रोटरी क्लब हैं जो इतने खुले नहीं हैं, और केवल रोटरेक्टरों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे के पूरे युवाओं के लिए।

इसके बाद हम इस सवाल पर आते हैं कि अध्यक्ष और उपाध्यक्ष कितने करीब से काम करते हैं, और अच्छे तालमेल की आवश्यकता क्या है। ''बहुत करीब से,'' बाबालोला मुस्कुराते हैं। बिल्कुल... हमारे बीच एक अच्छा तालमेल होना चाहिए। आपसी समझ महत्वपूर्ण है, और यही कारण है कि उपाध्यक्ष के चयन का प्रस्ताव अध्यक्ष ही करता है। उपनियम नियमों के अनुसार, उपाध्यक्ष वही कार्य करता है जो अध्यक्ष उसे सौंपता है या जब अध्यक्ष उपलब्ध नहीं होता। यदि किसी स्थिति में

जीवनसाथी की भूमिका

RIPE बाबालोला (बीच में) अपनी पत्नी प्रेबा के साथ।

यिंका बाबालोला की पत्नी प्रेबा, रोटरी क्लब पोर्ट हार्कोर्ट पासपोर्ट की सदस्य हैं और अपने पति के साथ एक एकेएस सदस्य भी हैं। वे पहली बार उनसे एक रोटरेक्ट क्लब की बैठक में मिले थे। तो, रोटरी में उनकी नेतृत्व यात्रा में उनकी पत्नी की क्या भूमिका रही, यह पूछने पर वे कहते हैं, जब मैंने अंतर्राष्ट्रीय सभा में जीवनसाथियों के सत्र को संबोधित किया, तो मैंने उन्हें बताया कि जब मैं गवर्नर के रूप में अंतर्राष्ट्रीय सभा में शामिल हुआ था, तो मैंने यह मान लिया था कि मेरी पत्नी, जो एक रोटरेक्टर थीं, एक रोटरेक्ट क्लब की पहली महिला अध्यक्ष थीं, एक रोटेरियन से विवाहित थीं, और वह रोटरी के बारे में सब कुछ जानती है। इसलिए उनके लिए जीवन आसान होगा।

लेकिन नाइजीरिया में एक पूर्व मंडल गवर्नर ने उनके लौटने पर उन्हें चेतावनी दी कि गवर्नर के रूप में एक रोटेरियन के साल के लिए जीवनसाथी को कोई भी चीज कभी तैयार नहीं कर सकती है। सच्चाई यह है रोटरी में नेतृत्व बहुत चुनौतीपूर्ण होता है, और दुनिया में कहीं भी आपके पास दिन में केवल 24 घंटे ही होते हैं। ''यदि आपको नेतृत्व की जिम्मेदारियों को पूरा करना है, तो कुछ काम जो पहले आप किया करते थे, अब किसी और को करने पड़ेंगे। स्वाभाविक रूप से यह ज़िम्मेदारी आपके जीवनसाथी पर आ जाती है। अगर आपका जीवनसाथी मेरी तरह हो, जो यह समझता हो कि जिम्मेदारियाँ क्या हैं, तो जीवन आसान हो जाता है। और कृपया मेरी इस बात पर ध्यान दें रशीदा, मैंने कहा जीवन अपेक्षाकृत आसान हो जाता है; मैंने यह नहीं कहा कि जीवन आसान है!''

वह आगे कहते हैं, वह एक क्लब की पूर्व अध्यक्ष है, पूर्व सहायक गवर्नर भी रह चुकी हैं, और मैं बहुत आभारी हूँ कि प्रेबा मेरी जीवनसंगिनी हैं।

जब भी हम अपनी महिला सदस्यों को अवसर देते हैं, तो वे सबसे आगे निकल जाती हैं... वे कमाल का काम करती हैं। वे समर्पित, एकाग्र और मेहनती हैं।

एम मुरुगानंदम

अध्यक्ष अक्षम हो जाता है, तो उपाध्यक्ष अध्यक्ष का पदभार संभाल लेता है। इसके बाद वे मुस्कुराते हुए आगे कहते हैं: ''लेकिन मैं आपको बता सकता हूँ कि इस उपाध्यक्ष को बहुत काम करना होगा।''

मुरुगानंदम को अपने उपाध्यक्ष के रूप में चुनने के पीछे की विशेषताओं और उनकी ताकतों के बारे में बाबालोला कहते हैं, साहस। दृढ़ता। साथ ही, हम दोनों में एक और बात समान है; रोटरी को बढ़ाने का जुनून। मेरे पास अपने क्षेत्र में रोटरी को बढ़ाने का अनुभव है। उनके पास भी अपने क्षेत्र में रोटरी के विकास का समर्थन करने का अनुभव है। और 2026-27 में, हमारे पास पूरी दुनिया में रोटरी का विस्तार करने का एक बहुत ही महत्वाकांक्षी लक्ष्य है। मेरी इच्छा, मेरी आकांक्षा, मेरा लक्ष्य है कि कई वर्षों से थमी रोटरी की सदस्यता में वृद्धि हो। इसलिए उनके पास करने के लिए बहुत काम है!

जब मैं टिप्पणी करती हूँ कि 52 वर्ष की उम्र में उनके उपाध्यक्ष के पास इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए निश्चित रूप से ऊर्जा है, तो बाबालोला कहते हैं, ऊर्जा से भी बढ़कर, उनके पास जुनून है। क्योंकि आपके पास ऊर्जा हो सकती है, लेकिन जुनून नहीं। दोनों की आवश्यकता होती है। उनके पास ऊर्जा भी है, जुनून भी है, और मुझे नहीं पता कि वे स्वयं इसे महसूस करते हैं या नहीं मैं उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखता हूँ जो भीतर से प्रेरित है। जब मैं कहता हूँ कि हमें यह करना है, तो वे समझ जाते हैं और मुझे इसके बारे में बहुत अधिक समझाने की जरूरत नहीं पड़ती!

जब मैं माफी मांगती हूँ और उनसे कहती हूँ कि समय समाप्त होने के बावजूद, मुझे उनसे एक आखिरी सवाल पूछना है कि क्या रोटरी हमारी इस बंटी हुई दुनिया में एक शांति निर्माता के रूप में उभर सकता है, विशेष रूप से ईरान पर अमेरिका-इज़राइल के हमलों की पृष्ठभूमि में, बाबालोला मुस्कुराते हैं और कहते हैं, ओह, उनकी चिंता मत कीजिए, (MMM, जिन्होंने मुझे इशारा किया था कि समय समाप्त हो गया है और उन्हें जाना है!) आखिरकार, आप उनके अध्यक्ष से बात कर रहे हैं!

ज़रा कल्पना कीजिए कि हमारे पीस फ़ेलोज़ या रोटेरियन व्हाइट हाउस में काम कर रहे हैं। और ईरान, इज़रायल, क़तर और दूसरी जगहों पर बातचीत में शामिल हैं। भले ही सरकारें एक-दूसरे पर भरोसा न करें, लेकिन रोटेरियन ज़रूर करेंगे।

यिंका बाबालोला

सवाल पर आते हुए, वे कहते हैं कि बहुत से लोगों ने उनसे पूछा है क्या रोटरी मध्यस्थ की भूमिका निभा सकता है। लेकिन एक संगठन के रूप में, मुझे नहीं लगता कि हमें ऐसा करना चाहिए। हम उसके लिए नहीं बने हैं। लेकिन एक समुदाय के रूप में, हम बहुत कुछ कर सकते हैं, क्योंकि संघर्ष के हर पक्ष में रोटेरियन मौजूद होते हैं। और अगर हमारे रोटेरियनों में शांति स्थापित करने की क्षमता है, जो कि रोटरी एक संगठन के रूप में कर रही है, तो शायद चीजें इतनी खराब नहीं होंगी। हम चीजों को बिगड़ने और युद्ध का रूप लेने से पहले ही ठीक कर सकते हैं।

मध्य पूर्व में हो रही घटनाओं का उदाहरण देते हुए वे कहते हैं, जरा कल्पना कीजिए कि हमारे शांति मित्र या रोटेरियन व्हाइट हाउस में काम कर रहे हों। कल्पना कीजिए कि वे ईरान में हों, या इज़राइल में हों, या कतर और अन्य स्थानों पर हों जो वार्ताओं में शामिल हैं। तब, भले ही सरकारें एक-दूसरे पर भरोसा न करें, हमारे पास ऐसे लोग होंगे जो रोटरी की सदस्यता के कारण एक-दूसरे पर भरोसा करते हैं, और वे अधिक सरलता से किसी समझौते पर पहुँच सकते हैं।

आगामी अध्यक्ष का मानना है कि संघर्ष की स्थितियों में रोटरी को दो काम करने चाहिए; हमारे शांति मित्रों का प्रभावी उपयोग करना, और मुझे खुशी है कि हमारे पास शांति केंद्र हैं तथा हमारे कई शांति मित्र सामाजिक परिवर्तन की पहल कर रहे हैं। वे बहुत काम कर रहे हैं, और उनका सारा काम शांति से जुड़ा हुआ है। मुझे उम्मीद है कि एक रोटेरियन के रूप में हम सकारात्मक शांति के बारे में सोचेंगे और खुद से पूछेंगे कि हम शांति पैदा करने और स्थायी प्रभाव डालने के लिए क्या कर सकते हैं। क्या हम अपनी सरकारों को ऐसे नीतिगत निर्णय लेने के लिए प्रभावित कर सकते हैं जो शांति को मजबूत कर सकें? यही वे तरीके हैं जिनसे हम एक अधिक शांतिपूर्ण दुनिया के उदय को प्रभावित कर सकते हैं।

वे मानते हैं कि और भी बहुत कुछ किया जा सकता है; ''मेरा विश्वास है कि हम पर्याप्त नहीं कर रहे हैं; हमें और अधिक करने की आवश्यकता है। और मैं यह कहना चाहूँगा कि रोटरी को किसी भी संघर्ष में कभी भी किसी एक पक्ष का समर्थन नहीं करना चाहिए, क्योंकि हमारे रोटेरियन हमेशा दोनों पक्षों में होंगे।''

चित्र: रशीदा भगत और विशेष व्यवस्था

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

क्लबों को अपने सर्वश्रेष्ठ से भी बेहतर प्रदर्शन करना होगा

वी मुत्तुकुमारन

बेंगलुरु में रो ई मंडल 3191 और 3192 के एक संयुक्त पीईएलएस में नवनिर्वाचित अध्यक्षों को संबोधित करते हुए, आरआईपीई आलायिका बाबालोला ने कहा कि पिछले 7-10 वर्षों में अपने रोटरी क्लबों के प्रदर्शन की समीक्षा करें और, अब तक के सर्वश्रेष्ठ वर्ष से भी बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करें, ताकि अपने समुदायों में स्थायी प्रभाव डाला जा सके।

क्लब के अध्यक्षों को हमेशा याद रखना चाहिए कि उनका कार्यकाल 30 जून, 2027 को समाप्त हो जाएगा, और उसके बाद केवल दो ही स्थितियाँ हो सकती हैं: या तो अगली सुबह बिना किसी ईमेल के आप अपनी जिम्मेदारी से राहत महसूस करेंगे, या फिर खुशी और संतोष के साथ मुस्कुराएँगे कि आपने अपने क्लब को विकसित करके उसे बेहतर बनाया चुनाव आपका है। रोटरी विजन स्टेटमेंट का हवाला देते हुए, आरआईपीई ने कहा, यदि आप मानते हैं कि रोटरी ने आपको, आपके व्यवसाय और पारिवारिक जीवन को बदल दिया है, तो इसे अच्छी तरह से सोचने के बाद लिखित रूप में दर्ज करें, और उस बदलाव को अपने क्लब के बाकी सदस्यों तक पहुँचाएँ।

उन्होंने नवनिर्वाचित क्लब अध्यक्षों को सलाह दी जब कोई आपसे पूछे कि रोटरी क्या है, तो 1905 से लेकर इसके संस्थापक पॉल हैरिस और शिकागो के ईवेंसटन तक की कहानी सुनाने की आवश्यकता नहीं है। बस अपनी व्यक्तिगत कहानी बताइए कि रोटरी ने आपके जीवन को कैसे बदला, और उन्हें भी ऐसे सकारात्मक परिवर्तन अपनाने के लिए प्रेरित करें। क्लब नेतृत्वकर्ताओं के रूप में, उन्हें सदस्यों को ऐसे अवसर देने चाहिए जिससे रोटरी उनके जीवन में परिवर्तनकारी प्रभाव डाल सके।

उन्होंने कहा कि रोटरी क्लबों को बाहरी कारकों से प्रभावित होने के बजाय स्वयं से प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए और साल के लिए विकास लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। हमारा लक्ष्य 2030 तक 1.25 मिलियन सदस्यों वाली रोटरी बनना है। अपने भीतर उत्साह जगाइए, आगे बढ़िए और अपने सर्वश्रेष्ठ से भी बेहतर कीजिए। हमें भारत में रोटरी को आगे बढ़ाना है, उन्होंने समझाया।

जीवन के तीन सरल नियमों को सूचीबद्ध करते हुए, रो ई निदेशक के पी नागेश ने कहा, यदि आप जो चाहते हैं उसके पीछे नहीं भागते हैं, तो वह आपको कभी नहीं मिलेगा; यदि आप नहीं पूछते हैं, तो उत्तर हमेशा ङ्गनाफ होता है; और यदि आप कदम आगे नहीं बढ़ाते हैं, तो आप वहीं खड़े रह जाते है। उन्होंने क्लब अध्यक्षों से आग्रह किया कि वे सही काम के लिए सही व्यक्ति का चुनाव करें, निष्पादन के लिए सही उपकरणों का उपयोग करें, और अपने सदस्यों के योगदान की सराहना करें।

नागेश ने कहा कि रोटेरियन जीवन में विजेता होते हैं, क्योंकि वे कुछ भी हासिल करने के लिए समस्याओं को अवसरों में बदल देते हैं। योजना बनाएं, जल्दी से उसे लागू करें, और अपने काम व परियोजनाओं को टालें नहीं। उन्होंने कहा कि बड़ा हासिल करने के लिए बड़े लक्ष्य रखें, अपने स्वयं के क्लब भवन से शुरुआत करें, नए क्लबों में 40 से अधिक सदस्य सुनिश्चित करें, सीएसआर कोष से समर्थित अपना न्यास बनाएं, सभी रोटेरियनों को पीएचएफ सदस्य बनाएं, और कम से कम 33 प्रतिशत महिला सदस्यता सुनिश्चित करें। सभी क्लबों को 1:2:3 फार्मूला को अपनाना चाहिए।

रो ई मंडल 3191 ने नवनिर्वाचित अध्यक्षों को प्रशिक्षित करने के लिए 15 से अधिक प्री-पीईएलएस आयोजित किए थे। डीजीई अनिल गुप्ता ने कहा, हमारा लक्ष्य 10 नए क्लब शुरू करना और 500 नए सदस्यों को जोड़ना है। वर्तमान में, उनके पास 92 क्लब हैं। अगस्त में, मंडल एक वीटीटी मिशन (वैश्विक अनुदान: 40,000 डॉलर) शुरू करेगा, जिसके तहत अफ्रीका के

वी मुत्तुकुमारन

चार रीढ़ और न्यूरोसर्जनों को एक वर्ष के लिए एस्टर व्हाइटफील्ड अस्पताल में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। कोलार क्षेत्र में 100 से अधिक सूखे तालाबों को पुनर्जीवित किया जाएगा ताकि वे 100 बिलियन लीटर पानी संग्रहित कर सकें और भूजल पुनर्भरण कर सकें। `5 करोड़ की इस परियोजना को सीएसआर और वैश्विक अनुदानों के मिश्रण से वित्त पोषित किया जाएगा। रो ई मंडल 3191 के क्लब 20 करोड़ की सेवा परियोजनाएं करेंगे, और गुमा का टीआरएफ योगदान लक्ष्य 2 मिलियन डॉलर का है। लगभग 10 वैश्विक अनुदान परियोजनाएं कतार में हैं।

सामूहिक नेतृत्व

अपने कार्यकाल के लिए 'धन्यवाद - कार्यवाही में कृतज्ञता' थीम के साथ, रो ई मंडल 3192 के डीजीई रविशंकर डकोजू ने कहा, हम सामूहिक नेतृत्व और सीमा रहित दुनिया में विश्वास करते हैं। हम बड़े सपने देखते है और *प्रोजेक्ट धन्यवाद* के तहत तीन क्षेत्रों में कार्यक्रमों को लागू करेंगे।

भारत के विभिन्न रो ई मंडलों में 10 लाख से अधिक पेड़ लगाए जाएंगे; वाटर फॉर वॉयसलेस नामक एनजीओ के सहयोग से पालतू जानवरों एवं पक्षियों के लिए 10,000 पानी के कटोरे स्थापित किए जाएंगे; और फ्रेंड्स ऑफ ट्राइबल्स सोसाइटी द्वारा संचालित पाँच स्कूलों में आदिवासियों को बुनियादी शिक्षा दी जाएगी। डकोजू ने कहा कि यह एनजीओ पूरे भारत में एक लाख से अधिक स्कूल चला रहा है, जहाँ आदिवासी बच्चों को शिक्षा दी जाती है।

रो ई मंडल 3192 ने बुजुर्गों की देखभाल के लिए विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के साथ कार्यशालाएं आयोजित करने और नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ अभियान चलाने की योजना बनाई है। डीईआई पहल के तहत, ट्रांसजेंडरों को 10 कैब और 10 ऑटोरिक्शा दिए जाएंगे, और एक बहु-मंडलीय पैरालंपिक भी आयोजित किया जाएगा, उन्होंने कहा। `15 करोड़ की सेवा परियोजनाओं के अलावा, लगभग 20 वैश्विक अनुदान कार्यक्रम किए जाएंगे। हमने टीआरएफ-योगदान के लिए 7 मिलियन डॉलर का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है, उन्होंने कहा।

किए गए कार्यों को याद करते हुए, रो ई मंडल 3191 के डीजी बी आर श्रीधर ने बताया कि उन्होंने सदस्यता में 24 प्रतिशत की वृद्धि हासिल की है, 689 नए रोटेरियन को शामिल किया है, जिससे सदस्यों की कुल संख्या 3,625 तक पहुंच गई है। हम 13 नए क्लब शुरू करेंगे, जिससे 30 जून तक कुल संख्या 110 हो जाएगी। 94 प्रतिशत मौजूदा सदस्यों और 97 प्रतिशत नए रोटेरियनों को क्लब में बनाए रखने की उपलब्धि हासिल की गई, जिसमें 22 प्रतिशत महिला रोटेरियन सदस्यता शामिल है, उन्होंने कहा।

अब तक, रो ई मंडल 3191 के क्लबों ने `21 करोड़ की सेवा परियोजनाएं, 1 मिलियन डॉलर की सीएसआर-वित्तपोषित पहलें की हैं, और 12 वैश्विक अनुदान कार्यक्रम कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं। हमने 300 ग्रामीण महिलाओं को एक स्थायी आजीविका प्रदान करने के लिए दुधारू गाएं प्रदान की हैं (वैश्विक अनुदान: `3 करोड़), श्रीधर ने कहा। वे अब तक 1 मिलियन डॉलर का टीआरएफ-योगदान कर चुके हैं।

डीजी एलिजाबेथ चेरियन के नेतृत्व में, रो ई मंडल 3192 ने 540 नए सदस्य जोड़े हैं जिससे यह आंकड़ा 3,790 तक पहुँच गया है, और जून के अंत तक 4,000 की सदस्यता को पार करने का लक्ष्य है। उन्होंने बताया, हम एक बहुत बड़ी विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं, जिसमें चार रोटरी ब्लड बैंक, दो कौशल विकास केंद्र, 15 डायलिसिस केंद्र, 200 से अधिक स्कूलों की सहायता, 10 से अधिक झीलों एवं तालाबों का पुनर्जीवन, और 10 से अधिक मोबाइल क्लीनिक का संचालन शामिल हैं।

चाय-पे-चर्चा, रोटरी क्विज़, ऑनलाइन कच्चड़ कक्षाएं और वेलनेस कार्यक्रमों जैसी उनकी सदस्य जुड़ाव की पहलों ने रोटेरियनों के बीच एक मजबूत बंधन बनाया है। पीडीजी एस नागेंद्र कार्यक्रम के अध्यक्ष थे; पीडीजी सतीश माधवन (3191) और श्रीनिवास मूर्ति (3192) लर्निंग फैसिलिटेटर थे।

ईएमजीए सैम मोव्वा (जोन-7) ने रो ई मंडल 3131 के डीजी संतोष मराठे और रो ई मंडल 3150 के डीजी राम प्रसाद को एंडोमेंट चैलेंज अवार्ड्स प्रदान किए; और जोन के सात रो ई मंडलों को एनुअल फंड 50:50 माइलस्टोन अवार्ड्स प्रदान किए। ■

*RIPE ओलायिंका बाबालोला को बेंगलुरु में RIDs **3191** और **3192** के संयुक्त PELS में जैकेट से सम्मानित किया गया। बाएं से: पीडीजी सतीश माधवन, डीजी एलिज़ाबेथ चेरियन, डीजीई रविशंकर दकोजू, पीडीजी एस नागेंद्र, रो ई निदेशक के पी नागेश, डीजीई अनिल गुमा, डीजी श्रीधर बी आर और पीडीजी श्रीनिवास मूर्ति।*

बाबालोला ने वीएचएस में रोटरी का काम देखा

किरण ज़ेहरा

वीएचएस के सीईओ सुरेश शेषाद्रि, RIPE ओलायिंका बाबालोला का स्वागत करते हुए। चित्र में डीजी विनोद सरावगी, रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम और पीआरआईडी पीटी प्रभाकर भी शामिल हैं।

चेन्नई के रोटरी सेंट्रल टीटीके वीएचएस (स्वैच्छिक स्वास्थ्य सेवाएं) ब्लड बैंक में एक शेड के नीचे, जहां एक फैले हुए बरगद के पेड़ का तना छत को चीरते हुए ऊपर निकल रहा है, एक गर्भवती महिला शांति से अपनी बारी का इंतजार कर रही है। बीच-बीच में वह अपनी पांच साल की बेटी को पुकारती है, जो प्रतीक्षा क्षेत्र के पास बने खेल के मैदान में फिसलपट्टी पर चढ़ने और फिसलने का आनंद लेने में मस्त है।

अड्यार के एक अस्पताल द्वारा रेफ़र किए जाने के बाद, वह अपनी दूसरी गर्भावस्था के दौरान आयरन की कमी को दूर करने के लिए खून चढ़वाने आई है। अपने पेट पर हल्के से हाथ रखते हुए वह कहती है, यहां की प्रक्रिया सीधी और मुफ्त है। आवेदन करना और रक्त प्राप्त करना आसान था। हमें कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ा। चूंकि किसी निजी अस्पताल में इलाज महंगा होता है, इसलिए हम यहां आए। उसकी बेटी अपनी परिस्थितियों के बोझ से बेखबर होकर खेलना जारी रखती है। यह देखभाल और सम्मान ही वह चीज है जिसे आरआईपीई ओलायिंका बाबालोला प्रत्यक्ष रूप से देखने आए थे।

पिछले कुछ वर्षों में, चेन्नई तिरुवन्मियूर और मद्रास ईस्ट सहित अन्य रोटरी क्लबों ने उपकरण दान किए हैं, ऑपरेशन थिएटरों को अपग्रेड किया है, और नैदानिक सेवाओं का समर्थन किया है, जिससे कम आय वाले समुदायों की सेवा करने की वीएचएस की क्षमता मजबूत हुई है।

अपनी यात्रा के दौरान, बाबालोला ने एक 20 वर्षीय युवक से मुलाकात की, जो बचपन में थैलेसीमिया से पीड़ित होने के बाद से नियमित रक्त आधान पर निर्भर है। लगभग दस वर्षों से, वह हर महीने दो बार ब्लड बैंक आता

है - उसका हर दौरा उसके जीवित रहने के लिए आवश्यक है।

इस बातचीत से भावुक होकर, बाबालोला ने कहा, ''जब आप उसके जैसे किसी व्यक्ति से मिलते हैं, तो आपको समझ में आता हैं कि यह काम क्यों मायने रखता है। यह केवल सेवा नहीं है, यह स्वयं जीवन है। रोटरी ने इस युवक को जीवन दिया है। रोटेरियनों द्वारा किया गया हर दान, हर प्रयास ही वह कारण है जिससे किसी को आगे बढ़ते रहने का मौका मिलता है।''

डॉ के एस रंगनाथन के नेतृत्व में 1962 में शुरू हुए इस ब्लड बैंक ने शुरुआत से ही स्वैच्छिक रक्तदान को बढ़ावा दिया है। यह बैंक लाइसेंसीकृत है, एचआईवी और हेपेटाइटिस सहित अन्य संक्रमणों के लिए रक्त की हर इकाई की जांच करता है, और प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मियों और तकनीशियनों के साथ चौबीसों घंटे काम करता है। यह पूरे शहर में रक्तदान शिविर भी चलाता है - एक ही वर्ष में आयोजित 167 शिविरों के माध्यम से लगभग 15,000 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। इसकी सेवाएं सुलभता को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई हैं। आय वर्ग की चिंता किए बिना, हीमोफीलिया और थैलेसीमिया के मरीजों को रक्त और उसके घटक मुफ्त दिए जाते हैं। जनरल वार्ड के मरीजों को रियायती दरों पर रक्त मिलता है।

ऊपर: ब्लड बैंक के प्ले एरिया में एक बच्ची।

***नीचे:** RIPE बाबालोला एक थैलेसीमिया मरीज़ से बातचीत करते हुए, PRID पी टी प्रभाकर और विनोद सरावगी भी चित्र में शामिल हैं।*

इस क्षमता का अधिकांश हिस्सा वीएचएस के साथ रोटरी के लंबे जुड़ाव के माध्यम से मजबूत हुआ है। 1990 के दशक में, वीएचएस, रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल और टीटीके के बीच एक त्रिपक्षीय साझेदारी ने ब्लड बैंक के आधुनिकीकरण में मदद की। रोटरी ने उपकरणों के लिए 300,000 डॉलर का अनुदान हासिल किया, अतिरिक्त धनराशि जुटाई, और वर्तमान 8,000 वर्ग फुट की सुविधा के निर्माण में योगदान दिया। वीएचएस ने जमीन प्रदान की और केंद्र का संचालन व कर्मचारियों की व्यवस्था करना जारी रखा, जबकि टीटीके ने उपकरणों और संचालन में सहायता की। पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, जो इस सुविधा को स्थापित करने में करीब से जुड़े थे, इसे ''साझा जिम्मेदारी पर बनी साझेदारी'' बताते हैं।

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, डीजी विनोद सरावगी और पीडीजी जे श्रीधर बाबालोला के साथ इस दौरे पर उपस्थित थे। ■

रोटरेक्टर्स को GG प्रोजेक्ट्स करनी चाहिए

वी मुत्तुकुमारन

लाइट्स ऑन रोटरेक्ट - आरआईपीई यिंका बाबालोला के साथ अनौपचारिक बातचीत' नामक कार्यक्रम में रोटरेकटर से सक्रिय रोटेरियन बनने की सुगम प्रक्रिया, रोटरेक्ट क्लबों के लिए वैश्विक अनुदान परियोजनाएँ और दुनिया भर में रोटरी पर रोटरेक्टर्स के 'मापनीय प्रभाव' जैसे मुद्दों पर प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम का संचालन पूर्व डीआरआर और रोटरी क्लब बैंगलोर वेस्ट के पूर्व अध्यक्ष कार्तिक किट्टू ने किया।

रोटरी क्लब के नए अध्यक्षों के लिए आयोजित दो दिवसीय संयुक्त पीईएलएस के दौरान रो ई मंडल 3191 और 3192 के लगभग 30 रोटरेक्टर्स को संबोधित करते हुए बाबलोला ने कहा, अब आपको GG प्रोजेक्ट्स पर काम करना चाहिए, लेकिन यह सुनिश्चित करें कि आप पात्रता मानदंडों और टीआरएफ दिशानिर्देशों का पालन करें। यदि रोटरेक्टर क्लब इन शर्तों को पूरा नहीं करते हैं, तो वे जीजी के लिए अर्हता प्राप्त करने हेतु अपने प्रायोजक या अन्य रोटरी क्लबों के साथ जुड़ सकते हैं। उन्होंने आगे कहा, यदि रोटरेक्टर्स एक अच्छा, टिकाऊ और प्रभावशाली प्रोजेक्ट लेकर आते हैं, तो डिस्ट्रिक्ट गवर्नर डीडीएफ (मंडल निधि) भी आवंटित कर सकते हैं।

जब RSAMDIO की महासचिव किरण एसएचएस ने पूछा, रोटरी के एक समान भागीदार के रूप में रोटरेक्ट को वैश्विक स्तर पर कैसे स्थापित किया जाए, तो आरआईपीई ने जवाब दिया, कई रोटरेक्टर्स पहले से ही क्षेत्रीय रो ई बोर्डों में हैं, और आने वाले वर्षों में उनकी संख्या बढ़ती रहेगी। (रो ई मंडल 3192 के डीडीआर जेनिस फिलिप ज़ोन-7 की सहायक रोटरी पब्लिक इमेज कोऑर्डिनेटर हैं)।

पहले रोटरेकटर से रोटरी अध्यक्ष बने पीडीआरआर किट्टू का स्वागत करते हुए उन्होंने तीन ऐसे मुद्दों उठाए, जिन पर रो ई नेतृत्व से स्पष्टता और उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है। पहला, रोटरेक्टर्स के पास व्यापक संसाधन, ऊर्जा और क्रियान्वयन कौशल हैं, लेकिन हमें रोटरी में संक्रमण के लिए एक सुव्यवस्थित मार्ग की आवश्यकता है। दूसरा, रोटरेक्ट टीआरएफ-दान के लिए तैयार है और रोटरी के साथ हर संभव तरीके से सहयोग करने के लिए तैयार है; और अंत में किट्टू ने कहा, हम भारत में रोटरी के विकास

बेंगलुरु में रोटरेक्टर्स के साथ एक इंटरैक्टिव सत्र में RIPE ओलायिंका बाबालोला। बाईं ओर से (बैठे हुए): RSAMDIO के पूर्व अध्यक्ष PDRR कार्तिक किट्टू, रो ई मंडल 3191 के DGE अनिल गुप्ता, रो ई निदेशक के पी नागेश और रो ई मंडल 3192 के DGE रविशंकर डाकोजू।

को बढ़ावा देने के लिए अपने रो ई निदेशकों के 1:2:3 फॉर्मूले को भी लागू करना चाहते हैं।

उनकी तीन मुख्य चिंताओं का जवाब देते हुए बाबालोला ने कहा, रोटेरियन रोटरेक्ट क्लबों से प्रेरित होते हैं। साथ ही, रोटेरियनों को रोटरी जगत में युवाओं के सुचारू प्रवेश के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि भावी रोटेरियनों का प्रशिक्षण बहुत कम उम्र से ही शुरू हो जाता है - पहले इंट्रक्टर बनकर, फिर RYLA में भाग लेकर, रोटरेक्ट क्लब में शामिल होकर, और फिर रोटरी यूथ एक्सचेंज आदि में आगे बढ़कर। उन्होंने उनसे आग्रह किया कि वे नवीनतम घटनाक्रमों से नियमित रूप से अवगत रहने के लिए माई रोटरी पोर्टल के लर्निंग सेंटर का उपयोग करें।

मानसिकता परिवर्तन

रो ई निदेशक के पी नागेश ने कहा, रोटरी के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हमें रोटेरियन और रोटरेक्टर्स, दोनों की मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अगले पांच वर्षों में एक मजबूत रोटरी जगत के निर्माण के लिए रोटरेक्टर्स को अपने प्रायोजक क्लबों और रोटेरियनों के साथ मिलकर काम करना होगा।

रो ई मंडल 3192 डीजीई रविशंकर डाकोजू ने कहा कि भारत में दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी है, क्योंकि इनमें से 70 प्रतिशत 35 वर्ष से कम आयु के हैं। हम रोटरेक्ट क्लबों के साथ साझेदारी करने और उनसे प्रेरणा लेने के लिए तैयार हैं। रो ई मंडल 3191 डीजीई अनिल गुप्ता ने रोटरेक्ट परियोजनाओं के लिए डीडीएफ फंड देने की तत्परता व्यक्त करते हुए कहा, यदि वे व्यवहार्य और टिकाऊ हों तथा मंडल के मानदंडों को पूरा करते हों। यदि कोई रोटरेक्ट परियोजना टीआरए ढांचे के अंतर्गत आती है, तो हम मिलकर एक GG के लिए आवेदन कर सकते हैं।

आरआईपीई बाबालोला ने भारत भर के रो ई मंडलों में युवा रोटरेक्टर्स को रोटरी नेताओं के रूप में प्रशिक्षित करने के लिए एक वेब-आधारित ऐप प्लेटफॉर्म, *युवा उड़ान* का शुभारंभ किया। डीआरआर कार्तिक चिकमत (3191), जेनिस फिलिप (3192), डीआरआरई अनिरुद्ध कुलकर्णी (3191), संजय आर (3192) और पीडीआर नवीन सेना (3190) आरआईपीई के साथ आयोजित चैट सत्र में उपस्थित थे।

प्रथम AKS रोटरेक्ट क्लब

रोटरी वर्ष 2026-27 के लिए भारत भर के सभी रोटरेक्ट क्लब टीआरएफ के लिए 125,000 डॉलर जुटाएंगे। *रोटरी न्यूज़* से बात करते हुए किट्टू ने कहा, डीजीई डाकोजू ने आश्वासन दिया है कि वे भी 125,000 डॉलर का योगदान देंगे, ताकि 2027 के रो ई सम्मेलन तक भारतीय रोटरेक्ट क्लब एकेएस के सदस्य बन सकें।

दरअसल, उन्होंने दुनिया भर के रोटरी क्लबों, जीएमएल और रोटरी पत्रिकाओं में प्रसार के लिए मरोटरेक्टर्स टीआरएफ में शुरुआती योगदानकर्ता कैसे बन सकते हैं - बाध्यता से नहीं, बल्कि विश्वास सेफ शीर्षक से एक मसौदा नोट तैयार किया है।

चित्र: वी मुत्तुकुमारन

गुंटूर के सरकारी अस्पताल में रोटरी ऑपरेशन थिएटर

टीम रोटरी न्यूज़

सरकारी अस्पताल के नवनिर्मित मदर एंड चाइल्ड ब्लॉक में रोटरी क्लब गुंटूर, रो ई मंडल 3150 द्वारा जीजी परियोजना (`75 लाख) के माध्यम से दो मॉड्यूलर ऑपरेशन थिएटर (ओटी) स्थापित किए गए।

रोटरी क्लब स्टॉकटन सनराइज, रो ई मंडल 5220, यूएस, इस परियोजना का वैश्विक भागीदार है। इन ऑपरेशन थिएटरों का उपयोग बाल शल्य चिकित्सकों द्वारा नवजात शिशुओं में जन्मजात विकारों के उपचार के लिए किया जाएगा, और इस सुविधा का नाम सर्गीरेड्डी रोटरी पीडियाट्रिक सर्जिकल कॉम्प्लेक्स रखा गया है।

मंडल सेवा परियोजना अध्यक्ष पीडीजी रवि वदलमणि, अस्पताल अधीक्षक डॉ एस एस वी रमना और बाल शल्य चिकित्सा विभागाध्यक्ष डॉ जयपाल की उपस्थिति में डीजी एस वी राम प्रसाद ने नई सुविधा का उद्घाटन किया।

गुंटूर में ऑपरेशन थिएटरों के उद्घाटन के अवसर पर RID 3150 के DG राम प्रसाद और डिस्ट्रिक्ट सर्विस प्रोजेक्ट के चेयरमैन PDG रवि वडलमानी (दाएं)।

बाबालोला ने रोटरी के लिए रखा महत्वाकांक्षी लक्ष्य

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई के नवनिर्वाचित अध्यक्ष ओलायिंका बाबालोला ने रो ई निदेशक के पी नागेश के साथ अपनी चंडीगढ़ यात्रा की शुरुआत ऊषा और पीआरआईपी राजेंद्र साबू के साथ उनके आवास पर एक ब्रंच बैठक के साथ की।

बाद में, उन्होंने चंडीगढ़ के पास मोहाली जिले में शिवालिक पर्वतमाला की तलहटी में स्थित ज़ीरकपुर में आयोजित 'प्रेसिडेंट्स एंड सेक्रेटरीज़ इलेक्ट लर्निंग सेमिनार' (PELS और SELS) में आगामी क्लब नेतृत्वकर्ताओं को संबोधित किया।

उन्होंने कहा, रोटरी के विकास के लिए, सभी रोटेरियनों को अपनी कहानियाँ बताने में सक्षम होना चाहिए - कि रोटरी ने उन्हें कैसे प्रभावित किया है या उनमें कैसे बदलाव लाया है, और साथ ही नेतृत्वकर्ताओं से रोटरी के महत्वाकांक्षी 'विज़न 2030' को आगे बढ़ाने में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने का आग्रह किया। 2030 में रोटरी की 125वीं वर्षगांठ के अवसर पर, दुनिया भर में 1.25 मिलियन रोटेरियनों और 125,000 रोटरेक्टरों तक पहुंचने का हमारा लक्ष्य है।

बाबालोला ने डीजीई रीता कालरा द्वारा घोषित आगामी रोटरी वर्ष के लिए मंडल की पहलों की सराहना की। इनमें चंडीगढ़ ट्राइसिटी में युवाओं के लिए AI कार्यात्मक साक्षरता, महिलाओं के लिए उद्यमिता के अवसर,

दाएं से: RIPE ओलायिंका बाबालोला, PRIP राजेंद्र साबू और रो ई निदेशक के पी नागेश रो ई मंडल 3080 के PELS पर।

जयपुर में रो ई मंडल 3056 के डीजी अरुण बगाड़िया (बीच में) और रो ई मंडल 3012 के PDG शरत जैन (बाएं) RIPE बाबालोला और रो ई निदेशक नागेश का स्वागत करते हुए।

हैप्पी स्कूलों का विस्तार, और टीबी उन्मूलन, सर्वाइकल कैंसर जागरूकता व गैर-संचारी रोगों की चलित जांच पर केंद्रित स्वास्थ्य कार्यक्रम शामिल हैं।

उनकी यात्रा के उपलक्ष्य में चंडीगढ़ डाक विभाग द्वारा एक विशेष डाक कवर जारी किया गया। पीडीजी अरुण मोंगिया के साथ डीजीई रीता द्वारा आयोजित इस सेमिनार में पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के 500 से अधिक क्लब नेतृत्वकर्ता एक साथ आए।

जयपुर में, बाबलोला और नागेश ने रो ई मंडल 3056 के PELS में भाग लिया और प्रतिष्ठित रामबाग पैलेस में आयोजित एक रात्रिभोज में शामिल हुए, जहाँ उनके साथ डीजी अरुण बगाड़िया, पीडीजी अजय काला और पीडीजी बलवंत चिराना, रो ई मंडल 3012 की डीजी अमिता मोहिंद्रू और पीडीजी शरत जैन भी मौजूद थे।

डीजी अरुण बगाड़िया द्वारा आयोजित शहर के भ्रमण के दौरान, नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रसिद्ध हवा महल और अन्य विरासत स्थलों सहित जयपुर के स्थापत्य वैभव से मंत्रमुग्ध हो गए।

रोटरी नेतृत्वकर्ताओं ने रो ई मंडल 3012 के डीजीई अमित गुप्ता द्वारा आयोजित PELS और SELS में भी भाग लिया।

पारंपरिक राजस्थानी लोक प्रस्तुतियों, भावपूर्ण संगीत और भव्य नौबत की लयबद्ध धुनों ने एक जीवंत और यादगार सांस्कृतिक शाम का निर्माण किया।

नवनिर्वाचित अध्यक्षों और सचिवों को संबोधित करते हुए, बाबलोला ने उद्देश्यपूर्ण सेवा, मजबूत नेतृत्व और स्थायी प्रभाव सुनिश्चित करने हेतु रोटरी की पहलों के माध्यम से टिकाऊ बदलाव लाने के महत्व पर जोर दिया। पीआरआईडी राजू सुब्रमण्यन भी सत्र को संबोधित किया। ■

रो ई मंडल 3012 के DG अमित गुप्ता और उनकी पत्नी स्वाति RIPE बाबालोला को एक स्मृति-चिह्न भेंट करते हुए, रो ई निदेशक नागेश भी चित्र में शामिल हैं।

सदस्यता शिखर सम्मेलन
विजन 2030
के लिए मार्ग निर्धारित करता है

जयश्री

रोई मंडल 3231, 3233 और 3234 का संयुक्त सदस्यता शिखर सम्मेलन, जो आरआईपीई यिंका बाबलोला की भारत यात्रा के दौरान चेन्नई में आयोजित किया गया था, आगामी मंडल और क्लब नेताओं के लिए रोटरी की सदस्यता को मजबूत करने की योजनाएँ बनाने का आह्वान था। रोटरी के महत्वाकांक्षी विजन 2030 के तहत संगठन की 125वीं वर्षगांठ तक 12.5 करोड़ रोटेरियन और 125,000 रोटरेक्टर्स का लक्ष्य रखा गया है। इस शिखर सम्मेलन में डीजीई से सदस्यता के विस्तार और उसे मजबूत करने के लिए तुरंत काम शुरू करने का आग्रह किया गया।

बाबालोला ने तात्कालिकता और स्पष्टता के साथ अपनी बात रखी। उन्होंने कहा, हम 1 जुलाई तक शुरू करने का इंतजार नहीं कर सकते। हमें अभी शुरू करना होगा, और नए नेताओं और मौजूदा गवर्नरों के बीच प्रारंभिक सहयोग के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने डीजीईज़ को याद दिलाया कि भले ही उनका कार्यकाल महत्वपूर्ण है, लेकिन विनम्रता और दीर्घकालिक संबंध उससे भी अधिक मायने रखते हैं। उन्होंने कहा, आप एक वर्ष के लिए गवर्नर होंगे, और जीवन भर के लिए पीडीजी। इसलिए कृपया एक वर्ष की दृढ़ता के कारण जीवनभर के अवसरों को न बिगाड़ें।

रोटरी के विज़न स्टेटमेंट और अपने अध्यक्षीय संदेश, 'स्थायी प्रभाव उत्पन्न करें,' से प्रेरणा लेते हुए, उन्होंने रोटेरियनों को अपने दृष्टिकोण में आंतरिक परिवर्तन लाने की चुनौती दी। उन्होंने कहा, सदस्यों के रूप में हम अपने पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम, शांति केंद्रों (जहाँ हम लोगों को शांति स्थापित करने के कौशल से लैस करते हैं) और विभिन्न वैश्विक अनुदान परियोजनाओं के माध्यम से विश्व भर में स्थायी परिवर्तन ला रहे हैं। अब मैं चाहता हूँ कि आप इस बात पर विचार करें कि रोटरी ने आपको एक रोटेरियन के रूप में कैसे बदला है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि व्यक्तिगत परिवर्तन की कहानियाँ सदस्यता में सार्थक वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हैं। रोटरी के विकास के लिए, प्रत्येक रोटेरियन को वह कहानी सुनाने में सक्षम होना चाहिए।

उन्होंने व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से रोटरी के अदृश्य मूल्य को समझाया। एक रोटेरियन का उदाहरण देते हुए, जिनकी बेटी की जान साथी सदस्यों द्वारा समय पर दी गई आर्थिक सहायता से बच गई थी, उन्होंने कहा, रोटरी सबसे अहम समय पर चुपचाप, बिना कुछ कहे मदद करने का तरीका जानती है। वीज़ा प्राप्त करने में मिली अप्रत्याशित सहायता के अपने अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि रोटरी सेवा के अलावा भी कई तरीकों से मदद करती है: मदद लेना भी ठीक है... रोटरी से जुड़ने से आपके लिए कई रास्ते खुल जाते हैं।

उन्होंने रोटरी के बारे में बात करते समय व्यक्तिगत भावनाओं से रहित कहानियों से बचने की सलाह दी। आंकड़ों से भरी शुरुआती बातों के बारे में उन्होंने कहा, ये बहुत उबाऊ होती हैं। क्योंकि हो सकता है ये आपके लिए मायने रखती हों, लेकिन आम आदमी को प्रभावित न करें। इसके बजाय, उन्होंने सदस्यों से भावनात्मक रूप से जुड़ने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, आप शुरुआत इस तरह कर सकते हैं कि रोटरी ने मुझे इस तरह बदला है, और फिर अपनी कहानी सुनाएं।

समावेशिता और क्लब संस्कृति पर ज़ोर देते हुए बाबालोला ने अपने उस अनुभव को साझा किया, जब अनुकूल वातावरण के अभाव में वे स्वयं रोटरी से लगभग अलग हो गए थे। उन्होंने नेताओं से रोटरेक्टर्स के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील रहने का आह्वान किया। आइए हम उनके कौशल का सम्मान करें। उनसे

बाएं से: डीजीई डी सुरेश जैन और टी एस रविकुमार, उनकी पत्नी कविता, उषा सरावगी, शालिनी दुव्वुरी, सुमति और रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, आरआईपीई ओलायिंका बाबालोला, पीआरआईडी ए एस वेंकटेश, उनकी पत्नी विनीता, और डीजीई श्रीराम दुव्वुरी।

RIPE बाबालोला ने PDG जे श्रीधर और उनकी पत्नी पुनिता को 'मेधावी सेवा' के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। दाईं ओर से: निदेशक मुरुगानन्दम, PRID वेंकटेश और डी जी विनोद सराओगी भी चित्र में उपस्थित हैं।

बुनियादी काम करने की अपेक्षा न करें और उन्हें ऐसे छोटे बच्चों की तरह न देखें, जो केवल मुफ्त भोजन का आनंद लेने आए हों।

सदस्यता लक्ष्यों पर उन्होंने इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को सरल शब्दों में समझाया। रो ई निदेशक एम. मुरुगनंदम द्वारा अगले चार वर्षों तक हर साल 10,000 सदस्य जोड़ने के आह्वान का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा, हम बस इतना चाहते हैं कि हर क्लब में सिर्फ दो नए सदस्य जुड़ें! यह बहुत आसान लक्ष्य है। जो क्लब एक भी नया सदस्य नहीं जोड़ता, उसका अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। हर नया सदस्य एक संपत्ति है, एक संसाधन है और एक नया फंड जुटाने वाला है। उन्होंने मंडल नेताओं से अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को और बेहतर करने का आग्रह किया और कहा, यह कहना बंद करो कि रोटरी का पतन हो रहा है। आपको अपने क्षेत्र में कोई गिरावट नहीं दिख रही है। हां, दुनिया के कुछ हिस्सों में गिरावट है; लेकिन हम इसे बदल देंगे।

आंकड़ों पर आधारित विस्तृत जानकारी और एक सुनियोजित रोडमैप के साथ, रो ई निदेशक मुरुगनंदम ने सदस्यता संख्या के आधार पर क्लबों के रेड-एम्बर-ग्रीन (आरएजी) वर्गीकरण को समझाया। उन्होंने कहा, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, रेड क्लबों को एम्बर श्रेणी में और एम्बर क्लबों को ग्रीन श्रेणी में आगे बढ़ाना होगा। उन्होंने बताया कि भारत में लगभग 43 प्रतिशत क्लब रेड श्रेणी (25 से कम सदस्य) में और 35 प्रतिशत ग्रीन श्रेणी (25-50 सदस्य) में आते हैं।

उन्होंने एक व्यापक सात-सूत्रीय एजेंडा प्रस्तुत किया, जो 1:2:3 फॉर्मूला पर आधारित था - जिसमें 100 नए रोटरी, 200 रोटरेक्ट और 300 इंटरेक्ट क्लबों के साथ-साथ 100 नए आरसीसी शामिल किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इससे अगले चार वर्षों तक प्रत्येक वर्ष 10,000 रोटेरियन और 10,000 रोटरेक्टर्स की शुद्ध वृद्धि होगी। उन्होंने महिला सदस्यता में 5 प्रतिशत की वृद्धि का भी आह्वान किया और अनुमान लगाया कि भारत वैश्विक रोटरी सदस्यता में 40 प्रतिशत का योगदान देगा।

एक बड़ी कमी की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उन्होंने बताया कि भारत के 4,963 रोटरी क्लबों में से लगभग 3,000 क्लबों ने एक भी रोटरेक्ट क्लब स्थापित नहीं किया है, और 3,800 क्लबों ने इंटरेक्ट क्लब शुरू नहीं किए है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा, इसका मतलब है कि हम युवाओं पर ध्यान नहीं दे रहे हैं, और इस स्थिति को सुधारने के लिए तत्काल कदम उठाने का आह्वान किया।

सकारात्मक रुख अपनाते हुए निदेशक ने वैश्विक स्तर पर भारत के मजबूत प्रदर्शन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, ज़ोन 5 सदस्यता प्रदर्शन में विश्व में शीर्ष स्थान पर है, और नए क्लबों तथा सदस्यों की संख्या में वृद्धि से संबंधित उपलब्धियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया।

पीआरआईडी ए एस वेंकटेश ने सदस्यों को बनाए रखने की चुनौती पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, रोटरी हर साल 150,000 रोटेरियन को शामिल करती है, लेकिन शुद्ध वृद्धि 4,000 भी नहीं है, उन्होंने उच्च सदस्य छोड़ने की दर की ओर इशारा करते हुए कहा। हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि जो लोग रोटरी में हैं, वे रोटरी में बने रहें।

पीआरआईडी पी टी प्रभाकर और महेश कोटबागी ने डीजीई टी एस रविकुमार (3231), श्रीराम दुव्वुरी (3233) और डी सुरेश जैन (3234) को अपना समर्थन दिया, जबकि उन्होंने विजन 2030 के साथ संरेखित अपनी कार्य योजनाओं को साझा किया।

रो ई मंडल 3233 के रोटरी क्लबों ने आरआईपीई की यात्रा के उपलक्ष्य में टीआरएफ को 100,000 डॉलर का योगदान दिया। बाबालोला ने पीडीजी जे श्रीधर को उनकी सराहनीय सेवा के लिए प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया। ■

बाबालोला की भारत यात्रा

रो ई मंडल 3056 के डीजी अरुण बगड़िया ने जयपुर में RIPE बाबालोला और रो ई निदेशक नागेश का स्वागत किया।

ऊपर: RIPE ओलायिंका बाबालोला और रो ई निदेशक के पी नागेश, PRIP राजेंद्र सबू और उषा के साथ, चंडीगढ़ स्थित उनके आवास पर।

नीचे: मदुरै में रोटरी के सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण शिविर में RIPE बाबालोला और रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम। दाईं ओर सुमति दिखाई दे रही हैं। रो ई मंडल 3000 के डीजी जे कार्तिक (दाईं ओर से तीसरे) और DGE सुब्रमणि रामानुजम (बाईं ओर से तीसरे) भी उपस्थित हैं।

RIPE बाबालोला और RID नागेश, रो ई मंडल 3080 की DGE रीता कालरा और PDG जितेंद्र ढींगरा और अरुण मोंगिया के साथ।

***नीचे:** बाईं ओर से: PRID महेश कोटबागी, RIPE बाबालोला, रोटरी न्यूज़ के प्रकाशक PRID पी टी प्रभाकर, PDG जे श्रीधर और RID मुरुगानंदम - चेन्नई स्थित RNT कार्यालय में।*

मदुरै में RIPE बाबालोला का भव्य स्वागत किया गया।

RIPE बाबालोला, PRID ए एस वेंकटेश के साथ।

जयपुर में पीडीजी बलवंत सिंह चिराना, उनकी पत्नी धीरज कंवर, डीजी बगाड़िया, RID नागेश, RIPE बाबालोला, पीडीजी जैन और रुचि, पूनम और पीडीजी अजय काला।

***नीचे:** जयपुर में छात्रों को स्कूल की ज़रूरी चीज़ें बांटने के बाद उनसे बातचीत करते RIPE बाबालोला।*

***ऊपर:** मदुरै में आयोजित सदस्यता शिखर सम्मेलन में RID मुरुगानंदम और PRID सी भास्कर, RIPE बाबालोला को एक स्मृति-चिह्न भेंट करते हुए। सुमति मुरुगानंदम (बाएँ) और PDG सी शिवज्ञानसेल्वम भी चित्र में शामिल हैं।*

चेन्नई में PDRR शशिकुमार, RIPE बाबालोला और RID मुरुगानंदम के साथ सेल्फ़ी लेते हुए।

***ऊपरः** RIPE बाबालोला, RID नागेश और PDG शरत जैन (3012) के साथ। बाईं ओर पूनम बगाड़िया भी चित्र में शामिल हैं।*

***बाएँः** दिल्ली में RIPE बाबालोला ने ड्रम पर हाथ आज़माया, रो ई मंडल 3012 के डी जी जी अमित गुप्ता, RID नागेश और स्वाति गुप्ता भी चित्र में शामिल हैं।*

RIPE बाबालोला की भारत यात्रा से जुड़ी और कहानियाँ अगले अंक में।

चेपॉक की गूंज एक कमरे के भीतर

किरण ज़ेहरा

जब आरआईपीई ओलायिंका बाबालोला चेन्नई के एमजीआर जानकीअम्माल कॉलेज के ऑडिटोरियम में दाखिल हुए, तो रो ई मंडल 3234 के रोटरेक्टर अपनी जगह पर खड़े हुए, और तालियां बजाकर और सीटी बजाकर उनका स्वागत किया। आईपीडीआरआर शशि कुमार ने कहा, ऑडिटोरियम में बाबलोला का आना चेपॉक स्टेडियम में धोनी के आने से कम नहीं है, और यह बात कोई अतिशयोक्ति नहीं लग रही थी। उन्होंने आगे कहा, वह (बाबालोला) किसी दूर के वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में यहाँ नहीं आए हैं। वह हम में से ही एक हैं।

बाबलोला ने कहा, यहां आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है, और मैं उपाध्यक्ष (निर्वाचित) MMM (एम मुरुगानंदम) को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने आप सभी को मुझसे, यानी एक साथी रोटरेक्टर से मिलने का यह अवसर प्रदान किया। मेरे देश में एक कहावत है: यदि आपका शिक्षक सही है, तो आप कभी गलत रास्ते पर नहीं जा सकते। आपके पास एमएमएम हैं, जो खुद एक रोटरेक्टर रह चुके हैं और ऐसे मार्गदर्शक के साथ, आप सही रास्ते पर रहेंगे।

मंडल में रोटरेक्ट द्वारा किए जा रहे काम की सराहना करते हुए, उन्होंने कहा, मैंने परियोजनाओं के वीडियो देखे हैं, और रोटरी संस्थान में आपका योगदान उल्लेखनीय है। बाद में *रोटरी न्यूज़* से बात करते हुए, डीआरआर सतीश कुमार ने बताया कि मंडल 17 अप्रैल तक टीआरएफ के लिए 86,389 डॉलर जुटा चुका हैं।

आगे की दिशा पर ध्यान केंद्रित करते हुए, आरआईपीई ने पूछा, भारत में रोटरी बढ़ रही है। रोटरेक्ट बढ़ रहा है। लेकिन क्या यह पर्याप्त रूप से बढ़ रहा है? उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत में वर्तमान में लगभग 49,000 रोटरेक्टर हैं और यह वैश्विक रोटरेक्ट संख्या का लगभग 30 प्रतिशत है, यह एक ऐसी उपलब्धि है जिसका कई लोग जश्न मनाएंगे। लेकिन मैं इससे प्रभावित नहीं हूं। भारत की 1.4 अरब की आबादी का हवाला देते हुए, उन्होंने कहा, 18-30 आयु वर्ग के भारतीयों के एक छोटे से हिस्से को भी देखा जाए तो कम से कम 2 लाख रोटरेक्टर होने चाहिए।

एक रोटरेक्टर के सवाल का उत्तर देते हुए, क्या रोटरी वाकई अपने युवाओं की बात सुन रही है? रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम ने कहा: आज का परिदृश्य वैसा नहीं है जैसा 20 साल पहले था। आज, रोटरेक्टर केवल प्रतिभागी नहीं हैं, उन्हें नेतृत्व में शामिल किया जा रहा है। व्यवस्था स्वयं ही विकसित हो रही है। रोटरी के इतिहास में पहली बार एक रोटरेक्टर को 'असिस्टेंट रोटरी पब्लिक इमेज कोऑर्डिनेटर' (रो ई मंडल 3192 डीआरआर जेनिस फिलिप) के रूप में नियुक्त किया जाना केवल प्रतीकात्मक नहीं है, बल्कि यह एक संरचनात्मक बदलाव है। हम युवाओं की शक्ति को जानते हैं... हम वास्तव में अधिक रोटरेक्टरों को रोटरी की दुनिया में सम्मिलित, प्रेरित और आमंत्रित करना चाहेंगे।

बाबालोला ने आगे कहा, रोटरी अब सुनने लगा है। *एलिवेट रोटरेक्ट* के बाद से, रोटरेक्टरों को सभी स्तरों और सभी भौगोलिक क्षेत्रों में रोटरी के निर्णय लेने वाले स्थानों में लाने का एक सोचा-समझा प्रयास किया गया है। भविष्य के नेतृत्वकर्ताओं के रूप में नहीं, बल्कि वर्तमान नेतृत्वकर्ताओं के रूप में।

रोटरी न्यूज़ की संपादक के साथ अपने दिलचस्प साक्षात्कार की एक झलक देते हुए, उन्होंने कहा, मैंने आपके संपादक से कहा है कि मैं रोटरेक्ट की और कहानियां सुनना चाहता हूं। क्योंकि अंत में, सुनना नीतियों या पदों के बारे में नहीं होता। यह इस बारे में होता है कि किसकी कहानियां बताई जाती हैं और उन्हें बताने का मौका किसे मिलता है।

इस कार्यक्रम में डीजी विनोद सरावगी, पीडीजी जे श्रीधर, डीआरआर सतीश कुमार और डीआरआरई विग्नेश चंद्रन उपस्थित थे। ■

***बाएं से:** रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, आरआईपीई ओलायिंका बाबालोला, पीडीजी जे श्रीधर, डीजी विनोद सरावगी, डीआरआर सतीश कुमार, डीआरआरई विग्नेश चंद्रन और पीडीआरआर ससी कुमार।*

रो ई निदेशक मुरुगानंदम पॉल एंड जीन हैरिस लिगेसी सोसाइटी के अभियान अध्यक्ष बने

बाएं से: रो ई निदेशक के पी नागेश, RIPE ओलायिंका बाबालोला, रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो, रो ई निदेशक वाइन स्पिलर और जेनिफर ए स्कॉट, रो ई कोषाध्यक्ष पैट्रिक ईक्स और रो ई निदेशक हैरियेट वर्वे और PDG इर्व कपलान (बैठे हुए), रोटरी ग्लोबल हिस्ट्री फेलोशिप के अध्यक्ष।

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम को 2026-27 के लिए पॉल एंड जीन हैरिस लिगेसी सोसाइटी के अभियान अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया है। लिगेसी सोसाइटी 23 लोगों तक सीमित एक विशेष समूह है, जो शिकागो में रोटरी के संस्थापक पॉल हैरिस और उनकी पत्नी जीन के घर के नवीनीकरण के लिए 250,000 डॉलर का योगदान देंगे।

इससे पहले अक्टूबर में, रो ई और पॉल एंड जीन हैरिस होम फाउंडेशन द्वारा इवेन्स्टन में आयोजित एक विशेष रात्रिभोज में, मुरुगानंदम को इतनी राशि का योगदान करने वाले सोसाइटी के पहले सदस्य के रूप में सम्मानित किया गया था। इस बैठक में रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो, नवनिर्वाचित अध्यक्ष ओलायिंका बाबालोला, रो ई महासचिव जॉन हेव्को और कई रो ई बोर्ड के सदस्य शामिल हुए थे। ■

2027 रो ई सम्मेलन की मेजबानी करेगा बार्सिलोना

खाड़ी क्षेत्र में मौजूदा सुरक्षा स्थिति और अंतरराष्ट्रीय यात्रा को लेकर अनिश्चितताओं को देखते हुए, रो ई बोर्ड ने 2027 रो ई सम्मेलन का आयोजन स्थल दुबई से बदलकर बार्सिलोना, स्पेन करने का निर्णय लिया है। यह सम्मेलन 26-30 जून, 2027 को फ़िरा डी बार्सिलोना में आयोजित किया जाएगा। बार्सिलोना, जिसे पहले 2029 सम्मेलन की मेजबानी के लिए चुना गया था, इससे पहले 2002 में भी इस आयोजन की मेजबानी कर चुका है।

बार्सिलोना में होने वाले 2027 रोटरी सम्मेलन के लिए पंजीकरण सितंबर 2026 में शुरू होगा, जो जून 2026 में ताइपे में आयोजित होने वाले सम्मेलन के कुछ महीनों बाद होगा।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया देखें: https://my.rotary.org/en/barcelona-spain-selected-host-2027-rotary-convention.

rotary.org

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी न्यूज़ के एक लेख के व्यापक लाभ

रशीदा भगत

आपके इनबॉक्स में एक ऐसा ईमेल पाने से अधिक संतोषजनक और क्या हो सकता है जिसमें यह लिखा हो कि *रोटरी न्यूज़* में प्रकाशित आपके लेख के परिणामस्वरूप कर्नाटक के एक गाँव में एक जर्जर स्कूल के भवन का न केवल नवीनीकरण हुआ - जिसमें संरचनात्मक मरम्मत, वॉटरप्रूफिंग, नई पेंटिंग शामिल है - बल्कि बच्चों को बिल्कुल नया फर्नीचर, स्कूल बैग और यूनिफॉर्म भी मिले?

पिछले पखवाड़े मुझे ऐसा ही एक मेल मिला, जो रोटरी क्लब बेंगलुरु कोरमंगला की पूर्व अध्यक्ष जेनेट येशेस्वरन का था। उन्होंने अक्टूबर 2024 में प्रकाशित लेख *एक रोटेरियन का पर्यावरण प्रेम (https://rotarynewsonline.org/this-rotarian-is-on-a-greening-spree/)* के लिए धन्यवाद देते हुए यह सब बताया। हमारे ग्रह को हरित बनाने की एक अग्रणी समर्थक, जेनेट कर्नाटक (मुख्यतः बेंगलुरु) और तमिलनाडु में लगभग 1,00,000 पेड़ लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुकी हैं। इन पेड़ों ने प्राकृतिक आपदाओं के पीड़ितों को राहत दी है, बंजर भूमि पर 'फूड फॉरेस्ट' का निर्माण किया है, और उनके कार्य के कारण बॉश इंडिया फाउंडेशन के साथ एक साझेदारी हुई, जिसने उन्हें कर्नाटक के अनेकल क्षेत्र में उनके सहयोग से संचालित एक सामुदायिक विकास केंद्र की जिम्मेदारी सौंपी, जो लगभग 30 गाँवों में काम करता है। यह केंद्र मुख्यतः बच्चों की शिक्षा और महिलाओं के सशक्तिकरण जैसे क्षेत्रों में कार्य करता है।

जेनेट येशेस्वरन (बाएँ से तीसरी), रोटरी क्लब बैंगलोर कोरमंगला की पूर्व अध्यक्ष, और इनर व्हील की सदस्य बच्चों को स्कूल बैग देने के बाद उनके साथ।

बेंगलुरु से लगभग 30 किमी दूर स्थित अनेकल के अपने दौरों के दौरान, उन्हें लगभग 100 बच्चों वाला एक प्राथमिक विद्यालय मिला, जो जर्जर स्थिति में था और जिसे नवीनीकरण, स्कूल फर्नीचर आदि की आवश्यकता थी। छत से पानी टपक रहा था और शौचालयों की स्थिति बेहद खराब थी। उनकी हरित पहल के बारे में बताते हुए, *रोटरी न्यूज़* के लेख ने उस क्षेत्र के ग्रामीणों की जीवन स्थितियों को सुधारने के उनके प्रयासों का भी उल्लेख किया और उस स्कूल की एक तस्वीर प्रकाशित की, जिसे मरम्मत और नवीनीकरण की आवश्यकता थी।

हाल ही में जब जेनेट अनेकल के चिन्नायनपाल्या गाँव के उस स्कूल में गईं, तो उन्होंने देखा कि भवन की मरम्मत हो चुकी

महिलाएँ तार के थैलों का प्रदर्शन करती हुई।

है और उसे नए सिरे से रंगा गया है। इस स्कूल में दो समर्पित शिक्षक हैं - भास्कर और रश्मि। दोनों स्नातकोत्तर हैं और यहाँ सुविधाओं में सुधार तथा नए शैक्षिक उपकरणों को लाने में गंभीर रुचि रखते हैं। उन्होंने मुझे बताया कि पुणे का कोई रोटरी क्लब, उस लेख और तस्वीर को देखने के बाद, स्कूल का जीर्णोद्धार करने के लिए आगे आया। मेरी आशा थी कि जब हम इस लेख को पत्रिका में प्रकाशित करेंगे, तो यह अन्य रोटरी क्लबों और कॉरपोरेट्स को भी इन गाँवों के स्कूलों में महत्वपूर्ण शैक्षणिक सुविधाओं के नवीनीकरण के लिए प्रेरित करेगा - और वह पूरी हुई, उन्होंने लिखा।

वह याद करती हैं कि 2004 में जब उन्होंने और बॉश इंडिया से मर्लिन ने बॉश इंडिया फाउंडेशन द्वारा नवीनीकरण की संभावना का आंकलन करने के लिए अनेकल में होंकलासपुरा सरकारी प्राथमिक विद्यालय का दौरा किया था, तो हमने पाया था कि भवन अंधकारमय और सीलन भरा था। पानी टपक रहा था और बारिश का मौसम होने के कारण कक्षा के कोनों में जमा हो गया था। बच्चों के पास बेंच और टेबल नहीं थे। मास्टर भास्कर और शिक्षिका रश्मि, दोनों बहुत समर्पित शिक्षक है जो वर्षों से यहाँ काम कर रहे हैं, और भास्कर तो अपने स्कूटर पर कुछ बच्चों के घर जाकर उन्हें स्कूल भी लाते हैं।

खैर, एक अच्छा काम दूसरे अच्छे काम को जन्म देता है; ऐसे समर्पित शिक्षकों वाले इस विशेष स्कूल को कई स्वागत योग्य उपहार

मिले हैं। अपने एक दौरे के दौरान मास्टर भास्कर ने कहा: 'हमें एक स्मार्ट क्लास दीजिए - मैं इन बच्चों को दुनिया दिखाना चाहता हूँ।' उनके शब्दों ने मुझे प्रभावित किया; वह अपने आराम के लिए नहीं, बल्कि बच्चों के लिए कुछ मांग रहे थे। मैंने इस विषय को रो ई मंडल 3191 के गवर्नर बी आर श्रीधर के सामने रखा, उन्हें स्कूल और बच्चों की तस्वीरें भेजीं। उन्होंने तुरंत इस अनुरोध को स्वीकार किया और 5 मार्च को इस स्कूल में स्मार्ट क्लास शुरू की गई, जेनेट मुस्कुराते हुए कहती हैं।

इसके बाद और भी कई चीजें आने लगे। स्कूल के अपने अगले दौरे पर, वह रोटरी क्लब कोरमंगला की ओर से बच्चों के लिए ग्लास और प्लेट लेकर गईं। एक कहावत है, जब बारिश होती है, तो जमकर होती है। कोरमंगला के इनर व्हील क्लब (जहाँ वह भी सदस्य हैं) के सदस्य स्कूल बैग लेकर आए। बच्चों को नम जमीन पर बैठा देखकर वे भावुक हो गए, इसलिए अपने अगले दौरे पर, वे छह नाली-कली टेबल, 36 कुर्सियाँ और परदे लेकर आए। और अप्रैल में, वे बच्चों के लिए यूनिफॉर्म लेकर फिर आ रहे है!

ऊपर: होन्नाकलसापुरा में नवीनीकृत प्राथमिक विद्यालय में रोटरी सदस्यों के साथ जेनेट। पुरानी इमारत सामने वाले पृष्ठ पर दिखाई दे रही है।

बाईं ओर से दक्षिणावर्त: गाँव की महिलाओं को बुनियादी साक्षरता सिखाते हुए; प्राथमिक विद्यालय को दान में दी गई रंग-बिरंगी 'नाली-काली' मेज़ें और कुर्सियाँ; अनेकल के पास होन्नाकलसापुरा में स्कूली बच्चों को दिए गए स्टेनलेस स्टील के थाल और गिलास।

नाली-कली टेबल कर्नाटक के सरकारी स्कूलों में उपयोग होने वाला विशेष, गोल या मॉड्यूलर फर्नीचर है, जिसे विशेष रूप से नाली-कली (आनंदमय शिक्षण) गतिविधि-आधारित शिक्षण प्रणाली का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। वे छोटे समूह में सीखने को सुगम बनाते हैं, पारंपरिक व्याख्यान-शैली बैठने की व्यवस्था के बजाय सहयोग, स्व-गति से सीखने और सामाजिक कौशल को प्रोत्साहित करते हैं।

इतना ही नहीं! औद्योगिक सेंसरिंग तकनीक में कार्यरत एक अन्य कॉरपोरेट पेपरल+फुच्स ने भी आगे आकर अपनी सीएसआर पहल के तहत स्कूल में वॉटरप्रूफिंग करवाई और भवन को पेंट करवाया। अब एक परोपकारी, एरिक दिलीपकुमार, जो विदेश में रहते हैं और भारत लौट रहे हैं, इस स्कूल को एक गोदरेज काँच की बुकशेल्फ, टेबल और शिक्षकों के लिए घूमने वाली कुर्सियाँ दान करना चाहते हैं, जिनकी कुल लागत लगभग `70,000 है। मास्टर भास्कर कहते हैं कि अब जब स्कूल का पूरी तरह कायाकल्प हो गया है, तो ग्रामीण अपने बच्चों के प्रवेश के लिए बड़ी संख्या में आवेदन दे रहे हैं, जेनेट गर्व से कहती हैं।

अब स्थिति यह है कि जहाँ पहले शिक्षक अभिभावकों को अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए मनाते थे, वहीं इस सुसज्जित स्कूल में ठीक इसका उल्टा हो रहा है!

इन 30 गाँवों के समूह में जेनेट द्वारा की जा रही दूसरी पहलों में एक अन्य स्कूल में बच्चों के लिए संगीत सत्र शुरू करना शामिल है, जिसके लिए बेंगलुरु से संगीतकारों को विशेष सत्र के लिए लाया जा रहा है। ग्रामीणों को कंबल भी वितरित किए गए हैं, और बॉश इंडिया के एक प्रतिनिधि ग्रामीणों को राशन किट देने की भी योजना बना रहे है।

एक पहलू जो उन्हें चिंतित करता है, वह है महिलाओं की स्थिति, और यह चिंताजनक तथ्य कि संपन्न परिवारों की शिक्षित महिलाओं को भी उनके पुरुष घर के बाहर काम करने की अनुमति नहीं देते, जिससे उन्हें बहुत निराशा होती है। अनेकल की महिलाएँ बहुत रूढ़िवादी पृष्ठभूमि से आती हैं। उनकी शादी हाई स्कूल में ही हो जाती है और उनमें से अधिकांश गृहिणियां हैं। वे उस प्रशिक्षण से बहुत खुश हैं जो हम उन्हें घर पर काम करने के लिए देते हैं - बैग बनाना, अरी का काम करना, क्रोशिया बुनना, आदि और अपने उत्पादों का स्थानीय स्तर पर अपने ही दायरे में विपणन करना। उनमें से कुछ ब्यूटी पार्लर शुरू करना चाहती हैं और सहयोग की तलाश में हैं, उन्होंने आगे कहा।

ऐसी महिलाओं को सार्थक कार्य करने के लिए विशेष कौशल देना, जिससे उनके जीवन को उद्देश्य मिले और उन्हें सम्मानजनक आय भी प्राप्त हो, तथा वयस्क साक्षरता के क्षेत्र में काम करना, इस समय जेनेट की प्राथमिकताओं में सबसे ऊपर हैं। ■

आशा
सुरों की मलिका

एस आर मधु

अपने नाम *आशा* को सार्थक करते हुए, सात दशकों तक, आशा भोंसले की जिंदादिली ने लाखों संगीत प्रेमियों को उम्मीद भरे गीतों से ऊर्जावान बनाया और उनका मनोरंजन किया। लेकिन 12 अप्रैल 2026 को 92 वर्ष की आयु में उनकी आवाज़ शांत हो गई।

आइए, उन हजारों गीतों में से कुछ का नाम लेकर उम्मीद, ऊर्जा, कामुकता व अदा की उस आवाज़ को याद करें जिसने भारत को मंत्रमुग्ध किया। (एक हालिया अनुमान के अनुसार 20 भाषाओं में उन्होंने लगभग 20,000 गीत गाए।)

दम मारो दम (*हरे रामा हरे कृष्णा,* 1971) अब तक के सबसे प्रभावशाली गीतों में से एक है! किशोर कुमार ने कहा था कि यह इतना शक्तिशाली है कि किसी मृत व्यक्ति को भी जीवित कर सकता है!

आइए मेहरबां (*हावड़ा ब्रिज,* 1958), वह नाइटक्लब गीत जिसने दुनिया को अपना दीवाना बना लिया! आशा की आवाज़ ने मधुबाला की शरारत और चंचलता को बखूबी पकड़ा, जिसकी तुलना मैरिलिन मुनरो से की जाने लगी।

अभी ना जाओ छोड़कर (*हम दोनों,* 1961, आशा-रफ़ी, जयदेव)। देव आनंद ने कहा था कि यह गीत तब तक गाया जाएगा जब तक रोमांस जीवित है।

जाइए आप कहाँ जाएंगे (*मेरे सनम,* 1965, ओ पी नैय्यर)। जोश से भरा, सदाबहार, मनमोहक। उनकी दीदी लता मंगेशकर का पसंदीदा गीत। लता अक्सर इस गीत को गुनगुनाती थीं और आशा के गायन की तारीफ करती थीं।

आजा आजा, मैं हूँ प्यार तेरा (आशा-रफ़ी, *तीसरी मंज़िल,* 1966, आर डी बर्मन)। एक रोमांचक और एक्शन से भरपूर गीत, जब आशा ने इसे हेलन के लिए गाया, तो इसने संगीत जगत में तहलका मचा दिया। यह बॉलीवुड के रॉक एंड रोल

आशा भोसले

इतिहास का एक निर्णायक मोड़ था। इसकी तूफ़ानी गति ने दर्शकों और श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया।

चुरा लिया है तुमने जो दिल को (यादों की बारात, 1971, आर डी बर्मन)। जीनत अमान की अदाएं और आशा भोसले की आवाज़ ने इस प्रेम गीतों की राजकुमारी को अमर बना दिया।

बहुमुखी प्रतिभा आशा के रहस्यमय आकर्षण का मंत्र थी। उनकी प्रतिभा संगीत की हर विधा में छलकती थी - पॉप और जैज़, ग़ज़लें, भजन, कव्वालियां, लोकगीत, शास्त्रीय संगीत, रबींद्र संगीत। और उन्होंने हर मूड को सुरीली अभिव्यक्ति दी। वह कैबरे क्वीन हेलन के *पिया तू अब तो आजा* (*कारवां,* 1971) के थिरकते कदमों, मीना कुमारी के *तोरा मन दर्पन कहलाए* (*काजल,* 1964) की भक्तिमय शांति, *अब के बरस भेज भैया को बाबुल* (*बंदिनी,* 1963) में एक कैदी के विलाप की हृदय विदारक उदासी और *ओ मेरे सोना रे सोना रे सोना रे* (*तीसरी मंज़िल,* 1966) में आशा पारेख के रोमांटिक अंदाज़ के पीछे की आवाज़ थीं। गुलज़ार ने एक बार टिप्पणी की थी, ''आशा की आवाज़ गिरगिट की तरह अपना रंग बदल सकती है।''

अपनी बहन लता मंगेशकर के साथ।

बहुमुखी प्रतिभा ही आशा की लोकप्रियता का मूलमंत्र थी। उनकी प्रतिभा संगीत की हर विधा में खुलकर सामने आई–पॉप और जैज़, ग़ज़लें, भजन, क़व्वालियाँ, लोकगीत, शास्त्रीय संगीत और रवींद्र संगीत।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि आशा ने ढेरों सम्मान जीते। सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका के लिए दो राष्ट्रीय पुरस्कार और सात फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार; 1995 की फिल्म *रंगीला* में उनके गीतों के लिए एक विशेष फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार, और 2001 में फ़िल्मफ़ेयर लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार। विशेष सम्मानों में 2000 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार, 2002 में बीबीसी लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार (तत्कालीन यूके के प्रधान मंत्री टोनी ब्लेयर द्वारा प्रस्तुत), और 2008 में पद्म विभूषण शामिल हैं। कुल मिलाकर, उन्होंने सैकड़ों पुरस्कार अपने नाम किए।

संगीतशास्त्री पंडित अशोक रानाडे ने आशा की आवाज़ का वर्णन करते हुए कहा, यह बिना किसी कंपन के जीवंत है; यह तेज है लेकिन फिसलती नहीं; यह समान सहजता और अभिव्यक्ति के साथ ऊंचे और नीचे सुरों को छूती है; यह तान से भरपूर है, फिर भी इसमें स्त्रियोचित गरिमा की कमी नहीं है।

आशा का जन्म 1933 में महाराष्ट्र के सांगली में हुआ था, जो सुनारों और शक्कर कारखानों का शहर है। उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर एक घूमने वाली नाट्य कंपनी चलाते थे जो महाराष्ट्र के छोटे शहरों में प्रदर्शन करती थी। उन्होंने एक बार कहा था, ''मेरी पूरी शिक्षा कलाकारों एवं गायकों को देखते हुए हुई।''

1942 में जब उनके पिता की मृत्यु हुई, तब आशा नौ साल की थीं। लता पार्श्व संगीत के माध्यम से परिवार की प्रमुख आय कमाने वाली बन गईं, और आशा ने भी मदद की। 1949 में, जब आशा 16 वर्ष की थीं, तो उन्होंने अपने जीवन की सबसे बड़ी गलती की, और एक अपमानजनक और शोषक विवाह के बंधन में बंध गईं। दो बच्चों के बाद और तीसरे बच्चे की गर्भावस्था के दौरान, वह 1960 में इस रिश्ते से आज़ाद हुई।

1950 के दशक की शुरुआत आशा के लिए एक बुरे सपने की तरह थी, क्योंकि

आशा ने बहुत सारा पश्चिमी संगीत सुना और उसे आत्मसात किया; उन्होंने बीटल्स, माइकल जैक्सन, फ्रैंक सिनात्रा और अपनी पसंदीदा बारबरा स्ट्रीसैंड के साथ गहरा जुड़ाव महसूस किया।

बेरोज़गार होते हुए भी वही अपने परिवार का भरण-पोषण कर रही थीं। उन्होंने संगीत के काम के लिए संघर्ष किया, और अपने हिस्से में आने वाले किसी भी छोटे-मोटे संगीत के काम को स्वीकार करते हुए जी तोड़ मेहनत की - जैसे कि हेलन और बिंदु के लिए कैबरे और नाइटक्लब गीत। दूसरी ओर, लता 1949 की *महल* और *बरसात* के बाद एक सनसनी बन गई थीं और उन्होंने बॉलीवुड में भगवान जैसा दर्जा हासिल कर लिया था। इससे आशा को कोई फायदा नहीं हुआ, जो अपनी बहन से मदद मांगने के लिए बहुत स्वाभिमानी थीं। उन्होंने अपनी खुद की गायन शैली विकसित करने की कोशिश की, जो लता की शैली से अलग और विशिष्ट थी। उन्होंने बहुत सारा पश्चिमी संगीत सुना और आत्मसात किया, और बीटल्स, माइकल जैक्सन, फ्रैंक सिनात्रा और अपनी पसंदीदा बारबरा स्ट्रीसंड के संगीत से प्रेरणा ली।

1957 उनके लिए एक निर्णायक वर्ष साबित हुआ; उन्हें एस डी बर्मन के साथ देव आनंद की दो फिल्मों (*नौ दो ग्यारह* और *पेइंग गेस्ट)* में गाने का मौका मिला। सबसे महत्वपूर्ण, उन्होंने ओ पी नैयर के साथ 1957 की ब्लॉकबस्टर *नया दौर* में गाया, जिसमें दिलीप कुमार और

वैजयंतीमाला जैसे बड़े सितारे थे। आशा-रफी का युगल *मांग के साथ तुम्हारा* जैसे गीत देशभर में लोकप्रिय हुए।

आशा-नैयर की साझेदारी बढ़ी और खूब फली-फूली। संगीत समीक्षक राजू भरतन, जिन्होंने आशा की जीवनी लिखी, के अनुसार नैयर ने कहा था कि कई वर्षों तक आशा लता मनोग्रन्थि से ग्रस्त रहीं और उन्होंने उसे दूर करने में उनकी मदद की। एक बार उन्होंने आशा से बड़े गुलाम अली ख़ान की एक ठुमरी गाने को कहा, उसे चुपके से रिकॉर्ड कर लिया और फिर उन्हें सुनाया। वह खुद भी यह सुनकर हैरान रह गईं कि उनकी आवाज़ कितनी अच्छी लग रही थी!

आशा-नैयर की जोड़ी ने लगभग 70 फिल्मों में 324 गीत रचे, जिनमें से कई मंत्रमुग्ध करने वाले और मधुरता से भरे गीत थे - जैसे *हावड़ा ब्रिज, एक मुसाफिर एक हसीना, फिर वही दिल लाया हूँ, कश्मीर की कली, किस्मत।* नैयर ने कहा कि उन्हें अपने संगीत के लिए एक दमदार, खुली और संवेदनशील आवाज़ की ज़रूरत थी, और वह उन्हें आशा में मिली।

दोनों का 13 वर्षों तक लिव-इन संबंध रहा। कई मतभेदों और अहंकार के मुद्दों के कारण 1972 में यह रिश्ता टूट गया।

किशोर कुमार के साथ

ओ पी नैयर ने एक बार आशा से बड़े गुलाम अली खान की एक ठुमरी गवाई, उसे चुपके से रिकॉर्ड कर लिया और फिर उन्हें ही सुनाया। वह खुद हैरान रह गईं कि उनकी आवाज़ कितनी अच्छी लग रही थी!

उनके जीवन के भावनात्मक उथल-पुथल को गीत *चैन से हमको कभी (प्राण जाए पर वचन न जाए,* 1971) में महसूस किया जा सकता है। आशा की रुंध गले वाली आवाज़ और उस अवर्णनीय सुंदर धुन को सुनकर आँखें बंद करके आनंद में डूब जाने का मन करता है। इस गीत ने सर्वश्रेष्ठ गीत का फिल्मफेयर पुरस्कार जीता - लेकिन आशा ने इसे फिल्म से हटवा दिया। उन्होंने पुरस्कार लेने से भी इनकार कर दिया। नैयर ने उनकी ओर से फिल्मफेयर समारोह में पुरस्कार स्वीकार किया - लेकिन घर लौटते समय उस ट्रॉफी को अरब सागर में फेंक दिया। यह एक कड़वा अलगाव था। आशा के जाने के बाद नैयर पेशेवर रूप से उबर नहीं पाए, लेकिन आशा का करियर आगे बढ़ता रहा।

आर डी बर्मन का दौर

आर डी बर्मन (पंचम) ने 1966 में सनसनीखेज फिल्म *तीसरी मंज़िल* के साथ पेशेवर रूप से आशा के जीवन में प्रवेश किया, और इसके अपरंपरागत गीतों और ध्वनियों ने उनकी प्रतिभा का परिचय दिया। *तीसरी मंज़िल* में आशा के शानदार एकल गीत *ओ मेरे सोना रे सोना*

आशा, ओ पी नैयर के साथ।

रे सोना ने आलोचकों और आम लोगों दोनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके बाद पंचम-आशा के हिट गीतों की एक कतार लग गई - कारवां (1971) का चुलबुला *पिया तू अब तो आजा, हरे रामा हरे कृष्णा* (1972) का युग-प्रवर्तक *दम मारो दम* और *यादों की बारात* (1973) का दिल चुराने वाला गीत *चुरा लिया।*

पंचम 1970 के दशक के शीर्ष संगीतकार थे। उन्होंने आशा के करियर को समृद्ध और ऊर्जावान बनाया। यह संगीत और साहचर्य का संगम था। पंचम ने कहा था, ''मैंने आशा से शादी नहीं की, मैंने उनकी आवाज़ से शादी की है।'' दोनों की पसंद काफी विविधतापूर्ण थी। वे कभी-कभी रात में घंटों तक सभी प्रकार का संगीत सुनते थे - लोक, पॉप, जैज़, बिस्मिल्लाह खान, बीटल्स, लैटिन, अरबी, बंगाली लोकगीत। आशा कहती थीं, ''मुझे सोने दो, तुम तो सुबह 11 बजे ही उठोगे, लेकिन मेरी सुबह 10 बजे रिकॉर्डिंग है।''

मैंने अपनी ज़िंदगी का भरपूर आनंद लिया है। इसमें बहुत बड़ी-बड़ी त्रासदियाँ भी आईं, लेकिन साथ ही बेहद खुशी के पल भी रहे। अगर मुझे अपनी ज़िंदगी दोबारा जीने का मौका मिले, तो मैं इसे बिल्कुल वैसे ही दोबारा जीना चाहूँगा।

पंचम के बाद

1994 में पंचम की मृत्यु उनके लिए एक बहुत बड़ा आघात थी। इसके बाद और भी दुखद घटनाएँ सामने आईं। वह अपने बच्चों पर जान छिड़कती थीं। 2012 में, जब आशा सिंगापुर में थीं, तब उनकी 56 वर्षीय बेटी वर्षा ने खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। 2015 में, उनके दूसरे बेटे हेमंत की स्कॉटलैंड में 66 वर्ष की आयु में कैंसर से मृत्यु हो गई। अप्रैल में उनकी मृत्यु तक, आशा के परिवार में उनके बड़े बेटे आनंद, उनकी पोती जनाई भोंसले (24) और उसका जुड़वां भाई रंजई शामिल थे। आशा कहा करती थी, ''जनाई मेरी ज़िंदगी है, मेरी जान है।''

एक गायिका के रूप में वह अडिग रहीं और 1995 की *रंगीला* के साथ फिर से धूम मचा दी। ए आर रहमान के निर्देशन में उर्मिला मातोंडकर के लिए गाते हुए, उन्होंने युवा तड़प और चंचल कामुकता के दो अभिव्यंजक गीत गाए - *तन्हा तन्हा* और *रंगीला रे।* इस फिल्म के लिए उन्हें एक विशेष फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार मिल।

2001 में, उन्होंने आमिर खान की पुरस्कार विजेता फिल्म *लगान* में अभिनेत्री ग्रेसी सिंह के लिए खूबसूरत और शास्त्रीयता से भरा राधा

आर डी बर्मन के साथ।

कैसे ना जले गाया। ए आर रहमान की इस रचना में शास्त्रीय भारतीय लय और लोक प्रभावों का सुंदर मिश्रण था, और इसमें आशा की आवाज़ 68 की बजाय 28 वर्ष की लग रही थी।

1996 में आशा ने *राहुल एंड आई* का निर्माण किया, जो आर डी बर्मन के साथ गाए गए उनके गीतों का एक रीमिक्स एल्बम था। उन्हें रीमिक्स का व्यवसाय पसंद नहीं था, लेकिन उन्होंने यह एल्बम इसलिए बनाया ताकि कोई और एक भयानक रीमिक्स लेकर न आ जाए।

रेखा के साथ।

अंतर्राष्ट्रीय संगीत कार्यक्रम और सहयोग

1980 और 1990 के दशक के दौरान, आशा ने दुनिया भर की यात्रा की और अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, यूएई और अन्य देशों में कई संगीत कार्यक्रमों में अपनी प्रस्तुति दी। उन्होंने ऐसे दर्शकों के सामने प्रस्तुति दी जो उनके काम से भली-भांति परिचित थे और उत्साहपूर्वक उनका स्वागत करते थे। ये उनकी कई लाइव प्रस्तुतियों के लिए विदेशी दौरों की शुरुआत थी।

आशा कई अंतर्राष्ट्रीय संगीत सहयोगों में शामिल रहीं। उदाहरण के लिए, 1991 में, ब्रिटिश गायक और गीतकार बॉय जॉर्ज ने बॉय जॉर्ज सिंग्स, बो डाउन ''मिस्टर'' शीर्षक से एक सिंगल तैयार किया। इसमें *महाभारत* के रंगीन दृश्य, आशा द्वारा गीता के श्लोकों का पाठ और भारतीय आध्यात्मिकता की बॉय जॉर्ज की अपनी व्याख्या शामिल थी।

आशा अपने बारे में कहती हैं: मैंने अपने जीवन का भरपूर आनंद लिया है। इसमें बड़ी त्रासदियाँ भी आई, लेकिन अत्यंत खुशी के पल भी रहे हैं। मैंने दोनों को समान रूप से स्वीकार किया है, और अगर मुझे अपना जीवन फिर से जीना पड़े, तो मैं यह सब फिर से करूंगी। यह कथन बॉलीवुड की सबसे परिवर्तनात्मक, विपुल, बहुमुखी और जुझारू गायिका के व्यक्तित्व को दर्शाता है।

एस आर मधु एक वरिष्ठ पत्रकार और रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रोटरी क्लब भावनगर के अध्यक्ष कौशल सेठ और सचिव महिपालसिंह राणा, हॉस्पिस 'रोटरी करुणालय' में एक महिला से बातचीत करते हुए।

लाइलाज बीमारी से पीड़ित मरीजों के लिए शांति और सांत्वना

रशीदा भगत

भावनगर रोटरी क्लब (रो ई मंडल 3060) की *रोटरी करुणालय* नामक एक प्रतिष्ठित परियोजना, अंतिम चरण के कैंसर रोगियों और किडनी, मस्तिष्क व हृदय से संबंधित पुरानी बीमारियों से पीड़ित अन्य व्यक्तियों के लिए एक धर्मशाला-सह-पुनर्वास केंद्र है। 2022 में स्थापित इस केंद्र का उद्देश्य ऐसे मध्यमवर्गीय परिवारों की मदद करना है जिनके परिवार के सदस्य बहुत बीमार हैं, लेकिन उनके पास उन्हें किसी पेशेवर सुविधा में रखने के लिए आर्थिक क्षमता या घर पर देखभाल के लिए संसाधन और जनशक्ति नहीं है। यह केंद्र एक किराए की इमारत में संचालित होता है, जहाँ 12 कमरों में लगभग 26 मरीज रहते हैं।

क्लब के पूर्व अध्यक्ष और कैंसर विशेषज्ञ डॉ उमंग देसाई, और एक आर्थोपेडिक सर्जन डॉ नीरज जोशी, क्लब के दो मुख्य टीम सदस्य हैं जो इस परियोजना को चलाने के लिए प्रत्यक्ष सेवा प्रदान करते हैं, जो इन रोगियों को सम्मान और यथासंभव आराम देने का प्रयास करता है।

बेहद साफ-सुथरे और सुव्यवस्थित परिसर का दौरा कराते हुए, डॉ देसाई बताते हैं कि करुणालय उन रोगियों को लेता है जिनका चिकित्सा उपचार समाप्त हो गया है, लेकिन वे पूरी तरह या आंशिक रूप से बिस्तर पर हैं या अपनी दैनिक जरूरतों के लिए किसी और पर निर्भर हैं। उन्हें अस्पताल में रखना बहुत बहुत महंगा होता है, और कई मध्यम वर्गीय परिवारों उन्हें घर पर नहीं रख सकते है। या तो घर इतने छोटे होते हैं कि उनके लिए अलग कमरा नहीं दिया जा सकता, क्योंकि इस प्रकार की देखभाल के लिए अलग कमरे की आवश्यकता होती है, या पति-पत्नी दोनों काम करते हैं और बीमार माता-पिता की देखभाल नहीं कर पाते।

इस तरह के काम के लिए जनशक्ति की भारी कमी है और भावनगर जैसे टियर-टू शहर में भी 24 घंटे की देखभाल के लिए किसी व्यक्ति को रखने का मासिक खर्च लगभग `30,000 से 35,000 आता है जो ज्यादातर लोग वहन नहीं कर सकते।

रशीदा भगत

रोटरी न्यूज़ का करुणालय से जुड़ाव

परियोजना की शुरुआत के बारे में बताते हुए डॉ उमंग देसाई कहते हैं, मैं हमेशा यह सोचता था कि अपने कैंसर मरीजों के लिए और क्या कर सकता हूँ, खासकर उन लोगों के लिए जिनके पास गरिमा के साथ जीने और आवश्यक शारीरिक व चिकित्सीय सहायता प्राप्त करने के साधन नहीं हैं। एक दिन, *रोटरी न्यूज़* पढ़ते समय मुझे एक लेख मिला जिसमें आंध्र प्रदेश के किसी क्लब द्वारा कैंसर मरीजों के लिए एक तरह की धर्मशाला स्थापित करने का उल्लेख था।

उन्होंने उस क्लब के अध्यक्ष का फोन नंबर निकालकर फोन किया; लेकिन वह ना ही अच्छी तरह से अंग्रेजी बोल पा रहे थे, और ना हिंदी बोल पा रहे थे। पर उन्होंने कहा कि वह अपने क्लब के एक सदस्य से बात करवाएंगे जो मुझसे अंग्रेजी में बात कर सकेगा।

जल्द ही उन्हें फोन आया, और रोटेरियन ने उन्हें बताया कि कैसे क्लब ने एक पुनर्वास केंद्र स्थापित करने के लिए एक अस्पताल को कुछ उपकरण दान किए थे और धीरे-धीरे इसके संचालन में स्वयं शामिल हो गया। कैंसर रोगियों के लिए कुछ करने का विचार मेरे दिमाग में पहले से ही था और पत्रिका ने इसे आगे बढ़ाने में मेरी मदद की। वास्तव में हमें *रोटरी न्यूज़* से बहुत सारे विचार मिलते हैं, वे मुस्कुराते हैं।

वे आगे कहते हैं कि उन्होंने केवल 10 बिस्तरों के साथ शुरुआत की, केवल भूतल किराए पर लिया। फिर हमने इसे बढ़ाकर 13 बिस्तर कर दिया, और फिर जैसे-जैसे मांग बढ़ी, हमने पहली मंजिल भी किराए पर ले ली।

आश्रम में भजन कार्यक्रम का आनंद लेते हुए निवासी।

इस परियोजना को चलाने के लिए आवश्यक धन के बारे में बात करते हुए डॉ नीरज जोशी कहते हैं कि इस परियोजना पर उनका वार्षिक खर्च `25 लाख आता है। चूँकि आवास किराए पर लिया गया है, एक बड़ा हिस्सा किराए में जाता है, और बाकी कर्मचारियों के वेतन और अन्य संबंधित खर्चों में।

क्लब अध्यक्ष कौशल शेठ कहते हैं कि इस किराए के आवास के 12 कमरों में रहने वाले लगभग 26 निवासियों की देखभाल के लिए 12 कर्मचारी हैं। हमारे पास एक इन-हाउस रसोई है। रसोइया 24 घंटे यहीं रहती है; वह नाश्ता, दोपहर का भोजन, शाम की चाय-नाश्ता और रात का खाना तैयार करती है। एक चिकित्सा अधिकारी प्रतिदिन यहाँ का दौरा करता है और एक फिजियोथेरेपिस्ट उन लोगों की देखभाल करता है जिन्हें इसकी आवश्यकता होती है, वे कहते हैं।

डॉ जोशी और डॉ देसाई हर दिन इस जगह का दौरा करते हैं और यहाँ 30-45 मिनट बिताते हैं, ठीक वैसे ही जैसे किसी अस्पताल में राउंड लगाते हैं। हम मरीजों से मिलते हैं और उनकी स्थिति के बारे में पूछते हैं। यदि उनकी कोई मांग या चिकित्सा आवश्यकता होती है, तो हम उसे यथासंभव पूरा करने का प्रयास करते हैं। और फिर हम प्रशासन, प्रबंधन और जगह के रखरखाव के लिए कुछ समय देते हैं, डॉ जोशी कहते हैं।

मरीजों की सबसे सामान्य जरूरतों के बारे में वे कहते हैं कि उनकी तीन बुनियादी आवश्यकताएँ होती हैं। पहली शारीरिक जरूरतें... जैसे दांत साफ

गणेश चतुर्थी मनाते हुए।

नीचेः नवरात्रि के दौरान गरबा कार्यक्रम का आनंद लेते हुए धर्मशाला के निवासी।

करने से लेकर नहलाने तक, बिस्तर से उठाने और वापस लिटाने तक में सहायता। लगभग 70 प्रतिशत मरीजों को ऐसी सहायता की जरूरत होती है।

दूसरी है उनकी चिकित्सा आवश्यकताएँ... दवाइयाँ, फिजियोथेरेपी और आहार संबंधी सलाह। उनकी चिकित्सा स्थिति के आधार पर, मरीजों को विशिष्ट आहार का पालन करना होता है और इसे सुनिश्चित करने का पूरा ध्यान रखा जाता है। उदाहरण के लिए, यदि आप सुबह या शाम हमारी रसोई में जाएँ, तो साधारण सी तूर दाल के भी चार-पाँच प्रकार मिलेंगे-कहीं नींबू के साथ, कहीं बिना नींबू के, कहीं बिना मिर्च के तो कहीं बिना नमक के। रसोइया आहार प्रतिबंधों को ध्यान में रखते हुए सावधानीपूर्वक भोजन तैयार करती है। कभी-कभी उन्हें गर्मागर्म डोसा और पाव-भाजी जैसे व्यंजन भी दिए जाते हैं!

वे आगे बताते हैं कि तीसरी जरूरत भावनात्मक होती है; ; वे चाहते हैं कि कोई उनसे बात करे, या यूँ कहें कि उन्हें और उनकी बातों को सुने। इसलिए हमारी रोटरी एन्स शाम को समूहों में आती हैं, उनसे बात करती हैं, उनके साथ खेल खेलती हैं, उनके साथ भजन गाती हैं। हम यहाँ नवरात्रि और होली सहित सभी त्योहार मनाते हैं, जिससे उनकी भावनात्मक जरूरतें कुछ हद तक पूरी होती हैं।

यहाँ के अधिकांश मरीज 60 वर्ष से अधिक उम्र के हैं, और सभी भावनगर से नहीं हैं, कुछ मरीज तो मुंबई जितनी दूर से भी आए हैं। डॉ देसाई कहते हैं कि उनकी जानकारी के अनुसार, कैंसर रोगियों के लिए धर्मार्थ आधार पर पुनर्वास केंद्र चलाने वाले ऐसे केवल दो ही केंद्र हैं। अन्य को व्यावसायिक संगठनों के रूप में चलाया जाता है। यह भी पूरी तरह से मुफ़्त नहीं है, भले ही रोटेरियन इसे चलाने के लिए साल में लगभग `25 लाख खर्च करते हैं। निवासी

एक दिन के `450 का भुगतान करते हैं, लेकिन इसमें तीनों समय का भोजन और नाश्ता, उनकी देखभाल करने वाले चिकित्सा और गैर-चिकित्सा कर्मचारियों की लागत, फिजियोथेरेपी आदि शामिल होती हैं। लगभग `13,500 की मासिक लागत का भुगतान उनके परिवारों द्वारा किया जाता है। जो लोग यह कीमत वहन नहीं कर सकते, उन्हें अच्छी छूट दी जाती है।

हर साल लगभग `25 लाख की कमी को दान के माध्यम से पूरा किया जाता है। कॉर्पोरेट्स के कई शीर्ष अधिकारी और व्यवसायी हमारे क्लब के सदस्य हैं और इससे हमें धन जुटाने में वास्तव में मदद मिलती है। और हमने पाया है कि अगर परियोजना अच्छी हो, और लोगों को आप पर विश्वास हो, तो धन की कमी नहीं रहती, डॉ देसाई मुस्कुराते हुए कहते हैं।

करुणालय में भी, बिना ज्यादा कोशिश के भी दान आता रहता है। वास्तव में, जब हमने यह सुविधा शुरू की थी, तो हम एक दिन के `600 लेते थे, लेकिन फिर लोगों ने हमारी मदद करना शुरू कर दिया, इसलिए हमने लागत बढ़ने के बावजूद शुल्क कम कर दिया!

साल में एक बार, नवरात्रि समारोह के दौरान, रोटेरियन निवासियों को बाहर ले जाते हैं, हालांकि यह काफी चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि उनमें से एक दर्जन से अधिक मरीज व्हीलचेयर पर होते है। कभी-कभी उन्हें किसी प्रसिद्ध मंदिर या रिसॉर्ट में ले जाया जाता है; उस समय, 80 वर्ष से अधिक आयु के कई लोगों ने भीगी आँखों के साथ कहा कि वे पहली बार किसी अच्छे रेस्टोरेंट में आए हैं।

डॉ जोशी कहते हैं कि हर मरीज की एक कहानी है... पिछले तीन वर्षों में, उन्होंने लगभग 20 मरीजों को खो दिया है। कभी-कभी मरीज का अंत दिल तोड़ने वाली कहानियों के बीच होता है। डॉ. जोशी उस समय को याद करते हैं जब एक व्यक्ति का निधन हो गया था। हमने रिश्तेदारों को बुलाया... वास्तव में बेटे को, और उसने कहा कि मैं व्यस्त हूं और थोड़ी देर में आऊंगा। हमने बहुत इंतजार किया, और बार-बार उससे संपर्क करने की कोशिश की। अंततः, रात लगभग 10 बजे बेटे ने कहा: यदि आप नहीं संभाल सकते, तो शव को बाहर फुटपाथ पर रख दें, मैं सुबह ले जाऊंगा।

डॉ जोशी बताते हैं कि इस जगह की अवधारणा यह है कि यह एक धर्मशाला है जिसमें मरीज ठीक नहीं होने वाले हैं। अंतिम चरण के कैंसर रोगियों के अलावा, अंतिम चरण के किडनी या हृदय रोगी भी हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या अंतिम चरण के किडनी रोगियों को डायलिसिस मिलता है, वे मना करते हुए कहते हैं, हम यहां कोई सक्रिय चिकित्सा उपचार नहीं देते हैं। यह धर्मशाला उनके लिए है जो मरने का इंतजार कर रहे हैं, और आप बस उन्हें एक शांतिपूर्ण जीवन देते हैं। अस्पताल में अगर डॉक्टर कह दे कि अब कुछ नहीं किया जा सकता और आप उन्हें घर ले जाएँ, लेकिन परिजन घर पर उनकी देखभाल नहीं कर पाते, तो वे उन्हें यहाँ लेकर आते हैं।

दूसरी श्रेणी के मरीज यहाँ ऑर्थोपेडिक सर्जरी के बाद पुनर्वास के लिए, या लकवे जैसी न्यूरोलॉजिकल स्थितियों के उपचार हेतु आते हैं और फिजियोथेरेपी प्राप्त करते हैं।

कभी-कभी, ऐसे मरीज वापस घर भी वापस जाते हैं। वे एक महिला का उदाहरण देते हैं जिसे डायबिटिक फुट की समस्या थी; उसका पैर काटना पड़ा था। उन्हें यहाँ पुनर्वास के लिए लाया गया। फिजियोथेरेपी शुरू की गई, उसे कृत्रिम पैर लगाया गया, वह चलने लगी और अंततः अपने घर लौट गई। ■

ADVT.

SHIKHAR TRAVELS

IATA
ACCREDITED AGENT

Are You Looking for a Spiritual Journey Like Kailash Mansarovar or Your Next Dream Tour?

No stress of planning. No hassle of booking.
Just unforgettable journeys.

Book
Chardham &
Do Dham Yatra

Book
Kailash
Mansarovar Yatra

Enquiry Now

SHIKHAR TRAVELS INDIA

Travel in Good Company

International Tours

Pilgrimage
Tours

Domestic
Tours

Trekking & Climbing
Expedition

Conferences

Educational
Tours

Contact Us:
+91 97178 91151

www.shikhar.com

Mail us:
tours@shikhar.com

M 66, Lajpat Nagar 2, New Delhi - 110024

विशेष बच्चों के लिए चिकित्सा कक्ष

वी मुत्तुकुमारन

रोटरी क्लब बिचोलिम, रो ई मंडल 3170 के पूर्व अध्यक्ष सरगम फलारी के लिए यह एक सपना सच होने जैसा था क्योंकि उनके पसंदीदा मिशन के दो उद्देश्य एक-एक कर पूरे हुए, लेकिन काफी योजना और विचार-विमर्श के बाद - उत्तरी गोवा के वथादेव स्थित नारायण ज़ांत्ये विशेष बाल विद्यालय में दिव्यांग छात्रों के लिए थेरेपी कक्षों की स्थापना और लगभग 40 विशेष प्रशिक्षकों के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करना।

क्लब की पहली वैश्विक अनुदान परियोजना (47,000 डॉलर) *प्रोजेक्ट स्मिता* (स्माइल्स) के तहत सितंबर 2025 में भव्य उद्घाटन समारोह में विशेष बच्चों के लिए श्रवण-वाक् चिकित्सा, फिजियोथेरेपी और व्यावसायिक चिकित्सा हेतु तीन चिकित्सा कक्ष स्थापित किए गए हैं। इन कक्षों में नैदानिक उपकरण, औजार और शिक्षण सहायक सामग्री उपलब्ध कराई गई है। परियोजना के प्राथमिक संपर्क अधिकारी फलारी याद करते हुए बताते हैं, क्लब अध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल (2023-24) के दौरान, मैंने विशेष विद्यालय का दौरा किया और शिक्षकों से सुना कि

उनके विशेष बच्चों का विकास सीखने की अक्षमता वाले बच्चों के लिए राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप नहीं है। पहला, उनके पास पुनर्वास में सहायक सही उपकरण और विशेष चिकित्सा कक्षों की कमी थी। दूसरा, शिक्षकों को दिव्यांग बच्चों को संभालने के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता थी।

विशेष विद्यालय से मिली जानकारी के बाद, उनकी टीम ने जीजी के लिए आवेदन करने से पहले आवश्यकताओं का आकलन करते हुए थेरेपी कक्ष स्थापित करने के फायदे और नुकसान पर विचार किया। जीजी निधि स्वीकृत होने के बाद, हमें थेरेपी कक्ष बनाने में 18 महीने लगे, जो शिक्षकों द्वारा अपने विशेष बच्चों को जीवन कौशल सिखाने के लिए पूरी तरह से सुसज्जित हैं। अपनी खुशी व्यक्त करते हुए, क्लब अध्यक्ष दामोदर श्रीनिवास प्रभु कहते हैं, हमारे सभी 64 सदस्य विशेष बच्चों के लिए इस परियोजना को पूरा होते देखकर बेहद खुश हैं। 20 साल पुराने इस विद्यालय में 3 से 35 वर्ष की आयु वर्ग के लगभग 180 छात्र हैं, जो विभिन्न प्रकार

ऊपर: उत्तरी गोवा के वाथादेव स्थित 'नारायण ज़ांत्ये स्कूल ऑफ़ स्पेशल चिल्ड्रन' में थेरेपी कक्षों के उद्घाटन के अवसर पर PDG गण गौरीश धोंड (दाएँ) और विनयकुमार पाई रायकर।

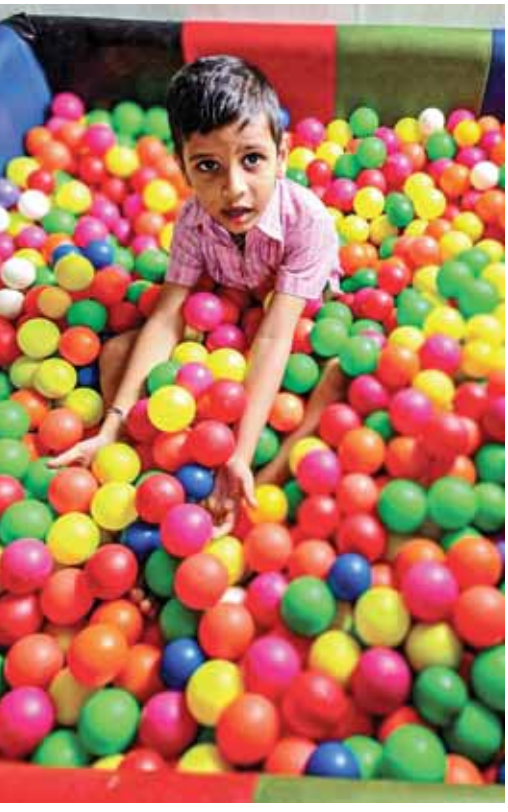

की विकलांगताओं से ग्रस्त हैं और उन्हें विशेष प्रशिक्षकों द्वारा विविध दृष्टिकोण की आवश्यकता है। वर्तमान में, विद्यालय में 30 विशेष शिक्षक हैं।

क्लब सचिव ज्योति सावंत बताती हैं, अब इन विशेष कक्षों के माध्यम से बच्चों को मिट्टी के बर्तन बनाना, कागज और कपड़े के थैले तैयार करना, अगरबत्ती बनाना, दीये (त्योहारों के लिए) बनाना, कढ़ाई आदि जैसे शिल्प कौशलों की पहचान और प्रशिक्षण देने में मदद मिलेगी। वे आगे बताती हैं, तीन थेरेपिस्ट - एक फिजियोथेरेपी के लिए, एक ऑडियो-स्पीच के लिए और एक ऑक्यूपेशनल थेरेपी के लिए - छात्रों को मार्गदर्शन देने में विशेष शिक्षकों की सहायता करेंगे।

लेकिन सुविधाओं को तैयार करना तो आधा काम ही है। फलारी कहते हैं, हमारे पास एक विशेषज्ञ मनोवैज्ञानिक केतकी पारोब थीं, जिन्होंने 40 विशेष शिक्षकों के लिए चार महीने (दिसंबर-मार्च) का एक व्यापक पाठ्यक्रम आयोजित किया, जिसमें दूसरे स्कूल के 10 प्रशिक्षु भी शामिल थे। यह पाठ्यक्रम आठ सत्रों में आयोजित किया गया था और इसमें विभिन्न आवश्यकताओं और चुनौतियों वाले विशेष बच्चों की देखभाल के तरीकों को सिखाया गया। अप्रैल के अंत में आयोजित एक कार्यक्रम में सभी प्रशिक्षु शिक्षकों को प्रमाण पत्र दिए गए। रोटरी को धन्यवाद देते हुए, एक शिक्षिका मंजिरी जोग कहती हैं, हम बिचोलिम क्लब के आभारी हैं कि उन्होंने हमारे शिक्षण कौशल को उच्च स्तर तक उन्नत किया है। यह नया दृष्टिकोण हमें विशेष बच्चों की देखभाल करने में मार्गदर्शन करेगा।

स्पीच और ऑडियो थेरेपिस्ट दीपास्वी सावंत बताती हैं, नए थेरेपी कक्ष बच्चों के तेजी से विकास को सुनिश्चित करेंगे जिससे उन्हें व्यावहारिक दुनिया के अनुरूप ढलने में मदद मिलेगी। हमने रोटरी द्वारा किए गए वैश्विक कार्यों के बारे में बहुत कुछ सुना है, लेकिन इस विशेष परियोजना ने हमें रोटरी के जादू का वास्तविक अनुभव कराया। फलारी के नेतृत्व वाली परियोजना टीम के लिए यह एक भावुक क्षण था क्योंकि मुझे महसूस हुआ कि मिशन समय पर सफलतापूर्वक पूरा हो गया है।

रोटरी क्लब लेक एरोहेड, रो ई मंडल 5330, यूएस, इस परियोजना का वैश्विक भागीदार है। पीडीजी गौरीश धोंड और विनयकुमार पाई रायकर ने गोवा में केशव सेवा साधना समूह के शैक्षणिक संस्थानों के अंतर्गत आने वाले इस विशेष विद्यालय में चिकित्सा कक्षों का उद्घाटन किया। ■

शिवपुरी में एक रिकॉर्ड रोटरी चिकित्सा मिशन

टीम रोटरी न्यूज़

24 मार्च, 2026 को रो ई 3053 ने 'एक ही स्थान पर आयोजित सबसे बड़े निःशुल्क बहु-विशेषज्ञ चिकित्सा शिविर' के लिए इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज होकर इतिहास रच दिया।

मंडल द्वारा श्रीमंत माधवराव सिंधिया स्वास्थ्य सेवा मिशन और मध्य प्रदेश सरकार के सहयोग से आयोजित इस स्वास्थ्य शिविर में एक सप्ताह (17-24 मार्च) के दौरान कुल 2,82,577 ओपीडी दर्ज की गईं; 1,42,788 प्रयोगशाला जांच की गईं; और 3,623 सर्जरी की गईं। ग्वालियर रोटरी क्लब ने इस पहल का नेतृत्व किया और इसे शिवपुरी, शिवपुरी क्रेस्ट, गुना, गुना रॉयल तथा अशोकनगर रोटरी क्लबों का सहयोग प्राप्त हुआ।

जटिल नेत्र, दंत और आर्थोपेडिक बीमारियों के निदान से लेकर उन्नत चिकित्सा परामर्श और निःशुल्क हाई-टेक रोबोटिक सर्जरी तक, इस शिविर ने ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों से आए मरीजों, जिनमें बच्चे भी शामिल थे, को विभिन्न प्रकार की सेवाएं प्रदान कीं।

संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने इस उपलब्धि पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यह रिकॉर्ड केवल संख्या या पैमाने के बारे में नहीं है, बल्कि सामूहिक प्रयास और की भावना का परिणाम है।

DG निशा शेखावत मेडिकल कैंप में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया का स्वागत करते हुए।

रोटरी क्लब ग्वालियर के अध्यक्ष रोहित जैन ने कहा कि अत्याधुनिक उपकरणों और विशेषज्ञ चिकित्सा टीमों ने प्रत्येक मरीज को समय पर और गुणवत्तापूर्ण देखभाल सुनिश्चित की। उन्होंने आगे कहा कि इस पहल से विशेष रूप से उन लोगों को लाभ हुआ जिन्हें आमतौर पर इलाज के लिए बड़े शहरों की यात्रा करनी पड़ती थी। एक ही स्थान पर व्यापक चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता ने स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सुलभ और सुविधाजनक बना दिया।■

DG निशा और रोटेरियन कैंप में एक मरीज़ से बातचीत करते हुए।

Rotary PEOPLE OF ACTION

प्लास्टिक-मुक्त भविष्य की ओर एक अभियान

जयश्री

उद्देश्य और रोमांच के संगम के रूप में, रोटरी क्लब ऑफ हुबली विद्यानगर, रो ई मंडल 3170 ने हुबली से गोवा तक एक अनोखी टाइम-स्पीड-डिस्टेंस (टीएसडी) मोटर रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। लगभग 200 रोटेरियन सदस्यों ने 66 कारों में सवार होकर *गो प्लास्टिक फ्री* के संदेश के साथ इस थीम-आधारित रैली में भाग लिया।

इस रैली का मुख्य उद्देश्य पूरे मार्ग में सिंगल-यूज़ प्लास्टिक के उन्मूलन के प्रति जागरूकता फैलाना था। मार्ग में आने वाले गाँवों के चौक और सामुदायिक स्थलों पर रोटेरियनों ने निवासियों, दुकानदारों और युवा समूहों से बातचीत की, उन्हें प्लास्टिक के पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संबंधी खतरों के बारे में बताया और व्यावहारिक, टिकाऊ विकल्प अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

संदेश को नज़रअंदाज़ करना मुश्किल था। ब्रांडेड वाहन, रचनात्मक प्रदर्शन और आकर्षक बैनरों ने हर पड़ाव पर दृश्यता सुनिश्चित की, जबकि प्रतिभागियों के उत्साह ने उत्सुक भीड़ को आकर्षित किया और सार्थक संवाद को प्रेरित किया।

कार्यक्रम आयोजकों ने केवल संदेश ही नहीं दिया, बल्कि स्वयं उसका पालन भी किया। कार्यक्रम समन्वयक महिमा डंड ने कहा, हमने हर रूप में प्लास्टिक से बचने का सचेत प्रयास किया; भोजन पर्यावरण-अनुकूल प्लेटों में

रोटरी क्लब हुबली विद्यानगर की सदस्य हेमा शेखरप्पा, अख़बार से बने परिधान में, अपने संदेश को प्रभावी ढंग से पहुँचाती हुई।

रोटेरियन स्मिता शाह, कीर्ति तंबाड, आशा सालियन और अंजलि मोकाशी पर्यावरण से जुड़े संदेशों वाले प्लेकार्ड पकड़े हुए।

परोसा गया, पानी स्टेनलेस स्टील की बोतलों में दिया गया और नाश्ता कागज़ के थैलों में पैक किया गया।

एक प्रिसिजन रैली के रूप में इस यात्रा में गति की बजाय कौशल और अनुशासन की परीक्षा हुई, जिसमें प्रतिभागियों को गोवा पहुंचने में लगभग 10 घंटे लगे। ड्राइव का समापन एक पुरस्कार समारोह के साथ हुआ, जिसमें रचनात्मकता और प्रतिबद्धता को सम्मानित किया गया तथा सर्वश्रेष्ठ सजी हुई कार और सर्वश्रेष्ठ थीम प्रदर्शन जैसी श्रेणियों में पुरस्कार दिए गए। उन्होंने कहा, सभी प्रतिभागियों को विशेष रूप से डिज़ाइन की गई टी-शर्ट दी गईं; टीमों को प्रोत्साहित किया गया कि वे अपनी पसंद के मुद्दों से संबंधित डिज़ाइनों के साथ इसे कस्टमाइज़ करें और सर्वश्रेष्ठ डिज़ाइनों को सम्मानित किया गया।

ब्रांडेड वाहन, रचनात्मक प्रदर्शन और आकर्षक बैनरों ने हर पड़ाव पर अपनी मौजूदगी सुनिश्चित की और उत्सुक भीड़ को अपनी ओर आकर्षित किया।

एक पेशेवर टीम ने रैली के मार्ग का मानचित्रण किया, और चेकपॉइंट्स पर आयोजित इंटरैक्टिव खेलों ने पूरी यात्रा के दौरान उत्साह बनाए रखा।

इस आयोजन की कुल लागत लगभग `12 लाख थी। महिमा ने कहा, हमें विभिन्न प्रायोजकों से उदार योगदान मिला और शेष धनराशि से हम हुबली में महत्वपूर्ण स्थानों पर बड़े कूड़ेदान स्थापित करने की योजना बना रहे हैं।

डीजीई लेनी डी कोस्टा, डीजीएन अशोक नाइक, पीडीजी अविनाश पोतदार और बासिल डी सूजा, हुबली विधायक महेश तेंगिंकई तथा राज्यसभा सांसद सदानंद शेट तनावडे हरी झंडी दिखाने के समय उपस्थित थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष संजय शेट्टी थे।

मित्रता की एक अद्भुत मिसाल पेश करते हुए, हमारे क्लब की सदस्य साधना राव के माध्यम से जुड़े ऑस्ट्रेलिया के मित्रों ने अनाथ लड़कियों की शिक्षा के लिए `54,500 का योगदान दिया, साथ ही एक अनाथालय के लिए `25,000 मूल्य के रसोई के बर्तन और उपकरण भी प्रदान किए। क्लब के सदस्यों ने कंबल, साड़ियाँ, किराने का सामान और मिठाइयाँ भी दान कीं।

यह रैली एक निरंतर चली आ रही परंपरा का हिस्सा है। हर दो साल में आयोजित होने वाली इस रैली के प्रत्येक संस्करण में एक अलग सामाजिक विषय पर प्रकाश डाला जाता है। पिछली रैलियों में *हॉर्न नॉट ओके, प्लीज!* के माध्यम से ध्वनि प्रदूषण और *माइंड मैटर्स मोर* के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया था। ■

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

बालिका आश्रय गृह में शांति स्तंभ

रोटरी क्लब त्रिचूर, रो ई मंडल 3205, ने निर्भया होम में एक बगीचा विकसित किया और एक रोटरी शांति स्तंभ, दो झूले, एक घास का कालीन और बेंच लगाए है। यह आश्रय गृह 12 से 18 वर्ष की आयु की लगभग 90 लड़कियों को देखभाल और सुरक्षा प्रदान करता है।

नए स्थापित शांति स्तंभ और झूलों के सामने क्लब के सदस्य।

आजीविका समर्थन के लिए रिक्शा गाड़ियाँ

रोटरी क्लब चंदननगर, रो ई मंडल 3291, ने आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को 20 साइकिल रिक्शा गाड़ियां वितरित की। इस पहल का उद्देश्य बीपीएल और दिहाड़ी मजदूरों की मदद करना था, ताकि वे सब्जियां, पौधे और किराने के सामान जैसी वस्तुओं का परिवहन कर उन्हें बेच सकें। यह परियोजना ईस्टर्न इंडिया रोटरी वेलफेयर ट्रस्ट (ईआईआरवीटी) के साथ साझेदारी में पूरी की गई, जिसमें `2.9 लाख की कुल लागत का 50-50 प्रतिशत क्लब और ईआईआरवीटी दोनों ने साझा किया।

अपनी रिक्शा गाड़ी धकेलता हुआ एक लाभार्थी।

महिलाओं के लिए ई-ऑटो

रोटरी क्लब राउरकेला क्वीन्स, रो ई मंडल 3261, ने अपने *प्रोजेक्ट सक्षम* के तहत वंचित परिवारों की चार महिलाओं को ई-ऑटो वितरित किए। अब अपने तीसरे वर्ष में यह परियोजना महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण पर केंद्रित है, जिसमें उन्हें आजीविका के स्थायी स्रोत के रूप में ई-ऑटो प्रदान किए जाते हैं। लाभार्थियों का चयन सत्यापन और कानूनी जांच प्रक्रिया के माध्यम से किया गया था।

पीडीजी मनजीत सिंह अरोड़ा और डीजीई आलम सिंह रूपरा एक लाभार्थी को चाबी सौंपते हुए।

लेखिका को सम्मान

लेखिका और स्तंभकार शोभा डे को साहित्य, पत्रकारिता और सार्वजनिक संवाद में उनके योगदान के लिए रोटरी क्लब पूना, रो ई मंडल 3131, द्वारा 'साइटेशन ऑफ मेरिट' प्रदान किया गया। मंडल गवर्नर संतोष मराठे ने यह पुरस्कार प्रदान किया।

बाएं से: डीजी संतोष मराठे लेखिका शोभा डे को पुरस्कार प्रदान करते हुए। साथ में उपस्थित (दाएं से): तनुजा मराठे, पीडीजी डॉ दीपक शिकारपुर, पीपी कैलाश मोंगा और क्लब अध्यक्ष रोहित मित्रा।

ADVT.

Rotary | CREATE LASTING IMPACT Rotary

BK AD GIFTS - INDIA

AUTHORISED LICENSEE ROTARY INTERNATIONAL

Off :130 - C Kottur Road, Palayamkottai,
Tirunelveli, Tamilnadu. 627 002, INDIA.

www.bkadgifts.com

Sales Contact

94431 57569,
94422 75691, 82201 84868

netparkkannan@gmail.com
tkannan491@gmail.com

Rotary OFFICIAL LICENSEE

The Rotarian's finest Choice

We offer a wide range of services including:

Design & Manufacturing
Licensing
Product development and patenting
Promotional products

Our clients portfolio spans continents, cultures and categories and includes sports, consumer brands, hospitality, design, travel, wellness and more.

We supply the following club materials:

Rotary
Rotaract, Interact,
RCC, Innerwheel.
Available Products
President Collar, Attendance & Club Records, Gong & Gavel,
SGT-at-arms Accessories, New member Induction pins,
Visiting Rotarian Card, New Member Kit,
Board of officers pin, T-shirt, Modi coat, Club needs.

Corporate Gift Articles

Vijay Calendars & Gifts

Products

- Wall clock, Table clock, Table clock with penstand,
- MDF Key hanger,
- Wrist watch, Keychain,
- Desk organisers, Paper Weight,
- Plastic mobile stand,
- MDF Photo frame,
- New year Diary & Calendar.

Rotary PEOPLE OF ACTION

डिंडीगुल में महिलाओं का प्रभावी योगदान

जयश्री

इस रोटरी वर्ष में तमिलनाडु के दिंडीगुल और आसपास के इलाकों में लगभग 20,000 लड़कियों और युवतियों को एचपीवी का टीका लगाया गया है, जो गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर की रोकथाम की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। रो ई मंडल 3000 के अंतर्गत आने वाले महिला क्लब, रोटरी क्लब दिंडीगुल क्वीनसिटी के नेतृत्व में शुरू की गई इस पहल में मजबूत साझेदारियों और जमीनी स्तर पर लामबंदी को एक साथ लाया गया है।

क्लब की बुलेटिन संपादक, आरती मुकेश कहती हैं रोटरी क्लब दिल्ली साउथ, रो ई मंडल 3011, हमारा मुख्य प्रायोजक था, जिसने टीके उपलब्ध कराए, जबकि हमने स्थानीय स्तर पर लाभार्थियों की पहचान की। भारत भर के कई रोटरी क्लबों ने, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और तमिलनाडु मर्केंटाइल बैंक जैसे साझेदारों के साथ मिलकर, इस प्रयास में सहयोग दिया।

टीकाकरण अभियान को व्यापक जागरूकता अभियानों का समर्थन प्राप्त था। चिकित्सा विशेषज्ञों की मदद से क्लब ने कॉलेजों और संस्थानों में सत्र आयोजित किए, जिनमें छात्रों और अभिभावकों को एचपीवी टीकाकरण के महत्व के बारे में बताया गया। पदयात्राओं और रैलियों ने इस संदेश को व्यापक समुदाय तक पहुंचाने में मदद की। वह कहती हैं, ''यह हमारी प्रमुख परियोजनाओं में से एक रही है, और हर सदस्य ने इसमें गहराई से शामिल था।''

एक अन्य दीर्घकालिक पहल क्लब की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है। आठ वर्ष पूर्व, इसने क्योर

क्लब अध्यक्ष राजात्ती कमलाकन्नन (दाएं) अपनी टीम के साथ क्लबफुट सेंटर में बच्चों को जूते वितरित करती हुई।

इंटरेक्टर्स पुनर्चक्रण योग्य कचरा बेचने के बाद, एक कबाड़ी वाले से उसकी बिक्री से प्राप्त राशि लेते हुए।

ऊपर: HPV टीकाकरण शिविर में नर्सिंग छात्रों के साथ रोटरी क्लब डिंडीगुल क्रीनसिटी के सदस्य।

इंडिया के सहयोग से सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में क्लबफुट फ्री डिंडीगुल केंद्र की स्थापना की थी। आज, आसपास के गांवों से 150-200 शिशुओं का वहाँ उपचार मिल रहा है।

हर शुक्रवार को क्लब के सदस्य केंद्र में आकर अभिभावकों को परामर्श देते हैं और सुधारात्मक जूते उपलब्ध कराते हैं, जिन्हें हर छह महीने में बदलना आवश्यक होता है। आर्थी कहती हैं, हम हर बच्चे की ज़रूरतों को करीब से समझते हैं। सभी सदस्य योगदान देते हैं, लेकिन मल्लिगा ने हमारा विशेष सहयोग दिया है। केंद्र पर आयोजित त्योहारी मिलन समारोह लंबे उपचार चक्र से गुजर रहे परिवारों को प्रोत्साहन और भावनात्मक सहारा प्रदान करते हैं।

इस क्लब की ताकत इसके घनिष्ठ सदस्यों में निहित है। 63 सदस्यों के साथ, यह अपने मासिक पूर्णिमा की रात की बैठकों के माध्यम से आपसी बंधन को मजबूत करता है - ये अनौपचारिक सभाएँ कहानियाँ सुनाने, यादें साझा करने और सामूहिक भोजन से भरी होती हैं। वह कहती हैं कि ये क्षण मित्रता को गहरा करते हैं और सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को मजबूत करते हैं।

उनकी हालिया बैठक एमवीएम पार्क में आयोजित की गई, जिसका रखरखाव क्लब पिछले दो वर्षों से कर रहा है। सदस्य बारी-बारी से कर्मचारियों के वेतन का भी वहन करते हैं; पिछले महीने `12,000 का योगदान युवसारथा द्वारा दिया गया।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए बने ब्लॉसम सेंटर में, क्लब साबुन बनाने, बुनाई, कढ़ाई और क्रोशे जैसे व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करता है। सदस्य ललिता के सहयोग से हाल ही में वहां सौर ऊर्जा से चलने वाली बत्तियां लगाई गई हैं, जबकि वनिता मुरलीधरन किराए और दवाइयों के खर्च में योगदान देती हैं।

क्लब ने 13 इंटरेक्ट और तीन रोटरेक्ट क्लबों को भी प्रायोजित किया है। इंटरेक्टर्स *शेयर एंड केयर वॉल* के लिए संग्रहण अभियान चलाते हैं, जिसके माध्यम से उपयोगी वस्तुओं को जरूरतमंदों तक पहुँचाया जाता है, जबकि *ट्रैश टू ट्रीज़* पहल के तहत पुनर्चक्रित कचरे को वृक्षारोपण के लिए संसाधनों में परिवर्तित किया जाता है। क्लब नियमित रूप से आयोजित होने वाले बड़े पैमाने के पौधरोपण अभियानों में इंटरेक्टर्स और रोटरेक्टर्स को शामिल करता है।

वृद्धाश्रमों का दौरा क्लब की नियमित गतिविधियों में शामिल है। आरती कहती हैं, ''हम बुजुर्गों के साथ समय बिताते हैं, उन्हें सरल गतिविधियों में शामिल करते हैं और आवश्यक वस्तुओं के साथ उनकी सहायता करते हैं।'' हाल ही में, ब्रिटेन की रोटेरियन माया ने चार वृद्धाश्रमों में रहने वाले लोगों के लिए खाट, व्हीलचेयर और चिकित्सा सामग्री के लिए `2 लाख का योगदान दिया। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

विशेष बच्चों के लिए एक RYLA

किरण ज़ेहरा

डॉ संदीप घरत, अध्यक्ष, रोटरी क्लब डोम्बिवली ईस्ट, रो ई मंडल 3142, कहते हैं, नेतृत्व कार्यक्रमों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शायद ही कभी शामिल किया जाता है। मार्च में उनके क्लब द्वारा आयोजित एक डीईआई-केंद्रित RYLA ने इस अंतर को दूर करने का प्रयास किया, एक ऐसा स्थान बनाकर जहां दिव्यांग बच्चे सक्रिय रूप से भाग ले सकें और अपनी सीमाओं से बाधित न हों।

इस कार्यक्रम में 11 विशेष विद्यालयों से 42 विशेष बच्चों को उनके शिक्षकों और देखभालकर्ताओं के साथ, एक साथ लाया गया, ताकि संरचित गतिविधियों के माध्यम से भागीदारी, आपसी संवाद और आत्म-अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया जा सके।

पूर्व अध्यक्ष राधिका गुप्ते के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में विशेष शिक्षा के क्षेत्र में तीन दशकों से अधिक का अनुभव रखने वाली मंडल डीईआई अध्यक्ष ने भी भाग लिया। उद्घाटन सत्र में डीजी हर्ष मकोल और मंडल सचिव निखिल धूत उपस्थित थे।

दिन की शुरुआत साधारण नाश्ते के साथ हुई, जिसके बाद डोम्बिवली स्थित रोटरी चिल्ड्रन्स पार्क में सैर की गई। 2.5 एकड़ में फैला यह पार्क, महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम द्वारा लीज़ पर ली गई भूमि पर रोटरी क्लब डोम्बिवली ईस्ट और उसके ट्रस्ट द्वारा विकसित और अनुरक्षित किया गया है। इस पार्क में खेल का मैदान, जॉगिंग ट्रैक, आयुर्वेदिक उद्यान, तितली उद्यान और एक एम्फीथिएटर शामिल हैं।

इसके बाद बच्चों ने एक मज़ेदार ज़ुम्बा सत्र का आनंद लिया। संगीत से पूरा माहौल गूंज रहा था और बच्चे सरल स्टेप्स का पालन करते हुए ताली बजा रहे थे, घूम रहे थे और साथ में थिरक रहे थे। कुछ बच्चे पहले तो झिझक रहे थे, लेकिन जल्द ही मुस्कुराते हुए समूह के साथ ताल मिलाकर शामिल हो गए। इस सत्र से उन्हें सहज होने, निर्देशों का पालन करने और एक साझा गतिविधि का हिस्सा होने का एहसास करने में मदद मिली, क्लब के सदस्य तेजस ठक्कर ने बताया, जिन्होंने इस सत्र का आयोजन किया था। वह डोंबिवली में मरिदम राइडर्सफ नाम से एक डांस अकादमी चलाते हैं।

ऐन वर्षा काटेकर द्वारा संचालित कला सत्र के दौरान, बच्चों ने रंगीन कागज़ और मोतियों की मदद से सरल कलाकृतियाँ बनाईं। कुछ बच्चों ने स्वतंत्र रूप से काम किया, जबकि अन्य ने धीरे-धीरे सौम्य मार्गदर्शन का पालन किया। इससे उन्हें ध्यान केंद्रित करने, छोटे-छोटे निर्णय लेने और बिना किसी दबाव के स्वयं को अभिव्यक्त करने का मौका मिला। यह उनके विचारों और पसंदों को व्यक्त करने का एक तरीका था, जो शायद शब्दों के माध्यम से आसानी से व्यक्त न हो पाते, वे कहती हैं।

इसके बाद दोपहर के भोजन में बच्चों को चावल, दाल, सब्ज़ियाँ और मिठाई का सरल भोजन परोसा गया। दोपहर के सत्र में क्लब के सदस्य डॉ. मनोज केतकर द्वारा एक मैजिक शो प्रस्तुत किया गया। उन्होंने बताया, जैसे-जैसे जादू के करतब दिखाए गए, कुछ बच्चे आगे झुककर मेरी प्रस्तुति को टकटकी लगाकर देखने लगे, जबकि अन्य बच्चे सहज हंसी और आश्चर्य से भर उठे।

कार्यक्रम का समापन शाम की चाय और नाश्ते के साथ हुआ। शिक्षकों को अपनी प्रतिक्रिया साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया, जिसके बाद एक संक्षिप्त अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। बच्चों को घर ले जाने के लिए बैग और स्नैक पैक दिए गए। डीजीई नीलेश जयवंत समापन समारोह में उपस्थित थे। रोटरी क्लब डोंबिवली ने इस कार्यक्रम का सह-प्रायोजन किया। ■

बाएं से दूसरी (बैठी): मंडल डीईआई अध्यक्ष राधिका गुप्ते, डीजी हर्ष वी मकोल, क्लब अध्यक्ष संदीप घरत और सचिव विनायक अगटे RYLA प्रतिभागियों के साथ।

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से

शैक्षणिक वर्ष 2026-27 के लिए मंडल फाउंडेशन पदों पर नियुक्ति करें

2026-27 के लिए धन जुटाने के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, यह आवश्यक है कि डीजीई क्लब नेताओं के बीच फाउंडेशन को बढ़ावा देने पर केंद्रित एक मजबूत नेतृत्व टीम का निर्माण करें। यदि आपने अभी तक ऐसा नहीं किया है, तो कृपया निम्नलिखित प्रमुख पदों पर नियुक्ति करें और इसकी जानकारी रो ई के साथ साझा करें, ताकि उन्हें महत्वपूर्ण रिपोर्टों और संसाधनों तक पहुँच मिल सके, जो आपके धन जुटाने के प्रयासों को मजबूत करेंगे।

- मंडल एंडोमेंट/प्रमुख दान अध्यक्ष (डीई/एमजीसी)
- मंडल सी एस आर अध्यक्ष
- मंडल वार्षिक निधि उपसमिति अध्यक्ष
- मंडल पॉल हैरिस सोसाइटी समन्वयक
- मंडल निधि संग्रहण उपसमिति अध्यक्ष
- मंडल पोलियोप्लस उपसमिति अध्यक्ष

नियुक्ति प्रस्तुत करने के लिए, *My Rotary* में लॉग इन करें, मैनेज पर जाएँ, और डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन टैब का चयन करें।

क्लब सदस्यों की ओर से सूचीबद्ध योगदान

कोई क्लब नीचे बताए गए अनुसार ऑफलाइन या ऑनलाइन तरीकों का उपयोग करके अपने सदस्यों की ओर से सामूहिक रूप से योगदान कर सकता है।

चेक/डिमांड ड्राफ्ट (डीडी):

- क्लब/क्लब ट्रस्ट खाते से जारी किया गया एक चेक/डीडी।
- सूचीबद्ध योगदान भेजते समय, विधिवत भरा हुआ आधिकारिक पत्र प्रारूप रोटरी फाउंडेशन (भारत) को भेजा जाना आवश्यक है।
- यह पत्र जमा करने से पहले क्लब के आधिकारिक लेटरहेड पर मुद्रित होना चाहिए।
- सदस्यों की सूची प्रस्तुत करें, जिसमें सदस्यता आईडी, फंड का विवरण और योगदान राशि (INR में) शामिल हो।
- कुल सूचीबद्ध योगदान राशि चेक/डीडी राशि के बराबर होनी चाहिए।
- व्यक्तिगत योगदान कम से कम 5 डॉलर होना चाहिए; अन्यथा, टीआरएफ नीति के अनुसार क्लब/मंडल को दान क्रेडिट दिया जाएगा।
- रोटरी वर्ष के 31 मई तक योगदान RISAO तक पहुंच जाना चाहिए।

माई रोटरी प्लेटफॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन:

- क्लब के अधिकृत नेता (अध्यक्ष, फाउंडेशन अध्यक्ष, सदस्यता अध्यक्ष, कार्यकारी सचिव/निदेशक, सचिव, कोषाध्यक्ष) क्लब के PAN का उपयोग करते हुए अपने *My Rotary* खाते के माध्यम से योगदान कर सकते हैं।
- भुगतान क्लब की ऑनलाइन बैंकिंग सेवाओं के माध्यम से ही किए जाने चाहिए, न कि व्यक्तिगत नेताओं के खातों से।

सूचीबद्ध अंशदान विधि का उपयोग करने के लिए कृपया निम्नलिखित पर ध्यान दें:

- कर रसीद: क्लब या क्लब ट्रस्ट को जारी की जाएगी।
- अंशदान क्रेडिट: यह क्रेडिट व्यक्तिगत सदस्यों को उनकी सदस्यता आईडी के सामने सूचीबद्ध राशि के आधार पर आवंटित किया जाएगा।
- आवश्यकता: क्लब/क्लब ट्रस्ट का PAN कार्ड प्रदान करना अनिवार्य है। ■

आजीवन सीखने वालों के लिए

ताइवान के ताइपे में 13-17 जून को आयोजित रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में ब्रेकआउट सत्र गहन अध्ययन, प्रेरणा और नेटवर्किंग के लिए आपका एकमात्र समाधान हैं। केंटकी के फ्रैंकलिन रोटरी क्लब की रॉबिन हॉलिंग्सवर्थ ने पिछले साल अपने पहले कन्वेंशन में कहा था कि ये सत्र लोगों को आकर्षित करते हैं और उन्हें कन्वेंशन में नियमित रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने कहा, कार्यशालाओं की संख्या, उनकी गुणवत्ता और व्यापकता को देखते हुए, आपको बार-बार आना पड़ेगा।

ताइपे ब्रेकआउट सत्रों की मुख्य बातें:

रोटरी में खुशी

सदस्यों का मत स्पष्ट है: रोटरी से जुड़ाव में क्लब का अनुभव सबसे महत्वपूर्ण कारक होता है। ऐसे सरल तरीकों के बारे में जानें जो सदस्यों को अपने क्लबों के साथ अधिक संतुष्ट और प्रसन्न बनाते हैं।

पीढ़ियाँ एकजुट हों!

रोटरी के युवा नेता युवा सदस्यों को शामिल करने और विभिन्न पीढ़ियों को एक साथ मिलकर काम करने के लिए प्रेरित करने के अपने सुझाव साझा करते हैं।

अच्छे के लिए ए आई

तकनीकी क्षेत्र के नौसिखियों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जानकार उपयोगकर्ताओं को आमंत्रित किया जाता है: स्वास्थ्य, आपदा राहत और अन्य क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए रोटरी में ए आई के उपयोग करने के लिए व्यावहारिक विचार प्राप्त करें।

अपने क्लब को समय के अनुसार ढालें

रोटरी का विकास हो रहा है, इसलिए इसके क्लबों को भी विकसित होना चाहिए। एक अभिनव या लचीला क्लब मॉडल अपनाएं: हाइब्रिड, सामाजिक उद्देश्य पर आधारित या कॉर्पोरेट, उदाहरण के लिए।

आप रोटरी के कहानीकार हैं

रो ई की छवि को बेहतर बनाने के लिए इन विचारों को अपनाएं और इससे आपके समुदाय को रोटरी के बारे में जानने में मदद मिलेगी और नए सदस्य भी आकर्षित होंगे।

सदस्यों की संख्या लगभग चार गुना हो गई

जानिए कैसे एक क्लब, जिसके सदस्यों की संख्या दो साल में 11 से बढ़कर 40 हो गई, ने बेहतर सहभागिता, रोटरी के बारे में अधिक जागरूकता और एक स्वागतपूर्ण संस्कृति के माध्यम से चुनौतियों पर काबू पाया। ■

आपके गवर्नर्स से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

एक शांत टीम लीडर

मध्य प्रदेश और गुजरात के कुछ हिस्सों में रोटरी क्लबों के बीच डीजीएससी युगल के रूप में काफी लोकप्रिय, डीजी सुशील मल्होत्रा और उनकी पत्नी रूबी अपने कुशल नेतृत्व और प्रबंधन के लिए जाने जाते हैं। जहाँ गवर्नर चार वर्षों तक डिस्ट्रिक्ट ग्रांट्स सब-कमेटी के अध्यक्ष रहे हैं, वहीं अब इस पद का नेतृत्व उनकी पत्नी कर रही हैं।

102 क्लबों में 2,600 रोटेरियन होने के साथ, वह 100 नए सदस्य जोड़ना चाहते हैं, जबकि अप्रैल में वे पहले ही यह आंकड़ा 200 से बढ़ा चुके है। वह हाल ही में स्थापित तीन क्लबों के अलावा दो नए क्लबों की स्थापना करेंगे। उनके क्लबों ने चैरिटी अस्पतालों में वैश्विक अनुदानों के माध्यम से लगभग 50 डायलिसिस मशीनें लगाई हैं; कैंसर के इलाज के लिए बैतूल के पास पाढर मिशनरी अस्पताल को जापान से आयातित एक सर्जरी माइक्रोस्कोप (वैश्विक अनुदान: 46,000 डॉलर) दान किया है; रोटरी क्लब भोपाल हिल्स ने भोपाल के पीपुल्स अस्पताल के लिए एक ऑप्थैल्मिक वैन (वैश्विक अनुदान: 35,000 डॉलर) और एक चलित डेंटल (दंत) क्लिनिक को हरी झंडी दिखाई है।

इंदौर के पास स्थित औद्योगिक क्षेत्र पीथमपुर में एक विशाल ग्रीनबेल्ट बनाया गया था (सीएसआर अनुदान: 28,000 डॉलर)। मल्होत्रा ने समय से चार महीने पहले ही 252,000 डॉलर का टीआरएफ योगदान लक्ष्य हासिल कर लिया है। वह खुशी से कहते हैं, अब मैं इसे दोगुना करके 500,000 डॉलर से अधिक करना चाहता हूँ। पहली बार, 40 साल पुराने रो ई मंडल 3040 ने टीआरएफ के लिए इतनी बड़ी राशि जुटाई है।

2006 में रोटरी में शामिल हुए मल्होत्रा को ग्लैमर की आदत नहीं है, क्योंकि, मैं प्रसिद्धि का भूखा नहीं हूँ क्योंकि मेरी टीम चुपचाप काम करती है। मैं टीम वर्क में विश्वास करता हूँ और मेरा प्रदर्शन मेरी बात कहता है। टीआरएफ न्यासी भरत पंड्या और रो ई निदेशक के पी नागेश उनके आदर्श हैं।

सुशील मल्होत्रा
परीक्षण-प्रमाणन प्रयोगशाला,
रोटरी क्लब इंदौर मेघदूत,
रो ई मंडल 3040

ज्ञानेश्वर शेवाले
आइसक्रीम/जूस, रोटरी क्लब नासिक नॉर्थ, रो ई मंडल 3030

एक नए ब्लड बैंक की स्थापना

स्वयं से ऊपर सेवा का मंत्र ज्ञानेश्वर शेवाले का मार्गदर्शन करता है क्योंकि उनका लक्ष्य आजीवन मानवता की सेवा करना है। मैं 2006 में रोटरी में शामिल हुआ, ताकि बहुत बड़े पैमाने पर और व्यापक रूप से आम जनता की सेवा कर सकूँ।

उन्होंने लगभग 1,060 नए सदस्यों को शामिल किया है, और 18 नए क्लबों को अधिकृत किया है, जबकि सात अन्य क्लब कतार में हैं, जो 120 से अधिक क्लबों और 6,500 सदस्यों की वर्तमान संख्या को और मजबूत करेंगे। यवतमाल स्थित मातृ सेवा संघ अस्पताल में एक सीटी स्कैन मशीन (वैश्विक अनुदान: 70,000 डॉलर) लगाई गई; *प्रोजेक्ट हैप्पी स्कूल्स* (वैश्विक अनुदान: 42,000 डॉलर) के तहत नासिक स्थित माई लेले श्रवण विकास विद्यालय में डेस्क-बेंच दान की गई, डिजिटल क्लासरूम स्थापित किए गए और सौर शौचालय बनाए गए; और डेल्टा फेनोकेम के वित्तपोषण की सहायता से, चरणबद्ध तरीके से 5,000 छात्राओं को साइकिलें (सीएसआर: 118,000 डॉलर) दी जा रही हैं। शेवाले ने कहा, हम कॉर्पोरेट पार्टनर डब्ल्यूसीएल के साथ गठजोड़ करके नागपुर के उमरेड तालुका में एक नया रोटरी ब्लड बैंक (सीएसआर: 130,000 डॉलर) स्थापित करेंगे। यह चिकित्सा सुविधा आपातकालीन मामलों और गंभीर बीमारियों से पीड़ित लोगों के इलाज के लिए स्थानीय अस्पतालों की जरूरतों को पूरा करेगी।

वह टीआरएफ के लिए 1 मिलियन डॉलर इकट्ठा करना चाहते हैं और सदस्यता वृद्धि और टीआरएफ दान में अपने मंडल लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते है। मैं सामुदायिक सेवा के प्रति जुनूनी हूँ। दोनों रो ई निदेशक एम मुरुगनंदम और के पी नागेश मेरे आदर्श हैं क्योंकि वे युवा, ऊर्जावान और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में बहुत केंद्रित हैं।

रोटरी की पहचान का जश्न

रोटरी नितिन अग्रवाल के लिए जीवन जीने का एक तरीका है। वे अपने आधिकारिक क्लब दौरों के दौरान एक विशेष थीम वाले, कस्टम-डिज़ाइन सूट पहनते हैं, और रोटरी-ब्रांडेड कार में यात्रा करते हैं, इस प्रकार रो ई की पहचान को रोजमर्रा के उत्सव के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

117 क्लबों में 2,155 रोटेरियनों के साथ, उन्होंने 15 नए रोटरी क्लबों के विस्तार और स्थिर सदस्यता वृद्धि का लक्ष्य रखा है। हमने 200 से अधिक इंटरेक्ट क्लब अधिकृत किए हैं, इस प्रकार स्कूली बच्चों को रोटरी की विचारधारा और वैश्विक पहुँच से जोड़ा है, उन्होंने कहा। टीआरएफ के कैडर सदस्य और रोटरी लीडरशिप इंस्टीट्यूट के फैकल्टी के रूप में, वे नए क्लबों और उभरते नेतृत्वकर्ताओं का मार्गदर्शन करते हैं। पहली बार, 23 क्लबों को उनकी सामुदायिक परियोजनाओं के लिए मंडल अनुदान स्वीकृत किए गए, जबकि रो ई के ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में 200,000 डॉलर की वैश्विक अनुदान परियोजनाएं की जा रही हैं। कॉर्पोरेट्स लगभग 20,000 डॉलर मूल्य की सेवा परियोजनाओं का वित्तपोषण कर रहे हैं। अग्रवाल के टीआरएफ योगदान लक्ष्य 300,000 डॉलर है।

हर क्लब को हथौड़ी और घंटा भेंट किए गया, और प्रत्येक रोटेरियन को एक गर्वित सदस्य पट्टिका मिली है, ताकि हम अपने संगठन पर गर्व करें। टीआरएफ के वैश्विक प्रभाव से प्रेरित होकर, अग्रवाल 2009 में रोटरी में शामिल हुए और आजीवन सेवा कार्य जारी रखने की इच्छा रखते हैं। वह साथी रोटेरियनों को भी सामूहिक सद्भावना के माध्यम से समाज की सेवा करने, रोटरी के मूल्यों को समझने, और संस्थान के प्रयासों का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

नितिन कुमार अग्रवाल
सीए, रोटरी क्लब मुरादाबाद मेवरिक्स, रो ई मंडल 3100

प्रोजेक्ट हील ए चाइल्ड (सीएसआर अनुदान: `50 लाख) बच्चों की स्थिति का निर्धारण करने के बाद शॉर्टलिस्ट किए गए अस्पतालों में छह-छह बच्चों के बैचों की सर्जरी करता है। रो ई के ध्यानकर्षण क्षेत्रों में मंडल के क्लब लगभग 4.5 से 5 करोड़ की सीएसआर-वित्तपोषित परियोजनाएं कर रहे हैं।

एस वी राम प्रसाद
डीजी, रो ई मंडल 3150

एस वी राम प्रसाद
निर्यात व्यवसाय, रोटरी क्लब जुबली हिल्स, रो ई मंडल 3150

बाल सर्जरियों पर ध्यान

समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए समान सोच वाले लोगों के साथ काम करने का अवसर राम प्रसाद को उनकी रोटरी यात्रा में प्रेरित करता है।

वर्तमान में 106 क्लबों में 4,200 से अधिक रोटेरियन होने के साथ, वह 200 नए सदस्य जोड़ना चाहते हैं, और नौ नए क्लब अधिकृत करना चाहते हैं। जब उन्होंने डीजी के रूप में पदभार संभाला, मुझे दो क्लबों को हटाना पड़ा, और अब तक मैंने आठ नए क्लब जोड़े हैं। तब सदस्य संख्या 3,750 थी।

जीनोम अनुसंधान की सुविधा के लिए हैदराबाद स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ जेनेटिक्स को हाई-टेक उपकरण (वैश्विक अनुदान: 1.2 करोड़) दान किए गए; रामदेवराव अस्पताल के नेत्र देखभाल केंद्र में एक रेटिना विंग (वैश्विक अनुदान: 1.2 करोड़) का उद्घाटन किया गया; और *प्रोजेक्ट हील ए चाइल्ड* (सीएसआर अनुदान: `50 लाख) बच्चों की स्थिति का निर्धारण करने के बाद शॉर्टलिस्ट किए गए अस्पतालों में छह-छह बच्चों के बैचों की सर्जरी करता है। रो ई के ध्यानकर्षण क्षेत्रों में मंडल के क्लब लगभग `4.5 से `5 करोड़ की सीएसआर-वित्तपोषित परियोजनाएं कर रहे हैं।

टीआरएफ-दान के लिए उनका लक्ष्य 1.5 मिलियन डॉलर है। वह 1984 में रोटरी क्लब श्रीकालहस्ती में शामिल हुए, और बाद में दक्षिण भारत के विभिन्न शहरों में स्थानांतरित हुए। बाद में, प्रसाद पांच साल तक ब्रिटिश अमेरिकन टोबैको में काम करने के लिए यूके चले गए, और फिर स्थायी रूप से हैदराबाद में बस गए और 2010 में वर्तमान क्लब में शामिल हुए। अगले 15 वर्षों में, उनका ध्यान प्रभावशाली परियोजनाएं करने के लिए क्लबों को प्रोत्साहित करके और नेतृत्वकर्ताओं की अगली पीढ़ी को तैयार करके तेलंगाना में रोटरी क्लबों को मजबूत करने पर होगा। उनके अनुसार, इस वैश्विक एनजीओ ने उन्हें समुदायों के बेहतर विकास के लिए सार्थक संबंध और मित्रता बनाने का एक अद्भुत मंच दिया है। ■

Membership & TRF contribution summary

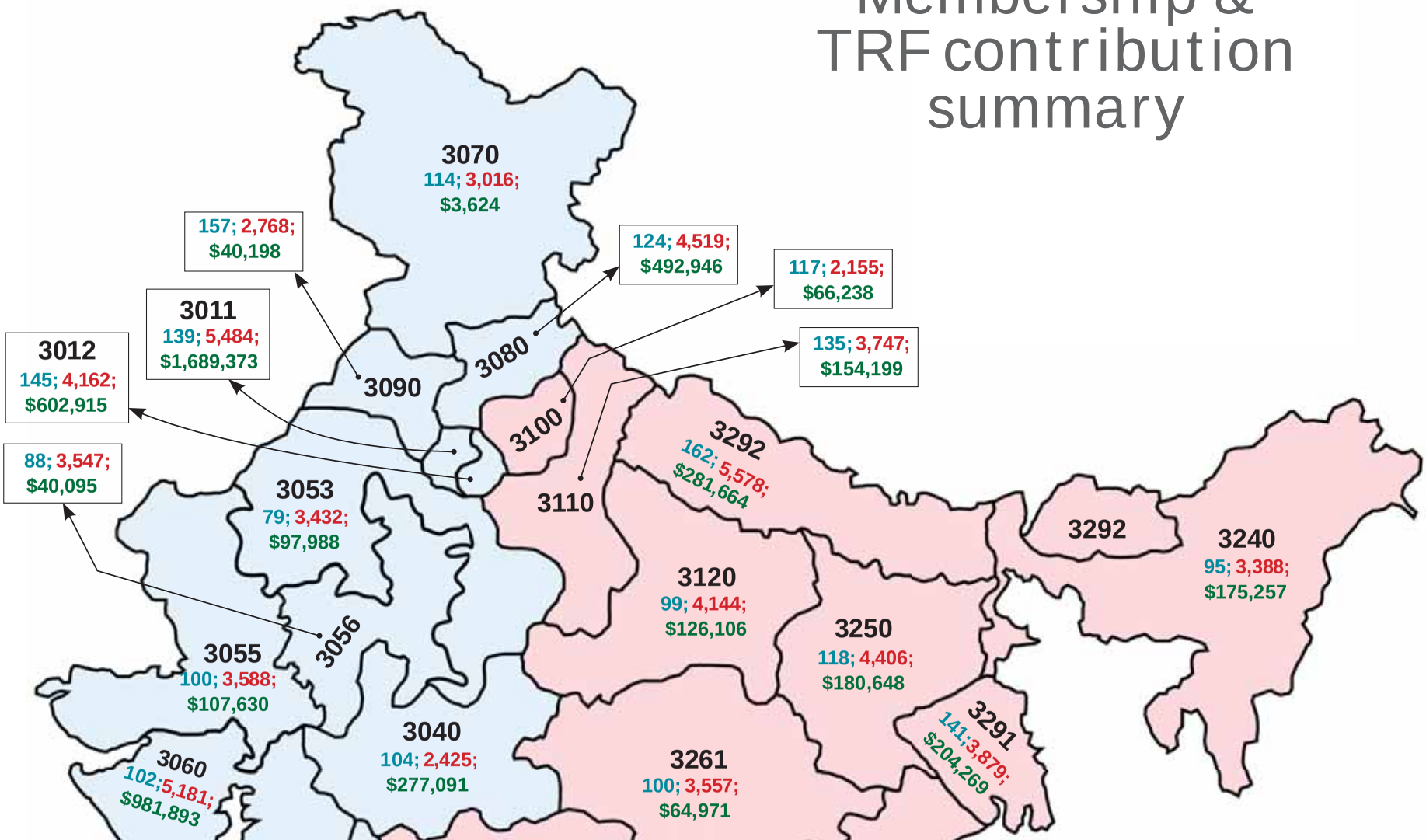

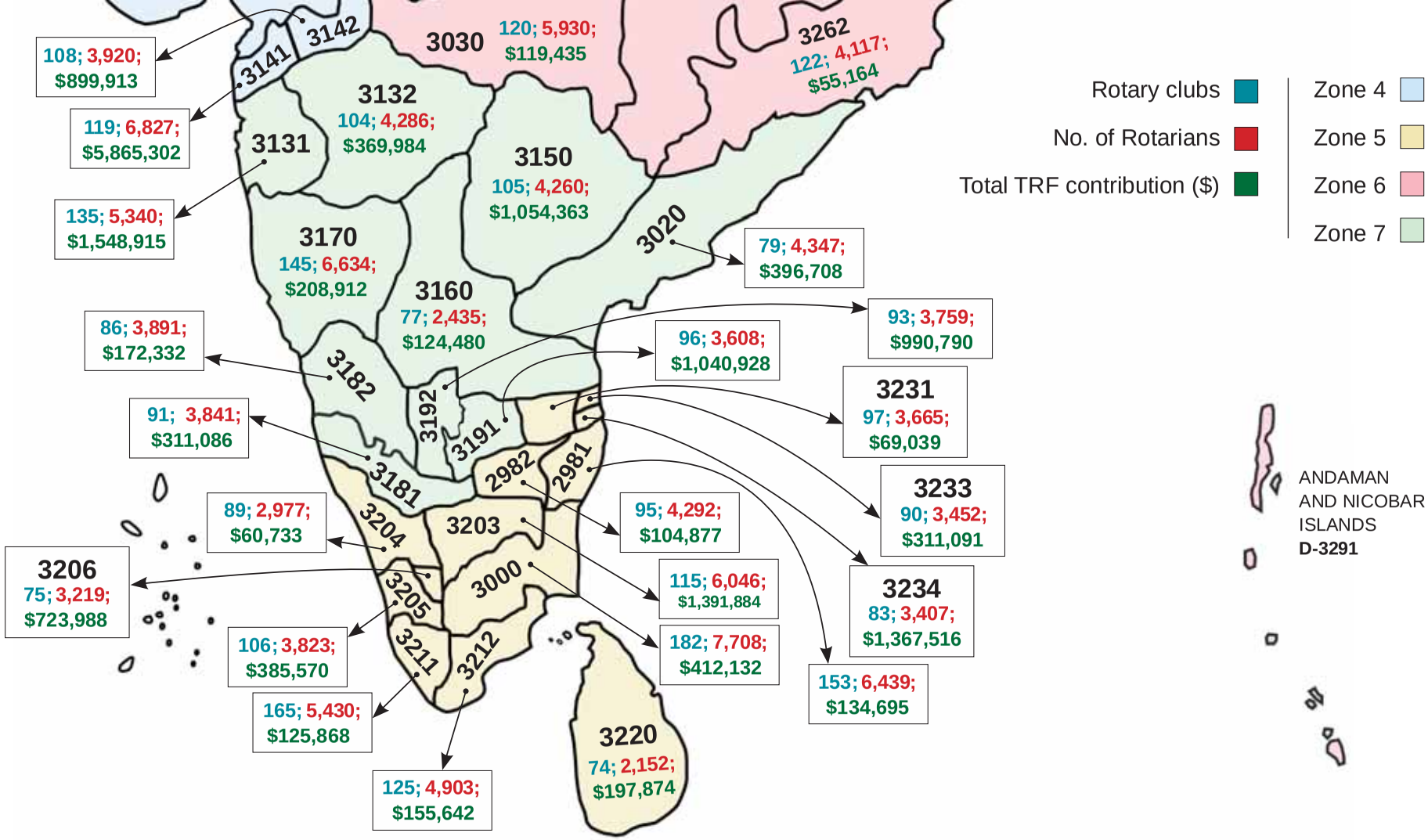

*Membership figures as on April 1, 2026.
*TRF contribution figures as on March 31, 2026.

परिवर्तन की शक्ति

nU ‘| H${ì ‘ AJ àË¶mamnU {e{da

रोटरी क्लब पुणे हेरिटेज, रो ई मंडल 3131 द्वारा आयोजित दो दिवसीय कृत्रिम अंग शिविर से 140 अंगविहीन लोगों को लाभ हुआ। इस परियोजना के तहत दो चिकित्सा शिविर आयोजित किए गए - पहला माप लेने के लिए और दूसरा, एक महीने बाद, कृत्रिम अंग फिट करने के लिए।

भारत विकास परिषद और धोले पाटिल फिजियोथेरेपी महाविद्यालय ने व्यवस्थाओं का ध्यान रखा। परियोजना की `18 लाख की लागत सी एस आर साझेदारों - फोरविया, पीओसीएल और प्रोफाइव इंजीनियरिंग द्वारा वहन की गई। क्लब के अध्यक्ष सुभ्रो सेन ने बताया कि इस कृत्रिम अंग शिविर ने 150 व्यक्तियों को नया जीवन दिया, जिससे उनकी गतिशीलता और सम्मान बहाल हुआ है।

रोटरी क्लब पुणे हेरिटेज के सदस्य कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर में लाभार्थियों के साथ।

d„ma, V{‘bZmS ‘| ñH$b {H$Q {dV[aV {H$E JE

रो ई मंडल 3231 ने वेल्लोर के श्री नारायणी स्कूल में प्रोजेक्ट *SCAW* (स्कूल बच्चों की सहायता और कल्याण) के तहत 1,000 बच्चों को कल्याण किट वितरित किए। इन किटों में शैक्षणिक सामग्री शामिल है, जो छात्रों को कक्षा में बेहतर ढंग से सीखने में मदद करती है।

`50 लाख की इस परियोजना के तहत वंचित छात्रों को शैक्षणिक सामग्री प्रदान कर उन्हें नियमित रूप से विद्यालय आने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह पहल रोटरी क्लब अंबत्तूर, रो ई मंडल 3234 के साथ संयुक्त रूप से संचालित की गई।

प्रोजेक्ट SCAW में बच्चों के साथ रोटेरियन।

{Ìnam H$ ~f m H$ {bE 'âV Mí'

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने रोटरी क्लब एस्पायरिंग अगरतला (रो ई मंडल 3240) की *परियोजना दृष्टिपथ* का उद्घाटन किया। इस परियोजना के 14 वर्ष से कम आयु के स्कूली बच्चों को नेत्र परीक्षण के बाद मुफ्त चश्मे दिए जाएंगे। नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ ए के चामा इस नेत्र देखभाल परियोजना का नेतृत्व करेंगे।

आने वाले दिनों में त्रिपुरा सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में कूल्हे और घुटने के प्रतिस्थापन की सर्जरी कराने वाले मरीजों को स्प्लिंट और ब्रेस जैसे विशेष उपकरण दिए जाएंगे। ■

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा (केंद्र में) ने रोटरी क्लब एस्पायरिंग अगरतला की स्थायी नेत्र देखभाल परियोजना का उद्घाटन किया।

'Ü¶ àXe H$bm 'hmËgd '| am B 'S>b 3040

अपनी सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने के प्रयासों के तहत, रो ई मंडल 3040 ने रोटरी क्लब इंदौर यूनाइटेड के माध्यम से मध्य प्रदेश कला महोत्सव को समर्थन दिया, जो राज्य सरकार की एक तीन दिवसीय सांस्कृतिक पहल है और 24-26 जनवरी के दौरान आयोजित की गई थी।

संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, चित्रकला और प्रदर्शन कला सहित विभिन्न पेशेवर और रचनात्मक क्षेत्रों के 1,200 से अधिक कलाकारों ने अपनी विविध प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया। उत्सव स्थल, इंदौर स्थित गांधी हॉल में 21,000 से अधिक दर्शक उमड़ पड़े। डीजी सुशील मल्होत्रा और आईपीडीजी अनीश मलिक भी उपस्थित थे। ■

RID 3040 के DG सुशील मल्होत्रा (बाएँ से चौथे) और IPDG अनीश मलिक (बाएँ से तीसरे) कार्यक्रम में।

धूप के अनुकूल जीवनशैली

प्रीति मेहरा

सौर ऊर्जा आपको मौजूदा वैश्विक ऊर्जा संकट से निपटने में मदद कर सकती है।

ईरान युद्ध के कारण उत्पन्न ऊर्जा संकट ने हमारे घरों और दफ्तरों समेत कई क्षेत्रों में खतरे की घंटी बजा दी है। सबसे बढ़कर, लगभग 2,800 किलोमीटर दूर लड़े जा रहे इस युद्ध ने हमें यह एहसास दिलाया है कि जब हम कच्चे तेल से प्राप्त ऊर्जा के एकमात्र स्रोत पर निर्भर होते हैं, तो हमारा जीवन कितना नाजुक हो जाता है।

हमारे दैनिक जीवन को चलाने के लिए किसी वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत की पहचान करना अचानक आम लोगों की प्राथमिकता बन गया है। हममें से कई लोग अपनी गाड़ियों में ईंधन भरवाने के लिए पेट्रोल पंपों की ओर दौड़ पड़े। एक और तात्कालिक प्रतिक्रिया के रूप में, खाना पकाने की गैस की कमी को दूर करने के लिए लोग बिजली के उपकरणों की दुकानों पर इंडक्शन कुकटॉप खरीदने के लिए उमड़ पड़े। इन उपकरणों के लिए इतनी होड़ मची कि चेन्नई के डिपार्टमेंट स्टोरों में देखते ही देखते स्टॉक खत्म हो गया। यही हाल अन्य शहरों और कस्बों में भी रहा होगा।

लेकिन इंडक्शन कुकिंग एक अल्पकालिक समाधान है, क्योंकि यह भी मुख्य रूप से हमारे देश में जीवाश्म ईंधन - कोयला, प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम से उत्पन्न बिजली पर निर्भर करती है। इन तीनों में से कोई भी स्वच्छ ऊर्जा और पर्यावरण-अनुकूल ऊर्जा स्रोत नहीं है। पेट्रोलियम कच्चे तेल से बनता है, जिसकी अचानक कमी हो गई है। ऐसे में खाना पकाने तथा रोशनी, पंखे, रेफ्रिजरेटर और एयर कंडीशनिंग जैसी आवश्यकताओं के लिए ऊर्जा की खपत के मामले में आम नागरिक के पास क्या विकल्प बचता है?

सौभाग्य से, अंतरिक्ष में लगभग 15 करोड़ किलोमीटर दूर स्थित ऊर्जा के शाश्वत स्रोत, सूर्य से आशा की किरण दिखाई देती है। सरकारें और निगम जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने के साथ-साथ देश के कार्बन उत्सर्जन को घटाने के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग कर रहे हैं। नागरिक होने के नाते, हम भी बिजली के बिल कम करते हुए इस प्रयास में योगदान दे सकते हैं।

मुझे पता है कि हममें से कुछ लोग पहले से ही सौर ऊर्जा का उपयोग कर रहे हैं, लेकिन पृथ्वी को अधिक स्वच्छ और हरा-भरा बनाने के लिए और अधिक लोगों को इसमें शामिल होने की आवश्यकता है। इसलिए, इस लेख में हम ऊर्जा के क्षेत्र में सौर ऊर्जा को अपनाने के फायदे और नुकसान बताएंगे और यह भी समझाएंगे कि आपको सौर ऊर्जा से चलने वाले कुकरों पर क्यों विचार करना चाहिए।

ईरान युद्ध से हमें यह एक सबक मिला है कि ग्रिड से मिलने वाली बिजली पर अपनी निर्भरता कम

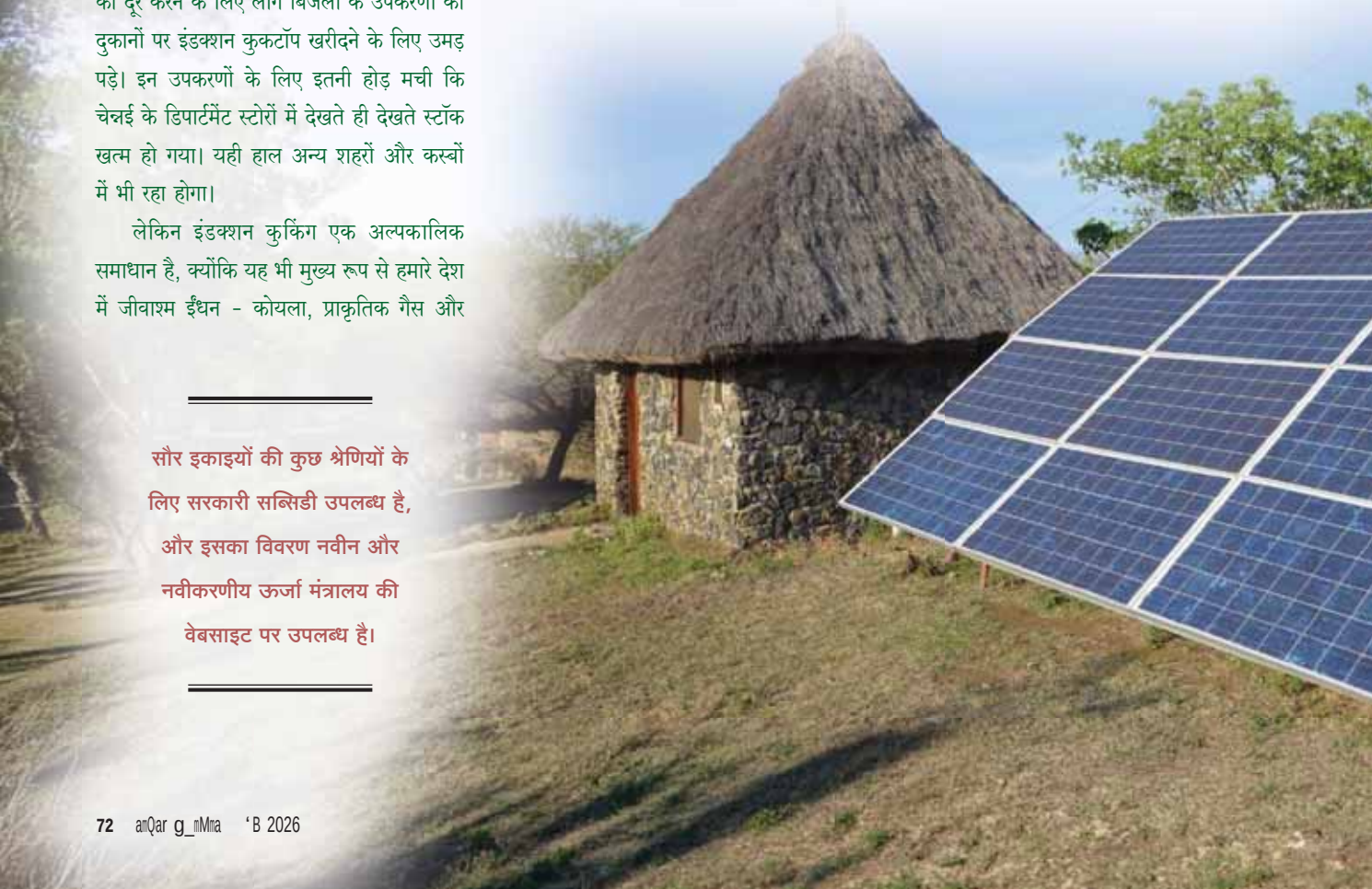

सौर इकाइयों की कुछ श्रेणियों के लिए सरकारी सब्सिडी उपलब्ध है, और इसका विवरण नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

करने के लिए हमें दीर्घकालिक योजना बनानी होगी। सौर ऊर्जा पैनल लगाने में शुरुआती लागत अवश्य आती है। 1 किलोवाट बिजली पैदा करने वाले एक साधारण सौर पैनल सिस्टम की कीमत `50,000 से `80,000 के बीच होती है। इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार, इससे उत्पन्न बिजली तीन सीलिंग पंखे, एक एलईडी टीवी, चार एलईडी बल्ब, एक लैपटॉप, एक राउटर और एक छोटा रेफ्रिजरेटर चलाने के लिए पर्याप्त होती है।

अधिक बिजली उत्पादन करने वाले सिस्टमों में शुरुआती निवेश भी अधिक होता है। 3 किलोवाट का सिस्टम लगाने में `1.5 लाख से `2.4 लाख तक का खर्च आता है, जबकि 10 किलोवाट के सिस्टम के लिए `5 लाख से `8 लाख तक का खर्च आता है। कुछ श्रेणियों की इकाइयों के लिए सरकारी सब्सिडी उपलब्ध है और विभिन्न योजनाओं की जानकारी नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

सौर पैनल लगवाने से लोगों को जो बात रोकती है, वह यह गलत धारणा है कि इनके रखरखाव में बहुत खर्च आता है। वास्तव में, पैनलों को महीने में एक बार साफ करना पड़ता है और वार्षिक सर्विस चेक करवाना आवश्यक है, जिसकी लागत `2,000 से `5,000 के बीच होती है।

लेकिन लंबे समय में होने वाली ऊर्जा बचत को देखते हुए यह कीमत बहुत कम है। एक औसत घर के बिजली बिल में 60 से 80 प्रतिशत तक की कमी आने की संभावना है, हालांकि यह साल में धूप वाले दिनों की संख्या पर निर्भर करता है। साथ ही, बिजली स्टोर करने वाला बैटरी सिस्टम बादल वाले दिनों में मददगार साबित हो सकता है। बिजली की खपत में कमी आना तय है, और इसके साथ ही कार्बन उत्सर्जन में भी कमी आएगी।

जहाँ तक सोलर कुकर की बात है, मेरा इनसे पहला परिचय 21 साल पहले हुआ था, जब मैं धर्मशाला के पास योल में एक सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के घर गया था। हममें से कुछ लोगों को चाय पर आमंत्रित किया गया था, और घर की मालकिन ने गर्व से अपने लॉन के किनारे हाल ही में स्थापित सोलर कुकर में पकाया हुआ केक दिखाया। ओवन से निकला हुआ ताजा केक स्वादिष्ट था, और तभी से सोलर कुकर के प्रति मेरा आकर्षण शुरू हो गया।

सोलर कुकर के कई अद्भुत फायदे हैं। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके माध्यम से हम कोयला, केरोसिन और एलपीजी जैसे जीवाश्म ईंधनों की बचत कर सकते हैं। इसके अलावा, यह वातावरण को प्रदूषित नहीं करता, और कम तापमान पर भोजन पकने से उसके सभी पोषक तत्व सुरक्षित रहते हैं।

बेशक, इसके कुछ नुकसान भी हैं। यदि धूप नहीं होती, तो आप कुकर का उपयोग नहीं कर सकते। इसके अलावा, सूर्य की किरणों को सही तरीके से प्राप्त करने के लिए कुकर की दिशा समय-समय पर बदलनी पड़ती है।

भारत में गर्मी के महीने सोलर कुकर के इस्तेमाल के लिए आदर्श होते हैं। मैंने ऐसे लोगों को देखा है, जो ऊर्जा बचाने के लिए सोलर कुकर में एक-पॉट भोजन बनाते हैं। यह विशेष रूप से तब और भी रोचक हो सकता है, जब बच्चों की स्कूल की गर्मी की छुट्टियाँ हों और उन्हें विभिन्न गतिविधियों में व्यस्त रखना हो। उन्हें सोलर कुकर या सोलर ओवन में खाना बनाना सिखाया जा सकता है।

लोग गलत सोचते हैं कि सोलर पैनल के रखरखाव पर बहुत ज़्यादा खर्च आता है। इन पैनलों की सफाई महीने में एक बार करनी होती है। इनकी सालाना सर्विस का खर्च `2,000 से `5,000 आता है।

यह उनके जीवन भर काम आएगा और उन्हें आज के ऊर्जा संकट जैसी परिस्थितियों से निपटने का तरीका सिखाएगा।

वास्तव में, ऑनलाइन सोलर कुकरों के कई दिलचस्प डिज़ाइन और मॉडल उपलब्ध हैं, जिनमें से कुछ की कीमत `6,000 से भी कम है। बॉक्स सोलर कुकर भारत में काफी लोकप्रिय हैं। हालांकि, इन्हें खरीदने से पहले समीक्षाएं पढ़ना और अच्छी तरह से शोध करना सबसे बेहतर रहेगा।

एक समय था, जब सौर ऊर्जा पर खाना बनाना केवल प्रयोग और अनुभव पर आधारित होता था। लेकिन इसका नियमित उपयोग करने वाले मेरे दोस्तों ने मुझे कई यूट्यूब वीडियो दिखाए, जिनमें सोलर कुकिंग की रेसिपियाँ उपलब्ध हैं। सौर ऊर्जा से खाना पकाने से पहले आप *sunshineonmyshoulder.com* जैसी वेबसाइट देख सकते हैं। यह वेबसाइट बच्चों को विशेष रूप से पसंद आने वाली रेसिपियाँ भी देती है, जिससे उनकी गर्मियों की छुट्टियाँ और भी यादगार बन सकती हैं।

आप सोच रहे होंगे कि मैं आपको सोलर पैनल, सोलर ओवन और सोलर कुकर के बारे में इतना जोर देकर क्यों बता रहा हूँ। दरअसल, सच्चाई यह है कि मैं ऊर्जा बचाने और धरती पर कार्बन फुटप्रिंट कम करने के प्रति बेहद उत्साही हूँ, चाहे वह युद्ध के कारण उत्पन्न ईंधन संकट का समय हो या फिर सुहावने धूप वाले दिन।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3012

रोटरी क्लब जिंदल नगर

प्रोजेक्ट खुशियों का सफर (जॉयफुल राइड) के तहत, 80 बच्चों को दिल्ली के ईओडी एडवेंचर पार्क में पिकनिक पर ले जाया गया। उन्होंने मजेदार सवारी और साहसिक खेलों का आनंद लिया, और रोटेरियन सदस्यों के लिए यह एक अविस्मरणीय क्षण था।

रो ई मंडल 3055

रोटरी क्लब वडाली राउंड टाउन

डीजी निगम चौधरी ने साबरकांठा रोटरी आई केयर सेंटर में एक फैको मशीन और सर्जिकल माइक्रोस्कोप का उद्घाटन किया। जीजी परियोजना को अमेरिका के चार दानदाताओं द्वारा समर्थन दिया गया था।

रो ई मंडल 3110

रोटरी क्लब रुद्रपुर

विभिन्न विद्यालयों और एक गैर सरकारी संगठन के दो विशेष बच्चों सहित लगभग 70 छात्रों ने रामनगर के जिम कॉर्बेट स्थित बेलपाराओ के वाउ रिज़ॉर्ट में आयोजित चार दिवसीय RYLA में भाग लिया। डीजी राजेन विद्यार्थी और मंडल RYLA अध्यक्ष राम बंसल सम्मानित अतिथि थे।

रो ई मंडल **3120**

रोटरी क्लब वाराणसी रुद्राक्ष

काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर में रोटरी क्लब वाराणसी वृंदा के सहयोग से दो शिशु आहार कक्ष स्थापित किए गए। मंदिर के सीईओ विश्व भूषण मिश्रा ने `1.1 लाख की लागत से शुरू की गई इस पहल की सराहना की।

रो ई मंडल **3053**

रोटरी क्लब भिवाड़ी

इस क्लब ने अब तक 32 मैमोग्राफी शिविर आयोजित किए हैं, जिनमें लगभग 1,000 महिलाओं की जांच की गई है। कैंसर की शीघ्र पहचान के अलावा, इन शिविरों ने ग्रामीण महिलाओं में जागरूकता भी पैदा की है।

रो ई मंडल **3141**

रोटरी क्लब बोइसर-तारापुर

विराज प्रोफाइल्स के बोइसर कारखाने में आयोजित तीन दिवसीय स्तन कैंसर जांच शिविर में 400 से अधिक महिलाओं की जांच की गई। इस शिविर के दौरान 14 महिलाओं में कैंसर की पुष्टि हुई और क्लब उनके इलाज का खर्च वहन करेगा।

रो ई मंडल **3150**

रोटरी क्लब महबुबाबाद

क्लब के अध्यक्ष वेमिसेट्टी कुमार ने बीसी कॉलोनी स्थित गीता भारती प्रशिक्षण केंद्र को एक सिलाई मशीन भेंट की। इस दान से जरूरतमंद महिलाओं को स्थायी आय के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में सहायता मिलेगी।

अस्थमा की व्याख्या

गीता मथाई

''मैं सांस नहीं ले पा रहा/रही हूँ।'' ये शब्द टूटे-फूटे तरीके से निकल सकते हैं और इनके साथ खांसी का दौरा पड़ सकता है, जिसके बाद सीटी जैसी घरघराहट की आवाज आती है। सांस लेने में तकलीफ के कारण नाक के नथुने फूल सकते हैं। बच्चों में पसलियां अंदर की ओर धंसी हुई साफ दिखाई दे सकती हैं।

ये लक्षण ब्रोंकियल अस्थमा के विशिष्ट लक्षण हैं। इसकी गंभीरता मामूली परेशानी से लेकर जानलेवा दौरे तक हो सकती है, जिसमें सांस फूलना, पूरी तरह से बोलने में असमर्थता तथा जीभ व उंगलियों के सिरों का नीला पड़ना शामिल है। यह स्थिति घातक भी हो सकती है।

भारत में लगभग 2 प्रतिशत वयस्क और लगभग 20 प्रतिशत बच्चे अस्थमा से प्रभावित हैं। सौभाग्य से, कई बच्चे बड़े होने पर अस्थमा से बाहर निकल जाते हैं। भारत में, अस्थमा को लेकर आज भी समाज में कलंक माना जाता है। उपचार अक्सर अवैज्ञानिक और अनियमित होता है, जिसमें एलोपैथी, होम्योपैथी और नेचुरोपैथी का मिश्रण शामिल होता है। चूंकि इस बीमारी में स्वतः ही कभी कम और कभी अधिक होता रहता है, इसलिए उपचार से अचानक मचमत्कारी इलाजफ का आभास हो सकता है,

पारंपरिक योग फेफड़ों की क्षमता और साँस लेने की तकनीकों को बेहतर बना सकता है। कोबरा पोज़, ब्रिज पोज़ और बारी-बारी से एक-एक नथुने से साँस लेना विशेष रूप से सहायक होते हैं।

चाहे वह कितना भी अवैज्ञानिक क्यों न हो। चूंकि अस्थमा एक दीर्घकालिक बीमारी है जिसका कोई स्थायी इलाज नहीं है, इसलिए ये 'चमत्कार' जल्द ही दोबारा बीमारी के होने के साथ समाप्त हो जाते हैं।

अस्थमा किसी भी उम्र में हो सकता है, लेकिन आमतौर पर यह बचपन में शुरू होता है और लड़कों में अधिक पाया जाता है। जनसंख्या वृद्धि, भीड़भाड़, शहरीकरण और पर्यावरण प्रदूषण, विशेष रूप से पेट्रोल और डीजल के धुएं के संचयी प्रभावों के कारण विश्व भर में इसके मामले बढ़ रहे हैं।

सभी के श्वसन मार्ग में थोड़ी मात्रा में बलगम मौजूद होता है। श्वसन संबंधी संक्रमण, तेज गंध, सफाई एजेंट, वायु शोधक, मच्छर भगाने वाले स्प्रे, तापमान में बदलाव और तिलचट्टों की रूसी, धूल के कण, लकड़ी के कण और सिगरेट के धुएँ जैसे एलर्जेन कारकों के संपर्क में आने से इसकी मात्रा बढ़ जाती है। पालतू जानवर (पक्षी, बिल्लियाँ और कुत्ते) लार, बाल और मृत त्वचा के कण हवा में छोड़ सकते हैं, जिन्हें साँस के साथ भीतर लिया जा सकता है।

अस्थमा व्यायाम के दौरान भी बढ़ सकता है, खासकर ठंडी और शुष्क हवा में (उदाहरण के लिए, एयर-कंडीशन्ड जिम में)। रासायनिक धुएँ, पेंट की वाष्प, गैसों या धूल वाले कार्यस्थलों में भी यह एक व्यावसायिक खतरा हो सकता है। क्रोध, हँसी, रोना या तनाव जैसी तीव्र भावनाएं वायुमार्ग को संकुचित कर सकती हैं। कई लोग गैस्ट्रोएसोफेगल रिफ्लक्स रोग (जीईआरडी) से पीड़ित होते हैं। जब वे लेटते हैं, खासकर रात में, तो पेट का अम्ल वायुमार्ग तक पहुँच सकता है, जिससे सूजन, लगातार खाँसी और घरघराहट हो सकती है।

एलर्जेन केवल साँस के माध्यम से ही नहीं, बल्कि भोजन के जरिए भी शरीर में प्रवेश कर सकते हैं। इसके लिए जिम्मेदार तत्वों में खाद्य योजक जैसे परिरक्षक, रंग या मोनोसोडियम ग्लूटामेट शामिल हो सकते हैं। कुछ दवाएँ, जैसे बीटा-ब्लॉकर्स, एस्पिरिन और आइबुप्रोफेन, दुष्प्रभाव के रूप में ब्रोंकोस्पैज़म का कारण बन सकती हैं।

सामान्य व्यक्तियों मेंये कारक खाँसी की प्रतिक्रिया को सक्रिय करते हैं। छोटी वायु नलिकाएं फैलती हैं, डायाफ्राम (जो फेफड़ों को पेट से अलग करता है) ऊपर की ओर उठता है, और बलगम खाँसी के साथ बाहर निकल जाता है। हालांकि, अस्थमा रोगियों में वायु नलिकाएं फैलने के बजाय सिकुड़ जाती हैं, आपस में चिपककर संकीर्ण हो जाती हैं। जब हवा इन संकीर्ण मार्गों से होकर गुजरती है, तो घरघराहट की विशिष्ट ध्वनि उत्पन्न होती है। डायाफ्राम भी अनियंत्रित रूप से नीचे की ओर खिसकता है, जिससे खांसी और फेफड़ों की सफाई कम प्रभावी होती है।

अस्थमा के निदान के लिए कुछ बुनियादी परीक्षणों की आवश्यकता होती है: बढ़े हुए इओसिनोफिल्स की जांच के लिए रक्त परीक्षण, खाँसी और घरघराहट के अन्य कारणों को दूर करने के लिए छाती का एक्स-रे, हृदय विफलता संभावना को खारिज करने के लिए हृदय मूल्यांकन, स्पाइरोमेट्री और पीक फ्लो माप, तथा ट्रिगर्स की पहचान करने के लिए एलर्जी परीक्षण।

साँस के ज़रिए ली जाने वाली चिकित्सा (नेबुलाइज़र, इनहेलर और रोटाहेलर) के आने से पहले, अस्थमा के दौरे के इलाज में गोलियों और सिरप का इस्तेमाल होता था। इन दवाओं को निगल लिया जाता था, ये रक्तप्रवाह में अवशोषित हो जाती थीं और अंततः फेफड़ों तक पहुँचती थीं, जहाँ वे ब्रोन्कियल मांसपेशियों को शिथिल करती थीं, जिससे बलगम को खाँसी के ज़रिए बाहर निकालना और साँस लेना आसान हो जाता था।

आजकल दवा सीधे फेफड़ों तक पहुंचाई जाती है, जिससे कम से कम दुष्प्रभावों के साथ तेजी से राहत मिलती है। नेबुलाइज़र अब सुविधाजनक छोटे आकार में उपलब्ध हैं। इनहेलर बहुत प्रभावी होते हैं, लेकिन उनका सही तरीके से उपयोग करना आवश्यक है। फेस मास्क और स्पेसर दवा के वितरण को बेहतर बनाते हैं, और इनहेलर का सही इस्तेमाल सीखना आवश्यक है।

तीव्र दौरे के दौरान तुरंत श्वसन मार्ग को फैलाने वाले इनहेलर उपयोगी होते हैं; इन्हें कड़े व्यायाम से पहले भी लिया जा सकता है। नियमित उपचार में आमतौर पर लंबे समय तक असर करने वाले ब्रोंकोडायलेटर के साथ-साथ ऐसा स्टेरॉयड शामिल होता है, जो शरीर में अवशोषित नहीं होता। फेफड़ों को नुकसान से बचाने के लिए इसे नियमित रूप से

संक्रमण के कारण अस्थमा का दौरा पड़ सकता है। हर साल फ़्लू का टीका लगवाने की सलाह दी जाती है, और बुज़ुर्गों को न्यूमोकोकल टीका लगवाना चाहिए।

उपयोग करना आवश्यक है। इनहेलर का इस्तेमाल करने के बाद मुंह को अच्छी तरह से धो लें, ताकि दवा का कोई भी अवशेष न रहे। गोलियां और सिरप भी दिए जा सकते हैं। दवा को बताए गए तरीके से ही लें, अपनी तरफ से खुराक में बदलाव न करें।

संक्रमणों के कारण अस्थमा के दौरे पड़ सकते हैं। प्रतिवर्ष फ्लू का टीका लगवाने की सलाह दी जाती है, और बुजुर्गों को निमोनिया का टीका भी लगवाना चाहिए।

घर पर फेफड़ों की कार्यप्रणाली की निगरानी के लिए पीक फ्लो मीटर एक उपयोगी उपकरण है। खाँसी, घरघराहट या साँस लेने में तकलीफ जैसे शुरुआती चेतावनी संकेतों को गंभीर दौरा पड़ने से पहले ही पहचान लेना चाहिए।

नियमित व्यायाम, जैसे पैदल चलना, साइकिल चलाना, जॉगिंग और तैराकी, फेफड़ों की क्षमता बढ़ाने में फायदेमंद होते हैं। व्यायाम से लगभग 15 मिनट पहले उचित वार्म-अप और कूल-डाउन करना और तुरंत राहत देने वाले इनहेलर का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। व्यायाम करते समय अपना इनहेलर हमेशा साथ रखें।

परंपरागत योग से फेफड़ों की क्षमता और साँस लेने की तकनीक में सुधार हो सकता है। कोबरा आसन, ब्रिज आसन और वैकल्पिक नासिका श्वास विशेष रूप से सहायक होते हैं। नियमित अभ्यास और निरंतरता आवश्यक हैं।

लेखिका बाल रोग विशेषज्ञ हैं और उन्होंने स्टेइंग हेल्दी इन मॉडर्न इंडिया *पुस्तक लिखी है*

यह शब्द नहीं, आवाज़ है

'सही' और 'गलत' से परे जाकर देखना, विशेषकर लिखित पाठ के संदर्भ में। यह कहाँ से आ रहा है? यह क्या कह रहा है?

संध्या राव

शब्दों की दुनिया में प्रवेश करने से पहले, डिस्टोपियन साहित्य पर कुछ जान लेते है। डिस्टोपियन, अर्थात एक ऐसी दुनिया जो अमानवीय हो चुकी है, जहाँ लोगों का उत्पीड़न किया जाता हैं और सर्वसत्तावादी ताकतों द्वारा उन्हें नियंत्रित किया जाता हैं, जहाँ जीवन एक भयावह स्वप्न जैसा है। क्या यह आपको जाना-पहचान लगता है? आपको यह दुनिया एल्डस हक्सले की *ब्रेव न्यू वर्ल्ड,* जॉर्ज ऑरवेल की *एनिमल फ़ार्म* और 1984, तथा सुज़ैन कॉलिन्स की *द हंगर गेम्स* जैसी पुस्तकों में देखने को मिलेगी। ऐसे साहित्य में विशेष रुचि न होने के बावजूद, मैंने ये सभी बहुत पहले पढ़ ली थीं, लेकिन मार्गरिट एटवुड की *द हैंडमेड्स टेल* (1985 में प्रकाशित) को अब तक पढ़ने से खुद को रोके रखा था।

मैंने मुश्किल से दो या तीन पन्ने ही पढ़े होंगे कि हमारा मैगज़ीन वाला *आउटलुक* पत्रिका दे गया जिसमें ईरान पर विशेष लेख था। इसके कवर पर शिरीन नेशात की 1994 की कलाकृति, *रिबेलियस साइलेंस* छपी थी, और इस अंक की प्रस्तावना *द हैंडमेड्स टेल* के एक उद्धरण के साथ शुरू हुई थी: 'आजादी एक से अधिक प्रकार की होती है,' आंट लिडिया ने कहा। 'कुछ करने की आजादी और किसी चीज से आजादी। अराजकता के दिनों में, यह कुछ करने की आजादी थी। अब आपको किसी चीज से आजादी दी जा रही है। इसे कम मत आंकिए।' इस लेख की लेखिका चिकी सरकार, इस किताब को हमारे समय की बाइबिल कहती हैं, खासकर महिलाओं के लिए। यह कल्पना की एक जटिल कृति है जो संकेत देती है कि हमारी दुनिया किस दिशा में बढ़ रही है, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि दुनिया भर में निरंकुश, तानाशाही, स्त्री-विरोधी, आक्रामक, बात-बात पर गोली चलाने वाले, दमनकारी और संकीर्ण शासक जमे बैठे हैं, और जहाँ जीतने की मानसिकता, मारने की मानसिकता की गिरफ्त में है।

शीर्षक में जिस 'हैंडमेड' का उल्लेख किया गया है, वह उपन्यास में महिलाओं का एक ऐसा वर्ग है जिसे केवल प्रजनन के उद्देश्य से 'संरक्षित' या 'बर्दाश्त' किया जाता है। दूसरे शब्दों में, वे मानव मशीनें हैं, जिन्हें भौतिक और भावनात्मक दुनिया के साथ किसी भी प्रकार के जुड़ाव से वंचित रखा गया है। इस डिस्टोपियन परिदृश्य में कई अन्य श्रेणियां भी मौजूद हैं, लेकिन उन सभी में महिलाएँ गुलाम हैं - निर्भर, दबी हुई, रौंदी हुई। स्वाभाविक ही, एक पदानुक्रम भी है, और शक्तिशाली लोगों की पत्नियाँ वही शक्ति रखती हैं जो आमतौर पर प्रभावशाली लोगों के पास होती है। मैंने एक साक्षात्कार में पढ़ा कि मार्गरिट एटवुड - जो स्वयं कनाडाई हैं - ने अपने पात्रों को कनाडाई राजनेताओं और उनकी चालबाजियों पर आधारित किया था, और उनका तीक्ष्ण लेखन पाखंडी धार्मिकता के प्रति उनके दृष्टिकोण का व्यंग्यात्मक प्रतिबिंब है।

पर्सिवल एवरेट का लेखन भी उतना ही तीक्ष्ण और व्यंग्यात्मक है, जो राजनीतिक विडंबना और खुलकर हंसा देने वाले हास्य से भरा है। उनके पात्र उसी परिवेश की मिट्टी और जलवायु से उभरते हैं, जिसे उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार, *द ट्रीज़,* जिसे पहली नज़र में जासूसी कथा समझा जा सकता है, दरअसल खुद को कुछ और ही साबित करता है। इसमें रची गई दुनिया अमेरिका के दक्षिणी हिस्से की है - हाँ, वही क्षेत्र जो कभी गुलामी का केंद्र था। यह उपन्यास वर्तमान समय में, मनी, मिसिसिपी, में आधारित है, जहाँ नस्लवाद, अश्वेत राजनीति और स्थानीय गपशप गहराई से जमी हुई हैं। विभिन्न स्थानों पर श्वेत लोगों की भयानक हत्याओं का एक सिलसिला चलता है। हालाँकि, हर अपराध स्थल पर एक अश्वेत व्यक्ति का शव भी पाया जाता है, जिसके हाथ में किसी का कटा हुआ अंग होता है। जैसे ही जाँच आगे बढ़ती है, वह अश्वेत शव गायब हो जाता है - और फिर किसी दूसरी जगह, किसी दूसरी हत्या के साथ प्रकट होता है। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, रहस्य और भी गहरा होता जाता है; यहाँ तक कि वूडू जैसी किसी चीज़ का संकेत भी मिलता है। इस बीच, उपन्यास अश्वेत लोगों की लिंचिंग की घटनाओं की एक लंबी श्रृंखला जैसा प्रतीत होता है, जो धीरे-धीरे विरोध और विद्रोह में बदलती है। उपन्यास के अंत में, पाठकों को उत्तरों से अधिक प्रश्न मिलते हैं, लेकिन यह स्पष्ट हो जाता है कि भेदभाव व्यापक है और उसके शिकार अब चुप नहीं बैठेंगे।

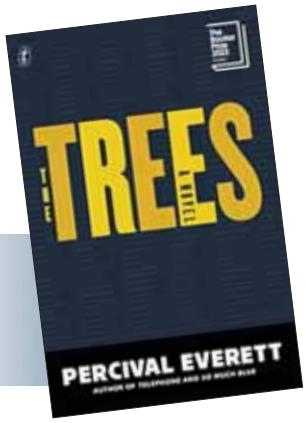

द ट्रीज़ हमनें बुक क्लब में पढ़ी थी, और जहाँ कुछ लोगों ने इसकी सशक्त कहानी और विशिष्ट शैली की सराहना की, वहीं कुछ, विशेषकर इसकी भाषा से, असहज हो गए। एक व्यक्ति ने तो यहाँ तक कहा कि उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं आई, क्योंकि उसे अंग्रेज़ी अजीब और गलत लगी। जो हमारे सामने यह सवाल खड़ा करता है कि क्या सही है और क्या गलत है और लिखित शब्दों की भाषा में आवाज़ क्यों मायने रखती है। क्या हमारा दृष्टिकोण और अनुभव केवल उस चीज तक ही सीमित हैं जिसे हम समझते हैं - और वह भी बहुत कम - और इसलिए किसी भी अलग चीज़ को 'समझने' (स्वीकार करना तो बाद की बात है) में हमारी अक्षमता या अनिच्छा होती है? क्या शब्द उनका संयोजन केवल अर्थ बनाने का एक साधन, एक आधार नहीं हैं? क्या भाषा दरअसल अर्थ के निर्माण की प्रक्रिया नहीं है? क्या अंतिम उत्पाद किसी दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति, संवाद करने का एक तरीका, एक आवाज़ नहीं होती है? अंततः, क्या भाषा पहचान का प्रतीक नहीं है? भाषा को नकारना, पहचान को नकारना है।

आंट लिडिया ने कहा, 'आज़ादी एक से ज़्यादा तरह की होती है। मकिसी चीज़ को करने की आज़ादी' और 'किसी चीज़ से आज़ादी'। अराजकता के दिनों में, 'किसी चीज़ को करने की आज़ादी' थी। अब तुम्हें 'किसी चीज़ से आज़ादी' दी जा रही है। इसे कम मत समझना।''

'द हैंडमेड्स टेल'
से एक उद्धरण

द ट्रीज़ एक शानदार किताब है और इसलिए, जब मैंने बैंगलोर में अपने दोस्त के बुकशेल्फ़ पर पर्सिवल एवरेट की एक और किताब — जेम्स — देखी, तो मैंने उसे तुरंत उठाया और सिर्फ दो दिनों में पूरा पढ़ डाला। यह गुलाम जिम की कहानी है, जिसे मार्क ट्वेन के *द एडवेंचर्स ऑफ़ हकलबेरी फिन* से इस उपन्यास में लाया गया है, जहाँ वह हक के लिए एक नैतिक मार्गदर्शक और एक पिता के समान है। जेम्स में भी वह हक का आदर्श और रक्षक बना रहता है; यह सुझाव दिया गया है कि ट्वेन की कहानी से हर बार जब हक गायब होता था, तो वह यहीं होता था और यही सब अनुभव कर रहा होता था। कुछ लोग जेम्स को *हकलबेरी फिन* की पुनर्कथा के रूप में देखते हैं, जिसे जिम के दृष्टिकोण से बताया गया है। ऐसा लगता है कि एवरेट ने हकलबेरी फिन को धुंधला करने के लिए लगभग 15 बार पढ़ा, जब तक कि वह इससे पूरी तरह से ऊब नहीं गए और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ''इसमें ऐसी कोई खामी नहीं है जो मुझे ना मिली हो, लेकिन वह दुनिया अब भी बरकरार है!'' यह वही दुनिया, या दुनियाएँ हैं, जिन्हें हम पर्सिवल एवरेट को पढ़ते समय खोजते हैं।

जिम, उसकी पत्नी और उसकी छोटी बेटी, सभी एक श्वेत मालिक 'मासा' के बंधुआ हैं। जब जिम सुनता है कि उसे, और केवल उसे, न्यू ऑरलियन्स में किसी अन्य मालिक को बेचा जाने वाला है, तो उसके पास भागने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता, और वह कसम खाता है कि वह बाद में अपनी पत्नी और बच्चे के लिए वापस आएगा। हक, जिम के प्रति स्नेह और वफादारी के कारण उसके साथ जाता है। यात्रा के दौरान, उन्हें कई अनुभवों का सामना करना पड़ता है; जिम अक्सर लिंचिंग का शिकार होने ही वाला होता है, जो उस समय एक 'भगोड़े' के लिए एक सामान्य सजा थी। वह एक-दो बार पकड़ा भी जाता है लेकिन भागने में सफल रहता है; अंततः वह अपना 'निगर' नाम त्याग देता है, और अपना नाम जेम्स रख लेता है। 'सिर्फ जेम्स।' वह कई अन्य गुलामों को भी आज़ादी के लिए प्रयास करने को

प्रेरित करता है, उन खतरों की परवाह किए बिना जो उनके सामने हैं, जबकि पीछे आग भड़क रही है। एक बूढ़ा श्वेत आदमी, हाथ में बंदूक लिए, उन्हें रोकता है: ''निगर तुम कहाँ जा रहे हो?! मैं उसके सामने खड़ा हो गया। तुम आखिर हो कौन?'' उसने पूछा। उसने अपनी बंदूक मेरी ओर तान दी। मैंने अपनी पिस्तौल उस पर तान दी। ''मैं मौत का फरिश्ता हूँ, जो रात में मधुर न्याय देने आया है,'' मैंने कहा। ''मैं एक संकेत हूँ। मैं तुम्हारा भविष्य हूँ। मैं जेम्स हूँ।''

एवरेट कहानी में उस दौर (गृहयुद्ध के दौरान) के विवरणों, सामाजिक ताने-बाने, और स्वामी-दास के संबंधों सहित अन्य पहलुओं का संदर्भ देते हैं, लेकिन कहानी कहने के हल्के-फुल्के अंदाज से कोई समझौता नहीं करते। यहाँ भी, कहानी कहने में भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक गुलाम के रूप में, और श्वेत मालिकों की मौजूदगी में, जिम इस तरह बोलता है ''उन जंगलों में क्या है? क्या वो भूत है? मुझसे दूर रहो, बूढ़े साये।'' जबकि वास्तव में, वह बहुत पढ़ा-लिखा और स्पष्ट बोलने वाला व्यक्ति है। एक महत्वपूर्ण दृश्य में, जिम बच्चों के एक समूह को सिखाता है कि श्वेत आकाओं के खिलाफ एक सुरक्षा कवच के रूप में 'गुलामों की भाषा' का उपयोग कैसे किया जाए, जो गुलामों को अशिक्षित, जंगली, मंदबुद्धि और केवल सेवा करने के लिए बना हुआ मानते हैं। यह एक ऐसा प्रसंग है जो एक ही समय में शक्ति देने वाला और दिल तोड़ने वाला दोनों है। उपन्यास के अंत में, जिम के शब्द मिलकर जेम्स की आवाज़ बन जाते हैं - वही आवाज़, जिसे पाठक सुनते हैं।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

रो ई मंडल 3170

रोटरी क्लब मालवन

मालवन के मुख्य बस स्टैंड पर कूलर के साथ एक वाटर प्यूरीफायर भी लगाया गया। इस अवसर पर पीडीजी संग्राम पाटिल, एजी प्रशांत कोल्टे, क्लब अध्यक्ष पंकज पेडनेकर और कार्यक्रम के अध्यक्ष महादेव पाटकर उपस्थित थे। इस वाटर कियोस्क से प्रतिदिन 250 से अधिक यात्रियों को लाभ मिलेगा।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3191

रोटरी क्लब बेंगलुरु कनकपुरा रोड

क्लब के अध्यक्ष वी. दुरैराज और सचिव उमा सत्या की उपस्थिति में विभिन्न स्कूलों के 2,000 छात्रों को नोटबुक वितरित की गईं।

रो ई मंडल 3211

रोटरी क्लब हरीपाद

दानाप्पडी केयर क्राफ्ट अस्पताल (दो यूनिट) और श्रीकांतपुरम अस्पताल, मावेलिक्कारा को एक सरकारी अनुदान के माध्यम से तीन डायलिसिस यूनिट प्रदान किए गए। इससे पहले, दानाप्पडी हुडा ट्रस्ट अस्पताल को एक मशीन दी गई थी। ये अस्पताल प्रति वर्ष 800 निःशुल्क डायलिसिस सत्र प्रदान करेंगे।

रो ई मंडल 3231

रोटरी क्लब मूनसिटी तिरुवनमलाई

डीजी वी सुरेश ने रोटरी डायलिसिस सेंटर को 12 पोर्टेबल ईसीजी मशीनें (`63,000) दान कीं। इन मशीनों से केंद्र की निदान क्षमता में वृद्धि होगी, जिससे मरीजों को लाभ मिलेगा।

रो ई मंडल 3181

रोटरी क्लब मैंगलोर सेंट्रल

ग्रामीण इलाके के गरीब बाबू को कृत्रिम अंग (`21 लाख) दान में दिया गया, जिनका बायां निचला पैर मधुमेह के कारण हुए गैंग्रीन की वजह से काटना पड़ा था। पीडीजी बी देवदास राय ने धनराशि जुटाकर लाभार्थी को कृत्रिम अंग भेंट किया।

रो ई मंडल 3291

रोटरी क्लब जोधपुर गार्डन कलकत्ता

पिछले दो वर्षों से मासिक वृद्धजन देखभाल कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। हाल ही में आयोजित कार्यक्रम में, वृद्धाश्रम में वृद्धावस्था संबंधी बीमारियों और चलने-फिरने में कठिनाई से जूझ रहे और स्वच्छता सहायता की आवश्यकता वाले वृद्धों को डायपर वितरित किए गए।

रो ई मंडल 3250

रोटरी क्लब रांची

केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने रोटरी भवन में इलेक्ट्रॉनिक हैंड फिटमेंट कैंप का उद्घाटन किया, जिससे 62 दिव्यांगों को लाभ मिला। इन इलेक्ट्रॉनिक इनाली हैंड्स से न केवल उनके अंगों की कार्यक्षमता को बहाल करेंगे, बल्कि लाभार्थियों को आत्मविश्वास और सम्मान भी मिलेगा।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

LBW

असभ्य सरकारी ड्राइवर

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

1958 से दिल्ली में रहते हुए, मैंने बढ़ती निराशा और हताशा के साथ न केवल कारों की संख्या में वृद्धि देखी है, बल्कि ड्राइवरों की एक नई प्रजाति, 'सरकारी ड्राइवरों' को भी पनपते देखा है। ये वे लोग हैं जो सरकार के स्वामित्व वाली या किराए पर ली गई गाड़ियों को चलाते हैं। खरगोशों की तरह इनकी संख्या तेजी से बढ़ी है और ये सड़क का उपयोग करने वाले अन्य लोगों के लिए उतनी ही बड़ी मुसीबत बन गए हैं। वास्तव में, उनका व्यवहार इतना खराब होता है कि दिल्ली में कई लोगों ने अपने निजी वाहनों पर 'ऑन गवर्नमेंट ड्यूटी' या सरल शब्दों में 'गवर्नमेंट व्हीकल' लिखवाना शुरू कर दिया है। इसके पीछे का उद्देश्य पार्किंग में प्राथमिकता प्राप्त करना या ट्रैफिक सिग्नल पर लाल बत्ती को अनदेखा कर निकल जाना या लापरवाही से गाड़ी चलाने की छूट पाना या बस यह सोचकर अच्छा महसूस करना होता है कि कोई भी आपके आचरण की जांच-पड़ताल नहीं करेगा।

लेकिन आम नागरिकों के लिए यह इतना आसान नहीं होता है क्योंकि पुलिस एक असली सरकारी गाड़ी और एक दिखावा करने वाले के बीच का अंतर आसानी से बता सकती है। क्योंकि एक असली सरकारी गाड़ी को कभी भी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं चलाता जो डिजाइनर कपड़े पहने हो और जो आमतौर पर बहुत शिष्ट हो। एक असली सरकारी ड्राइवर, जो वास्तव में एकदम असली होता है, इसके ठीक विपरीत होता है। इसीलिए भले ही आप किसी किताब का अंदाजा उसके कवर से नहीं लगा सकते, लेकिन आप निश्चित रूप से एक सरकारी गाड़ी का अंदाजा उसके ड्राइवर से लगा सकते हैं। उनके हाव-भाव में एक अजीब सा गुरूर होता है, जैसे कि सभी सड़क और पार्किंग बस उन्हीं की हो।

तो इन लोगों में ऐसा क्या है? सड़कों और पार्किंग स्थलों पर उनके अनियंत्रित व्यवहार का क्या कारण है? यह अधिकारबोध उनमें कहाँ से आता है? मैंने सरकारी और गैर-सरकारी दोनों तरह के ड्राइवरों से ये सवाल पूछे हैं। पहले वाले तो इस सवाल को समझते ही नहीं हैं। वे अपने अधिकारों को अपनी बपौती मानते हैं। बाद वाले बस हताशा भरे अपशब्द बोलते हैं क्योंकि पुलिस उन्हें पकड़ लेती है जबकि उनके सरकारी समकक्षों को अपनी मनमानी करने की छूट मिलती है। उदाहरण के लिए, हवाई अड्डे या रेलवे स्टेशन के पिकअप पॉइंट पर, विशेष वीआईपी जगहों से संतुष्ट न होकर, ये लोग बेखौफ होकर सामान्य जगहों पर भी डेरा डाले रहते हैं जबकि दूसरों को वहां से भगा दिया जाता है। अगर जेम्स बॉन्ड के पास हत्या करने का लाइसेंस था, तो इन लोगों के पास पूरी तरह से परेशानी खड़ी करने का लाइसेंस है। यह अत्यंत कष्टदायक है, लेकिन अगर आप किसी पुलिस वाले से इसकी शिकायत करते हैं, तो वह आपको ही वहां से जाने के लिए कहता है, और वह भी बहुत विनम्रता से नहीं।

कई साल पहले, मुझे एक बेहद अपमानजनक अनुभव का सामना करना पड़ा था जब एक पुलिसकर्मी ने मुझे जाने का इशारा करते हुए मेरी कार के बोनट पर अपना डंडा बजाया। मैंने वैसा ही किया और अपने रियर व्यू मिरर में देखा कि एक सरकारी गाड़ी मेरी जगह ले रही थी। फिर वह पुलिस वाला और ड्राइवर आपस में दोस्ताना बातचीत करने लगे। अपमान। गुस्सा। हताशा। सब बेकार। गोरे औपनिवेशिक आकाओं की जगह अब इन खाकी वर्दी वालों ने ले ली है।

लेकिन कुछ अपवाद भी हैं, जब आम नागरिक बाज़ी मार लेता है। भारतीय रिज़र्व बैंक के एक पूर्व वरिष्ठ अधिकारी ने मुझे बताया कि जब वे हवाई अड्डे के आगमन हॉल से बाहर निकले, तो उन्हें अपनी गाड़ी के आने का इंतजार करना पड़ा, जबकि उनके ठीक आगे चल रहे व्यक्ति की गाड़ी पहले से ही वहीं खड़ी थी। उसे एक मिनट भी इंतजार नहीं करना पड़ा।

आरबीआई के उस अधिकारी ने अपने प्रोटोकॉल अधिकारी से पूछा - प्रोटोकॉल वाली बात किसी और दिन करेंगे - कि वह आदमी कौन था। जवाब से यह साबित हुआ कि भारत में हर बड़े व्यक्ति से भी बड़ा कोई और होता है। जाहिर तौर पर, और मुझे नहीं पता कि यह सच है या सिर्फ एक अफवाह है, हर शहर में कुछ ऐसी निजी नंबर प्लेटें होती हैं जो सामान्य नियमों के बोझ से मुक्त होती हैं। ये नंबर इतने विशिष्ट होते हैं कि वीआईपी लोगों के सरकारी वाहनों पर भी ये नहीं होते हैं। बेचारे साहबों को विशेष सुविधा पाने के लिए अपने ड्राइवरों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। ■

Advertise in Rotary News

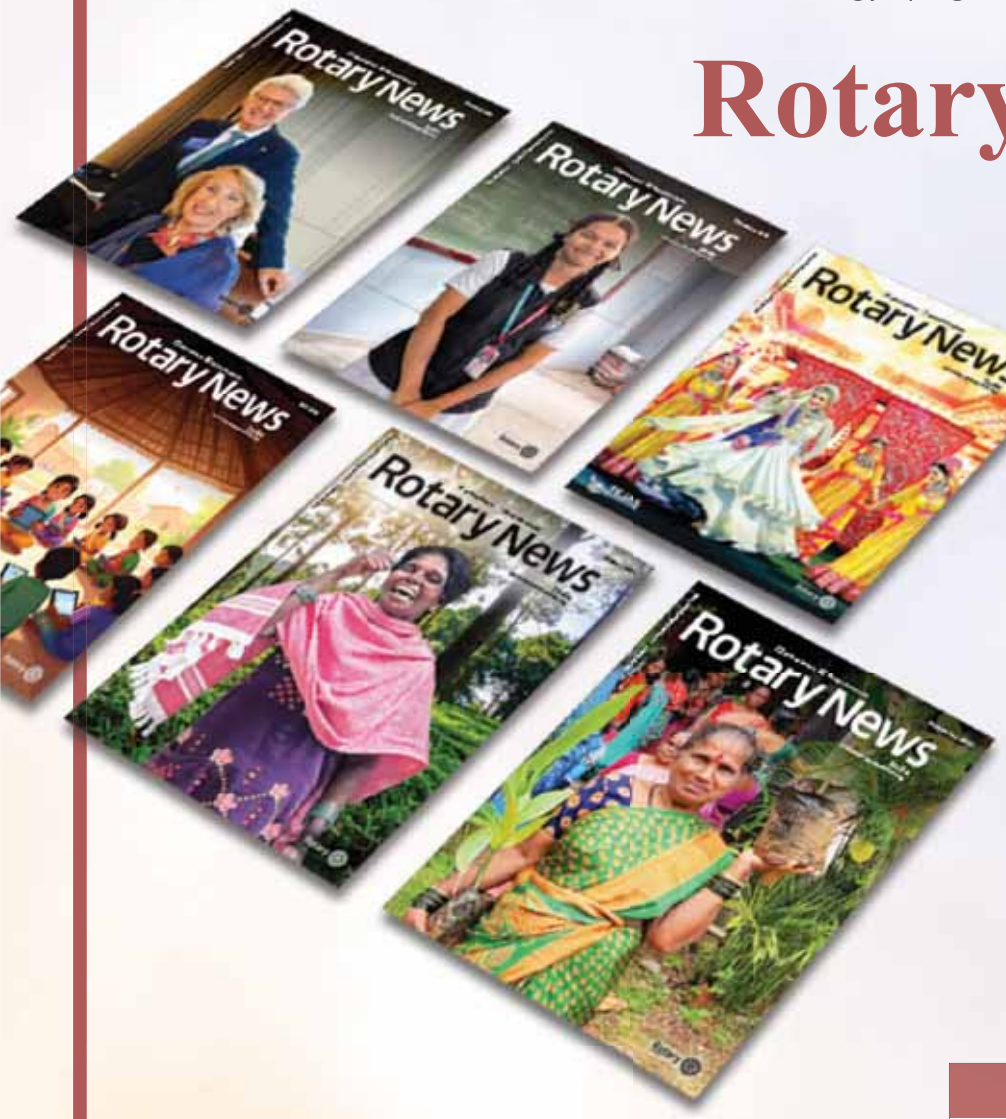

... with a circulation of 1.56 lakh, and connect with 6 lakh readers. Reach some of the most influential industrialists, businessmen, finance professionals, doctors, lawyers and other high flyers.

Tariff (per insert)	
Back cover	`1,00,000
Inner Front Cover	`60,000
Inner Back Cover	`60,000
Inside Full Page	`30,000
Specifications	
17 x 23 cm	Full page
Advertisements in colour only	

GST 5% applicable

Rotary News Trust
Phone: 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org

Attractive discounts available for advertisements of three months and above.

Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month. Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month.
Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26 | issue, including cover, 84. Price: `40